केरलज्योति
केरल हिंदी प्रचार सभा
की मुख पत्रिका
(केंद्रीय हिंदी निदेशालय की
वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

केरल हिंदी प्रचार सभा के संस्थापक
स्व. के वासुदेवन पिल्लै
पूर्व समीक्षा समिति
प्रो (डॉ) एन रवींद्रनाथ
डॉ के एम मालती
प्रो(डॉ) आर जयचन्द्रन
प्रो (डॉ) जयश्री एस आर
परामर्श मंडल
डॉ तंकमणि अम्मा एस
डॉ लता पी
डॉ रामचन्द्रन नायर जे
प्रबन्ध संपादक
गोपकुमार एस (अध्यक्ष)
मुख्य संपादक
डॉ एम एस विनयचंद्रन
संपादक
डॉ रंजीत रविशैलम
संपादकीय मंडल
अधिवक्ता मधु बी (मंत्री)
सदानन्दन जी
मुरलीधरन पी पी
प्रो रमणी वी एन
चन्द्रिका कुमारी एस
एल्सी सामुवल
आनन्द कुमार आर एल
प्रभन जे एस
डॉ नेलसन डी
प्रकाशन संयोजिका
अर्चना एस

सूचना : लेखकों द्वारा प्रकट किये गये मत उनके अपने हैं। उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पुष्प : 62 दल : 12 अंक: **मार्च 2026**

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

श्रीचित्रा पब्लिक स्कूल का वार्षिक महोत्सव.... **अधिवक्ता (डॉ) बी मधु** 6

राजा रविवर्माचरित महाकाव्य – **प्रो.डी.तंकप्पन नायर** 7

दर्शन माला - **डॉ नेलसन डी** 9

केंद्रीय हिंदी निदेशालय का 66 वाँ स्थापना-दिवस समारोह
प्रो (डॉ) एस तंकमणि अम्मा 11

महागुरु चट्टंबी स्वामिकळ् -
मूल : **डॉ (प्रोफ़) ए एम उण्णिकृष्णन,** अनुवाद : **डॉ प्रिया राणी पी एस** 13

'दीपदान' एकांकी में पन्ना धाय के बलिदान का मार्मिक चित्रण -
आज के संदर्भ में - **डॉ शशिप्रभा जैन** 18

मणि मधुकर की कहानियों में नैतिक द्वंद्व और मानवीय संघर्ष
डॉ शेनुजा मॉल एच एन 21

मन्नू भँडारी की कहानी 'यही सच हैं' में प्रतिपादित स्त्री-विमर्श - **डॉ षीना वी के** 24

अनुसूचित जनजाति की साक्षर महिलाओं के माध्यम से सामाजिक
सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन पर प्रभाव का एक अध्ययन
डॉ समीर बी वाघरोडिया/ अश्विन कुमार राठवा 27

जनचेतना के कवि मंगलेश डबराल – **रम्या एल** 30

समकालीन स्त्री कविता में नारी विमर्श : भाषा, अस्मिता और प्रतिरोध
डॉ नवीना जे नरितूक्किल / वीणा के नंपियार 32

शिवानी की कहानियों में स्त्रियोचित संवेदना – **अच्युत शुक्ला** 35

आधुनिक हिंदी कविता पर गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव
डॉ यमुना प्रसाद रतूड़ी 39

बेमेतरा जिले में शिशु मर्त्यता पर शिक्षा का प्रभाव : एक भौगोलिक विश्लेषण
डॉ मधु एवं डॉ खेमचंद 44

मानस कैलास - **मूलः मंजु वेल्लायणि**
अनुवाद : प्रो. डी. तंकप्पन नायर , डॉ.रंजीत रविशैलम 49

देवयानम् (आत्मकथा)
मूल : डॉ.वी.एस. शर्मा, अनुवाद : प्रो. के.एन.ओमना 51

ज़िंदगी : एक लोलक (आत्मकथा) 53
मूल : श्रीकुमारन तंपी अनुवाद : डॉ.पी.जे.शिवकुमार

प्रश्नोत्तरी - **डॉ. रंजीत रविशैलम** 54

मुखचित्र : श्रीचित्रा पब्लिक स्कूल के वार्षिक समारोह का उद्घाटन तिरुवितांकूर राजपरिवार के प्रिन्स अविट्टम तिरुनाल आदित्य वर्मा महोदय भद्रदीप जलाते हुए कर रहे हैं।

लेखकों से निवेदनः

• हिंदी और इतर भारतीय भाषाएँ, साहित्य, संस्कृति आदि पर लिखी गई उच्च स्तरीय मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ आमंत्रित हैं। • भाषा, साहित्य, संस्कृति आदि पर आयोजित समारोहों, चर्चाओं, संगोष्ठियों के समाचारों का भी स्वागत है। इन समाचारों को प्रस्तुत करने वाले का नाम और पूरा पता भी लिख भेजें। • भारतीय भाषाओं से अनूदित कविता, कहानी भी भेजें। उनके साथ मूल लेखक से प्राप्त अधिकार पत्र भी प्रेषित करें। • प्राकाशनार्थ रचनाएँ साफ-साफ अक्षरों में लिखकर अथवा टंकित कर या **डी.टी.पी.** करके **सी.डी.** में भेजें। कृपया कार्बन प्रति न भेजें। • स्वीकृत रचनाएँ यथासमय पत्रिका में प्रकाशित की जाएँगी। • आप ई-मेल द्वारा भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं। ई-मेल में Microsoft Word or Pagemaker फाइल में भेजिए। ई-मेल आईडी :khpsabha12@gmail.com • अपनी रचना के साथ पूरा पता (जिला, राज्य और पिनकोड सहित), लघु परिचय और फोटो भी भेजें।

संपादक, 'केरल ज्योति', केरल हिन्दी प्रचार सभा,
तिरुवनन्तपुरम-695 014

सभा का मुख्यालय और उसकी गतिविधियाँ

केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम के वषुतक्काड में सभा का मुख्यालय स्थित है। सभा के मुख्य परिसर में सभा के संस्थापक मंत्री की पावन स्मृति में श्री वासुदेवन पिल्लै स्मारक हिंदी ग्रंथालय, स्नातकोत्तर अध्ययन अनुसंधान केंद्र, साहित्याचार्य महाविद्यालय, केंद्रीय हिंदी महाविद्यालय, टंकण और आशुलिपि संस्थान, परीक्षा भवन, राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, राष्ट्रज्योति पब्लिशेर्स के प्रकाशन अधिकारी का कार्यालय, हिंदी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय (बी.एड) और केरल विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त शोध केंद्र हैं।

विज्ञापन दर (साधारण अंक)

	मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4 (रंगीन)	रु.2500.00	25,000.00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 (रंगीन)	रु.2000.00	20,000.00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.1000.00	10,000.00
साधारण पृष्ठ 1/2	रु.600.00	6,000.00
साधारण पृष्ठ 1/4	रु.350.00	3,500.00

एक प्रति का मूल्य रु. 40/- ***आजीवन चंदा : रु. 4000/-*** ***वार्षिक चंदा : रु. 400/-***

A /c No. 57022786007 IFS Code : SBIN0070033
State Bank of India, Vazhuthacaud Branch

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, वषुतक्काडु, तिरुवनन्तपुरम-695 014.
दूरभाष:0471-2321378, 2329200, 2329459. फैक्स:0471-2329200 ई-मेल : khpsabha12@gmail.com

दूरभाष : 0471-2321378, 2329200, 2329459
फैक्स : 0471-2329459
मोबाईल: संपादक : 7898515222/ 9447657301

khpsabha12@gmail.com
www.keralahindipracharsabha.in

केरलज्योति
सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
मार्च 2026

संपादकीय

केरल की धार्मिक समभावना की प्रसादात्मक रीयल स्टोरी.....

आट्टुकाल देवी मंदिर 'श्री पद्मनाभ नगरी' में स्थित है। स्त्रियों की शबरीमला नाम से भी विश्वविख्यात तीर्थ स्थली है यह।

केरल राज्य एवं देश-विदेश की महिलाएँ साल में एक बार देवी को 'पोंगल' समर्पित करने के लिए आती रहती हैं। यह एशिया में स्त्रियों के सबसे विशाल जमाव का पर्व है। स्त्री-सान्निध्य की साँख्यकीय डाटा के मुताबिक सन 1997 में पहली बार इस मंदिर को गिन्नस बुक (World Book of Records) में दर्ज किया गया था। सन् 2009 के उत्सव में पचीस लाख की महिलाओं की भागीदारी हुई थी। ताकि दुबारा विश्व गिन्नस बुक में यह देवी- मंदिर शामिल हो गया। प्रतिवर्ष महिलाओं की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि होती रहती है।

तिरुवनंतपुरम सेंट्रल रेलवे स्टेशन से पाँच किलोमीटर की दूरी पर तथा ईस्टफोर्ट बस अड्डे से दो किलोमीटर की दूरी पर, करमना नदी और किल्ली नदी की संगम स्थली आट्टुकाल में यह मंदिर स्थित है। श्रीभद्रकाली हैं आट्टुकाल की अम्मा। अन्नपूर्णेश्वरी, आदिपराशक्ति और कण्णकी (मथुरा की) की मूर्ति के रूप में देवी की उपासना की जा रही है। दस दिन का उत्सव (मलयालम महीने कुंभम के कार्तिक दिन से पूरम नक्षत्र दिन तक) तिरुवनंतपुरम शहर का ही नहीं; पूरे केरल वासियों का भव्य त्योहार है।

कलह, कलाप तथा कत्ल को प्रेरित कर या उद्घोषित कर आह्लाद अनुभूत करनेवाले वर्तमान समाज के सम्मुख समभाव, सदभाव एवं भाई-चारे का उत्तम मिसाल प्रस्तुत करता है यह उत्सव। सांप्रदायिक पृथकता की भावना भूलकर हिंदू, मुसलमान, ईसाई लोग अम्मा के महोत्सव-पथ पर सहयात्री बन जाते हैं। भक्तिन-महिलाओं का हार्दिक स्वागत-सत्कार कर उन्हें नैवेद्य -समर्पण हेतु आवश्यक मदद दी जाती है। मसजिदों एवं गिरजाधरों के आँगन और सभागार इन महिलाओं को आराम लेने तथा ठहरने के लिए खोल दिए जाते हैं। गली-गली में, घर-घर में उन्हें सुविधा और सुरक्षा दी जाती हैं। सरकार की ओर से, खासकर नगर निगम की ओर से सारी सुविधाएँ प्रदत्त हैं।

देवी मंदिर की उत्पत्ति- संबंधी कई लोक-कथाएँ प्रचलित हैं। अज्ञात बालिका का आगमन और स्वप्न दर्शन तथा कोविलन और कण्णकी की कथा आदि। स्थानाभाव के कारण उनका बयान नहीं करता। द्राविड़ संकल्पनाएँ इस मंदिर में लयबद्ध हैं। स्त्री शक्ति एवं स्त्री भक्ति की संगम भूमि है यह देवी मंदिर।

केरल के लोगों की धार्मिक समभावना और एकता के यथार्थ की कहानी है यह 'स्त्री पर्व'। मैत्री भावना एवं आत्मीयता के दर्शन पर आधारित प्रसादात्मकता सदा मन में बनी रहे।

डॉ. एम एस विनयचंद्रन
(मुख्य संपादक)

श्रीचित्रा पब्लिक स्कूल का वार्षिक महोत्सव....

अधिवक्ता (डॉ) बी मधु

'स्कूल शिक्षाकाल ही जीवन का सुवर्णकाल है। विद्यालय जीवन में आर्जित ज्ञान-विज्ञान, संस्कार, मूल्य-बोध ही मनुष्य राशि के संपूर्ण विकास-पथ के मील का पत्थर बन जाते हैं। अतः स्कूली शिक्षा ही भविष्य की प्रमुख आधारशिला है।'

केरल हिंदी प्रचार सभा के अधीनस्थ चिरयिनकीष् में कार्यरत श्रीचित्रा पब्लिक स्कूल के वार्षिक समारोह के उद्घाटन भाषण के तहत ट्रावनकोर राजपरिवार के वर्तमान प्रिन्स अविट्टम तिरुनाल आदित्य वर्मा महोदय ने उपर्युक्त विचार प्रस्तुत किया। पठन-पाठन के साथ शिक्षार्थियों में सद्विचारों, सद्कार्यों का पालन-पोषण करने लायक माहौल तैयार करने और उसके अनुकूल क्रियान्वित करने की अनिवार्यता पर उन्होंने ठोस विचार व्यक्त किये। शैक्षिक संस्थाओं एवं घर-परिवारों की सामूहिक भूमिका विशेष उल्लेखनीय है। प्रिन्स महोदय ने हर्ष भी प्रकट किया कि शैक्षिक मूल्यों को कार्यान्वित करने में श्रीचित्रा पब्लिक स्कूल की प्रबन्ध समिति के अधिकारीगण एवं समर्पित शिक्षकगण इस महान उद्देश्य की पूर्ति हेतु सदा-सर्वथा प्रयत्नशील रहे हैं।

केरल हिंदी प्रचार सभा के मंत्री अधिवक्ता(डॉ)मधु.बी ने अध्यक्षता ग्रहण की। अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने शिक्षक एवं अभिभावकों की सामाजिक प्रतिबद्धता पर ज़ोर दिया। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी) 2020 का संकेत कर, कार्यप्रणालियों की सकारात्मक व नकारात्मक पक्ष पर विचार भी प्रकट किया गया।

प्रस्तुत वार्षिक सम्मेलन में किषुविलम ग्राम पंचायत की उपाध्यक्षा श्रीमती वत्सला, वार्ड मेंबर श्रीमती मिनी मुरलीधरन, श्री गोपकुमार एस (अध्यक्ष,केरल हिंदी प्रचार सभा) श्री जी सदानंदन (कोषाध्यक्ष,केरल हिंदी प्रचार सभा) आदि ने आशीर्वाद प्रस्तुत किए। स्कूल के प्राचार्य श्री बिजु एस पिल्लै के द्वारा वार्षिक रपट प्रस्तुत की गई। स्कूल के प्रभारी प्रबन्धक श्री बी सोमशेखरन नायर ने स्वागत भाषण दिया। उप प्राचार्या श्रीमती पी एस प्रिन्सी ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

विविध परीक्षाओं में उन्नत अंक प्राप्त छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार वितरित किये गए।

केरल हिंदी प्रचार सभा ने 2025 मई में ही श्रीचित्रा पब्लिक स्कूल को खरीद लिया। इसके अधीन तीन एकड की विस्तृत कैम्पस है और 36000 स्क्वयर फीट की कोंक्रीट इमारतें हैं।

हायर सेंकटरी अफ़िलिएशन (दिल्ली से सी.बी.एस.ई) प्राप्त इस विद्यालय में भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, कंप्यूटर, आधुनिक ए.ऐ (निर्मित बुद्धि) आदि विभाग की प्रयोगशालाएँ पर्याप्त मात्रा में चालू हैं। योगा, संगीत अध्ययन के अलावा कराटे, मार्श्यल आर्ट्स आदि की भी व्यवस्था पाठ्यक्रम में दी गई हैं।

मंत्री
केरल हिंदी प्रचार सभा

राजा रविवर्माचरित महाकाव्य

प्रो.डी.तंकप्पन नायर

आठवाँ सर्ग
प्रतिभा में निखार

1. भारतीय चित्रकला पर रचित ग्रंथ, सदियों पुराने चित्र, तंजावूर के
चित्रकारों के चित्र, पाश्चात्य चित्रकारों के चित्रों सहित विदेश के
ग्रंथ, भारतीय चित्रकला पर रचित ग्रंथ आदि की मदद से नया निखार
आया रविवर्मा की प्रतिभा में और उनकी रचना शैली में पड़ा उसका प्रभाव।

2. रविवर्मा को अपनी कला को विकसित करने को आवश्यक
सारी सुविधायें प्रदान की महाराज ने जैसे कि चित्रकला के
पंडितों से परिचय कराना, विदेशों से सब से नवीन ग्रंथों को
मँगवाकर स्वयं पढ़कर महाराज ने रविवर्मा को समझाया।

3. देखकर रविवर्मा के खींचे चित्रों को अपना मत भी प्रकट
किया करते थे महाराज और पुस्तकालय एवं महाराज आदि
थे रविवर्मा को गुरु सामीप्य के ही समान और उन्हें मिला था
जलरंग चित्र रचना को आवश्यक रंग और ब्रश महल से ही।

4. प्रस्तुत रंग और ब्रश मिले थे विदेशों से केरलवर्मा वलिय-
कोयितंपुरान के परिश्रम से और मूडत्तुमठं का वास था
रविवर्मा के जीवन का सुवर्ण काल और चौदह साल के रविवर्मा
कुंडल, माला और जरीदार धोती में लगते थे सदस्य राजमहल के।

5. दिन में चित्रशाला पहुँचकर वे क्रमिक रूप से किया करते थे
चित्र रचना और पुस्तकालय से पुस्तकों का पारायण और
कला के अभ्यास के सिलसिले में उन्होंने किये दर्शन तिरुवनंतपुरम
और कन्याकुमारी के मुख्य मंदिरों और राजमहलों के।

6. इन यात्राओं ने सहायता दी उन्हें पाने में विविध कला
शैलियों और पुरातन चित्रकला की रीतियों की जानकारी और
रविवर्मा रहे थे तीन साल मूडत्तुमठं महल में कला के अभ्यास को
और उन्हें प्रदान की महाराज ने अपनी ओर से एक चित्रशाला।

7. महाराज आयिल्यंतिरुनाल से रविवर्मा को मिला था एक उपनाम भी 'चित्रमेषुत्तु कोयितंपुरान' जिसमें चित्रमेषुत्तु मलयालम शब्द का अर्थ है 'चित्र रचना' और कोयिलतंपुरान शब्द का अर्थ है वह व्यक्ति जिसका राजपरिवार से वैवाहिक संबन्ध हुआ हो।

8. उन दिनों थी रविवर्मा के स्वप्न में वह रचना शैली जिसे सजीव रूप से उपयोग करते थे विदेशी चित्रकार और उस नवजागरण काल में स्वतंत्र और व्यक्तिगत तैलचित्रों द्वारा प्रारंभ हो रहा था महत्वपूर्ण परिवर्तन और तैलचित्र रचना बन गयी प्रधान माध्यम चित्रकला का।

9. फिलहाल रविवर्मा तृप्त हो गए जलरंग रचनाओं से और उस समय प्रकट हुए भारत की चित्रकला में भी नवीन दृष्टिकोण राजघरानों और स्थानीय राजाओं की वास्तुविद्या,गृहालंकार और वस्त्रधारण रीति में अंग्रेज़ी शैली के आगमन से जो प्रकट हुई चित्रकला में।

10 भारत में शिक्षा के क्षेत्र में तिरुवितांकूर मैसूर और बड़ौदा में हुए परिवर्तनों के साथ नवीनता आयी चित्रकला में और इस समय एफ़.एम.कोल्मान, विलियम होड्जस, टेल्ली केटिल, जॉन स्मार्ट आदि कुछ चित्रकारों ने भारत आकर खींचे थे चित्र।

11. उन चित्रों में अधिकतर चित्र तैलचित्रों में खींचे थे और साथ-साथ हमारे गाँवों के आचार-अनुष्ठान एवं उत्सव तथा जनजीवन को खींचा था पाश्चात्य चित्रकारों ने और उन्हें प्रदर्शित भी किया अपने देश में पर सच है कि तैल चित्र रचना संप्रदाय था विदेशी।

12. रविवर्मा सीमित रहे अब तक जलरंग चित्र रचनाओं तक और इस समय रुचि दिखाई तैलचित्र रचना शैली को पढ़ने में और उन्होंने बतायी अपनी इच्छा आयिल्यम तिरुनाळ महाराज को और महाराज ने बात की राजराजवर्मा से तैलचित्र रचना पढ़ने के बारे में।

(क्रमशः)

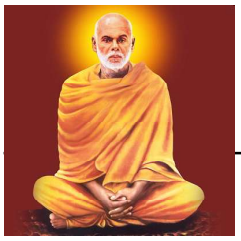

दर्शन माला

डॉ नेलसन डी

अध्यारोप दर्शन

(केरल के महान संत, ऋषि-कवि, समाज सुधारक श्रीनारायणगुरु द्वारा संस्कृत में रची गई वेदांत-संबंधी रचना है 'दर्शनमाला।' दस-दस श्लोकों के दस भाग इसमें समाहित हैं। मुनि नारायण प्रसाद की मलयालम-व्याख्या का हिंदी भाषांतरण डॉ नेलसन डी ने तैयार किया है। - संपादक)

2

(पूर्व प्रकाशित से आगे)

वास्तव में चित्रकार के मन की कल्पना और बाहर का चित्र दोनों दो नहीं है। बाहर दिखाई देने वाले चित्र को एक उपाधि करके उस चित्रकार ने जैसे अपने भीतर सब देखा उसी तरह आस्वादक स्वयं अपने भीतर उसे देखेगा तब देखने वाले का आस्वादन संपूर्ण होगा। यहाँ चित्र के स्थान पर वैचित्र्य से भरा हुआ यह विश्व और उसका आस्वादन सत्यान्वेषी भी है। विश्व के वैचित्र्य में उसे ईश्वर की भावना के महत्त्व की खोज करनी चाहिए। यह भी जानना चाहिए कि उसी भावना के माहात्म्य ही अपनी भीतर आस्वादन-सामर्थ्य के रूप में विकसित हुआ है। इस प्रकार जानते समय उसे ईश्वर का महत्व और अपना अस्तित्व दोनों की अनन्यता का पता चलेगा।

ईश्वर चित्रकार के समान है। ईश्वर की भावना में विश्व का समग्र रूप और उसके विविध विवरण भी रूप लेते हैं। चित्रकार जब अपनी भावना का सर्ववैभव के साथ चित्र खींचता है तब उसके भीतर जो सामर्थ्य होती है वह भी ईश्वर के सृष्टि-वैभव का भाग होती है। इस प्रकार देखें तो पता चलेगा कि सर्व-शक्ति वाले कलाकारों का भी स्रष्टा होने वाला ईश्वर कितना महान सर्व-शक्ति वाला है। अपने भीतर जन्म लेने वाली भावना को प्रकट किए बिना वह सर्व-शक्ति नहीं रह सकती। जब वह प्रकट हुई तब न गिनने वाले असंख्य जीवों के रूप में इस विश्व की सृष्टि हुई। वास्तव में ईश्वर के भीतर की भावना और इस विश्व का स्वरूप दोनों अलग-अलग नहीं है। इसका एक सामान्य चित्र ईशावास्योपनिषत् 8 में भी दिखाई देता है- कविर्मनीषि परिभूः स्वयंभूः यथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः। (मंत्र 8)

केवल चित्रकार की भावना का प्रतिफलन है चित्र। उसमें चित्र सत्य है या भावना? उसी तरह ईश्वर की भावना का प्रतिफलन है प्रपंच। उसमें ईश्वर की भावना सत्य है या प्रपंच? अलग-अलग करने में असमर्थ होकर दोनों एक साथ रहने की दशा है सत्य।

ईश्वर को यहाँ भगवान कहते हैं। भग के साथ होने वाला भगवान है। भग के प्रत्येक संदर्भ में प्रत्येक अर्थ होता है। माहात्म्य, धैर्य, कीर्ति, धन, ज्ञान, वैराग्य ये छः भग हैं। यह सब सत्य का आविष्कार

करके सच्चाई के साथ जीने वाले में दिखाई देने वाले विशिष्ट गुण हैं। जिसने सत्य समझ लिया उसे ईश्वर भी सत्य ही है। अतः सभी गुण ईश्वर के लिए उचित हैं। जिज्ञासु के कार्य में उत्पत्ति, विपत्ति, आगति, गति, विद्या और अविद्या भग हैं।

एक व्यक्ति तब जिज्ञासु बनता है जब वह सब अलग-अलग समझता है इस तरह पृथक-पृथक जानने योग्य सर्वस्व भी भगवद् स्वरूप वाले इस विश्व में हैं। अतः छह भगों के साथ वाले का नाम भगवान् कह सकते हैं।

इस श्लोक में भगवान् का मन और दृश्य प्रपंच दोनों की अद्वैतता की ध्वनि मुखरित होती है। स्रष्टा और सृष्टिजालों को अलग देखने वाले इस अवसर पर भी वह ध्वनि अद्वैत की एक व्याख्या बन जाती है।

6

आसीत् प्रकृतिरेवेंदं यथाऽदौ योगवैभवः।
व्यतनोदथ योगीव सिद्धिजालं जगत्पतिः।।

आदौ- आदि में; इदम् - यह प्रपंच; योगवैभवः यथा - योग-वैभव की तरह; प्रकृतिः एव - प्रकृति होकर ही; आसीत् - होती रही; अथ - उसके बाद; योगी सिद्धिजालम् इव - योगी के सिद्धिजाल के समान; जगत्पतिः - जगत् के पति (ईश्वर); इदम् - इस प्रपंच का च व्यतनोत् - विस्तार किया।

आदि में यह प्रपंच, योगी के योग-वैभव की तरह प्रकृति के रूप में ही रहा था। बाद में योगी के सिद्धिजाल की तरह ईश्वर ने इस प्रपंत का विस्तार किया।

इस श्लोक में स्वीकार की गई दशा की विशेषता यह है कि उत्पत्ति के पूर्व यह प्रपंच केवल प्रकृति होकर ही रहा था। प्रकृति क्या है? Nature रूपी एक अंग्रेज़ी शब्द कहते समय ऐसा लगेगा कि उसका अर्थ हमारी समझ में आया। लेकिन उसका अर्थ समझना आसान बात नहीं है। चौथे अध्याय 'माया दर्शन' के अंत में प्रकृति के संबंध में कहा गया है कि स्वाभाविकता से ही सत्त्व, रजस्, तमस् इन गुणों को अतिशय ढंग से अलग-अलग करता है और इसी अर्थ में प्रकृति नाम मिला। प्रकृति त्रिगुणात्मक है। प्रकृति में एक कृति अथवा कर्म है। बिना कृति के कोई निश्चेष्ट कभी प्रकृति होकर नहीं रह सकता। अर्थात् प्रकृति हमेशा क्रियात्मक रहती है। उस क्रियात्मकता को कर्म कहते हैं। स्वाभाविकता से ही क्रियात्मक रहने का और उसी प्रकार हमेशा भाव-प्रतीतियों की सृष्टि करने का आंतरिक एक अदम्य वैभव है। कहाँ है? जगत्पति में है। पूरे जगत् का पति अथवा नाथ है जगत्पति। जगत् का मतलब है निरंतर बदलने वाला। उन परिवर्तनों का निर्माण करने वाली कृति है प्रकृति। जगत्पति में अथवा ईश्वर में स्थित अदम्य इस वैभव को नारायण गुरु ने दूसरे एक संदर्भ में 'विश्ववीर्य' कहा है (आत्मोपदेश शतक 95), पाश्चात्य विचार-जगत् में 'हेन्ड्रि बर्गसण' द्वारा अवतरित elan vital इसके ही समान है।

(क्रमशः)

केंद्रीय हिंदी निदेशालय का 66 वाँ स्थापना-दिवस समारोह

प्रो (डॉ) एस तंकमणि अम्मा

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के उच्चतर शिक्षा विभाग के अधीन कार्यरत केंद्रीय हिंदी निदेशालय का 66 वाँ स्थापना दिवस समारोह 27 फरवरी 2026 को शानदार ढंग से संपन्न हुआ। (केंद्रीय हिंदी निदेशालय की स्थापना मार्च 1960 को हुई थी।) दिल्ली में स्थित निदेशालय के भूतल में ही समरोह का आयोजन किया गया था। कन्याकुमारी से कश्मीर तक व्याप्त भारत देश तथा देश की जनता को हिंदी भाषा के माध्यम से जोड़कर रखने के उद्देश्य से स्थापित निदेशालय ने 66 वर्षों की अपनी जैत्र-यात्रा के दौरान हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कई उपयोगी योजनाओं का क्रियान्वयन किया है। कृत्रिम मेधा के वर्तमान युग में सूचना-प्रौद्योगिकी की बहुविध संभावनाओं और विविध संस्थाओं के सहयोग से निदेशालय प्रगति के पथ पर हो रहा है। 'हिंदी शब्द सिंधु' टिजिटल कोश इसका सप्राण प्रमाण है जो विश्व का सबसे बृहत एवं मानक टिजिटल शब्दकोश है।

66 वें स्थापना दिवस समारोह निदेशालय की योजनाओं के भूत, वर्तमान और भविष्य पर विचार-विर्मश का मंच बना। निदेशालय पहुँचते ही निदेशक प्रो. हितेंद्र कुमार मिश्र ने अपने कक्ष में सबका हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने सब में निदेशालय के प्रति अपनत्व का भाव जगाया। पूरे दिन का कार्यक्रम अत्यंत भव्य एवं उत्साहवर्धक रहा।

प्रथम-उद्घाटन-सत्र के मुख्य अतिथि डॉ सच्चिदानंद जोशी जी रहे। विशिष्ट अतिथि प्रो पूरन चंद टंडन ने निदेशालय तथा उसकी विविध गतिविधियों का पूरा इतिहास प्रस्तुत किया। शिक्षा मंत्रालय से पधारे उपसचिव श्री श्रेयांश मोहन के उद्बोधन ने सभागार में उपस्थित हिंदी प्रेमियों और कार्यकर्ताओं के मन में नई ऊर्जा भर दी। निदेशक महोदय के अपने वक्तव्य में 'निदेशालय परिवार' के सहयोग से निदेशालय को उन्नति के उत्तुंग शिखर तक ले चलने की बात कही। उद्घाटन सत्र का सुचारु संचालन सहायक निदेशक डॉ किरण झा ने किया।

द्वितीय सत्र अपने नाम 'अविराम यात्राः शब्द के संवाद तक" के अनुरूप ही निदेशालय की सतत विकास-यात्रा का उद्घोष रहा। इस सत्र के मुख्य अतिथि तथा पूर्व निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, प्रो रवि प्रकाश टेकचंदाणी ने निदेशालय की जैत्र-यात्रा की एक चित्रात्मक गाथा तैयार करने की अनिवार्यता की ओर संकेत किया। मेघालय से आए डॉ सुशील चौधरी ने हिंदी संस्थाओं से जुड़ी हुई समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में केरल से आई प्रो तंकमणि अम्मा ने निदेशालय की विस्तार कार्यक्रम योजनाओं की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए, बदलते काल और परिवेश के अनुरूप उनमें आवश्यक संशोधन, संवर्द्धन करने की बात पर बल दिया। नई योजनाओं का शुभारंभ करके हिंदी के

प्रचार-प्रसार को नई दिशा देने की भी बात बताई। स्वैच्छिक संस्थाओं को प्रदान करनेवाली वित्तीय सहायता को ज़ारी रखने, रुकावट में पड़ी हुई योजनाओं को पुनरुज्जीवित कर संस्थाओं को शक्तिशाली और प्रभावी बनाने की बात पर भी ज़ोर दिया। साथ ही साथ संस्थाओं द्वारा चलाई जानेवाली परीक्षाओं को तुल्यता, मान्यता एवं अनुमोदन दिलाने संबंधी मामलों पर पुनर्चिंतन करने का निवेदन भी किया।

तृतीय सत्र 'हिंदी : भारतीय भाषाओं के मध्य संपर्क सूत्र' अत्यंत रोचक रहा जिसके अध्यक्ष प्रो रमेश कुमार पांडेय, पूर्व निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय रहे। प्रो दिनेश कुमार चौबे तथा कटक से आए श्री बनमाली शुक्ल ने भारतीय भाषाओं को जोड़े रखने में हिंदी की अहम् भूमिका को व्यक्त किया।

समापन सत्र 'निदेशालय : आरंभ से अब तक' में मुख्य अतिथि रहे केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष प्रो सुरेंद्र दुबे जी। डॉ पुष्पलता तनेजा जी, वरिष्ठ सेवानिवृत्त निदेशक सम्मानित अतिथि थी। उन्होंने निदेशालय की क्रमिक विकास यात्रा तथा विविध गतिविधियों की झाँकियाँ प्रस्तुत कीं। पुतुश्शेरी से आए डॉ सेंतिल कुमरन सारस्वत अतिथि रहे। इस सत्र में इस महीने के अंत में निदेशालय सेवा से निवृत्त होनेवाले उपनिदेशक श्री एस श्रीनिवासन को भावपूर्ण विदाई दी गई। सत्राध्यक्ष प्रो हितेंद्र कुमार मिश्र जी ने निदेशालय के वैविध्यपूर्ण कार्यकलापों में सभी देश प्रेमियों और देशभाषा प्रेमियों के जुड़ते रहने का और निदेशालय को प्रगति पथ पर ले चलने के महान यज्ञ में सभी भाषा प्रेमियों के सहयोग का आह्वान किया।

समारोह के अथ से इति तक निदेशालय के निदेशक के कुशल नेतृत्व में समस्त अधिकारीगणों और कर्मचारीवृंदों का स्नेह स्निग्ध और मनोयोगपूर्ण सहयोग जो रहा, वह अत्यंत अनुकरणीय और अभिनंदनीय रहा।

नवागत हिंदी प्रचारक पुरस्कार नाम से केरल हिंदी प्रचार सभा ने पिछले वर्ष से एक नवागत प्रचारक को पुरस्कार देने का निर्णय लिया है। उक्त पुरस्कार की रकम रु. 5001/- है। पहला पुरस्कार 28-09-2025 को आयोजित हिंदी पखवाड़ा समापन सम्मेलन में प्रदान किया गया। 'दूसरा पुरस्कार' की रकम सरकारी आर्ट्स कॉलेज के पूर्व प्रोफसर रती देवी टीचर के नाम पर, प्रो हिल्डा जोसेफ, (सेवानिवृत्त उपनिदेशक, कॉलिजीयट शिक्षा निदेशालय) ने प्रायोजित की है।

महागुरु चट्टंबी स्वामिकळ्

अनुवाद : डॉ प्रिया राणी पी एस

मूल : डॉ (प्रोफ़) ए एम उण्णिकृष्णन

(डॉ ए एम उण्णिकृष्णन मलयालम साहित्य के शीर्षस्थ आलोचक एवं भाषाविद हैं। आप केरल विश्वविद्यालय के मलयालम विभाग के दूरस्थ शिक्षा विभाग में प्रोफेसर व डीन के पद से सेव निवृत्त हो माँ भारती की सेवा में संलग्न हैं। अब केरल अध्ययन विभाग में एमिरेट्स-प्रोफसर के पद पर विराजमान हैं।)

2. चट्टम्पिस्वामीजी के ज्ञानलोक

केरल का समाज अभी तक चट्टम्पिस्वामीजी की सेवाओं को पर्याप्त रूप से समझ नहीं पाया है। सच यह है कि उनमें से ज्यादातर लोगों ने संकीर्ण दृष्टिकोण से स्वामीजी को समझने की कोशिश की। यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि स्वामीजी को जानना और आत्मसात करना इतना आसान नहीं है। कुछ लोगों ने यह साक्ष्य किया कि समान स्तर के लोग ही बता सकते हैं कि वे कौन और क्या थे। चट्टम्पिस्वामीजी को सबसे कम शब्दों में ज्ञान के अवतार और पूर्णता के पर्याय के रूप में वर्णित किया जा सकता है। विद्वानों में यह प्रचलित मान्यता है कि वे 'अंशावतार' हैं। जो लोग उनके अहसास के बारे में जानते हैं उनका मानना है कि वे शिवस्वरूपी हैं। उनके द्वारा किया गया एकमात्र शिवलिंग प्रतिष्ठा और उनके समाधिपीठ पर स्थापित शिवलिंग शिवस्वरूप की द्रविड़ संकल्पों एवं कश्मीरी शैव सिद्धान्त का द्योतक है।

यदि आप पूछें कि चट्टम्पिस्वामीजी जैसे ऐतिहासिक व्यक्तिने क्या योगदान दिया, तो यह कहा जाना चाहिए कि उन्होंने एक ही समय में निर्माण और विनाश किया। चट्टम्पिस्वामीजी युग-निर्माता और, युग- प्रभावी थे जिन्होंने एक साथ निर्माण और विनाश किया। सृजन और संहार वस्तुतः ईश्वर का धर्म है। उन्होंने भी ऐसे ही धर्म निभाए जब हम यह समझने की कोशिश करते हैं कि उनकी रचना के कौन से पहलू हैं जिससे हम भ्रमित हो जाते हैं। उन्होंने केरल में एक बहुत विस्तृत ज्ञान मंडल तैयार किया। विज्ञान के अनेक क्षेत्रों का विकास किया। नैतिक प्रेम के निरंतर रख रखाव से सार्वभौमिक सद्भाव साध्य बनाया।

इतिहास में दर्ज है कि चट्टम्पिस्वामीजी की पहली रचना का नाम था कि 'सर्वमत सामरस्य' (1880)। जैसा कि नाम से पता चलता है कि इसमें स्वामीजी इस सत्य की व्याख्या करते हैं कि सभी संप्रदाय मनुष्य को एक ही दर्शन और अनुभव की ओर ले जाते हैं। बाइबिल और कुरान संबंधित व्यक्तियों से सीधे स्वयं समझकर स्वामीजी ने उन ग्रंथों पर अपना विचार प्रकट किया।

चट्टम्पिस्वामीजी ने केरल में वास्तविक इतिहास लेखन शुरू किया। विमुद्रीकरण (Demythification) से उन्होंने प्राचीन मलयालम के माध्यम से मिथकों के खोखलेपन को उजागर करके और केरल मूल और केरल महात्म्य की कहानियों का प्रसार करके एक अद्वितीय ऐतिहासिक लेखन परियोजना शुरू की।उन्होंने ऐतिहासिक अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई। मलयालम में नारीवादी विचारधारा का निर्माण और विकास भी उतना ही महत्वपूर्ण है। 'ब्रह्माण्ड' में पुरुषों और महिलाओं का स्थान नामक आधुनिक नारीवादी दृष्टिकोण वाला एक प्रबंध,1906 में तैयार किया गया था। इसी प्रकार, उन्होंने दैनिक जीवन से संबंधित और हमारी ज्ञान प्रणाली में निहित ज्ञान की कई धाराएँ विकसित कीं, जैसे कि स्थान के नाम का अध्ययन, चिकित्सा, उपचार आदि।

चट्टम्पिस्वामीजी ने 'प्राचीन मलयालम ' को केरल के व्यापक पूर्व इतिहास के रूप में रचा था। यहाँ मलयालम

का प्रयोग देश नाम के रूप में किया जाता है। पाँच या छह भागों में तैयार किए गये इस कृति का केवल पहला भाग ही स्वामीजी के जीवनकाल में प्रकाशित हुआ था। दूसरा भाग अब प्रकाश में आया है। प्रत्येक भाग प्रत्येक समूह के इतिहास के आधार पर स्वामीजी द्वारा लिखा गया है।

सांस्कृतिक अध्ययन की स्वीकार्यता के बारे में आज हर एक व्यक्तिजानता है। लेकिन उल्लेखनीय बात यह है कि पश्चिमी देशों में सांस्कृतिक अध्ययन को एक बौद्धिक परियोजना के रूप में विकसित करने से पहले ही उन्होंने इस दिशा में लेखनी चलायी। इसी तरह, भाषा विज्ञान के क्षेत्र में भी उनका योगदान विशेष रूप से एक समाजभाषाविद्, के रूप में पर्याप्त चर्चा में नहीं आया है। आदिभाषा, तमिष़कम, द्रविड़ माहात्म्य जैसी रचनाओं में आविष्कृत विषय एवं भाव आदि 1916 में सस्यूर आदि महानुभावों की विचारधारा के पहले ही उन्होंने मलयालम में प्रस्तुत किया। यह भी याद रखना चाहिए कि चट्टम्पिस्वामीजी ने मिथकों के विश्लेषण को लेविस्ट्रोस से पहले पूरा किया था। इसी प्रकार, सबसे महत्वपूर्ण तथ्य जो उनकी वैदिक टीका, अद्वैत विचार योजना और अन्य पुस्तकें स्वामीजी द्वारा अपनाई गई गद्य भाषा को स्पष्ट करती हैं। मलयालम में कविता की परंपरा लगभग एक हजार साल पुरानी है। हमारे पास कोई समानांतर मजबूत गद्य शाखा नहीं है, लेकिन हमारे गद्य प्रवचन की शक्तिऔर आत्मविश्वास पर संदेह करने की कोई आवश्यकता नहीं है । जान लें कि हमारे पूर्वज वही थे जो गणित और व्याकरण से संबंधित लेखन करने में सक्षम थे। लेकिन बाद में हमारे गद्य का प्रवाह कुछ धीमा हो गया।

चट्टम्पिस्वामीजी ने भविष्य के प्रवचन के साधन के रूप में उस गद्य को पुनः प्राप्त करने और फैलाने का धीरतापूर्ण कार्य किया। चट्टम्पिस्वामीजी ने अपनी रचनाओं से स्पष्ट किया है कि मलयालम भाषा का गद्य कितनी शक्तिशाली है जबकि बाकी सभी लोग कविता में मग्न थे, तभी स्वामीजी ने गद्य को अपनाया। इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने यह भी साबित किया कि हमारे गद्य की शक्ति विद्वतापूर्ण गद्य की ताकत, जो बारहवीं शताब्दी से देखी जा सकती है । यदि सभी नवीनीकृत और पुनर्जीवित लागू किया जाता है, तो मलयालम भाषा पश्चिमी आधुनिकता और अंग्रेजी के वैभव के साथ मिश्रित हो जाती है। यहाँ मलयालम भाषा के साथ मिश्रित भाषा से भी बचाव कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, वह औपनिवेशिक आधुनिकता का प्रतिकार और बचाव कर रहा है, जो कि पश्चिमी, औपनिवेशिक और औपनिवेशिक आधुनिकता है। गद्य में विस्फोटक विचारों के हिंसक प्रवाह को अभिव्यक्तकरना उन्हीं के लिए संभव है जिनमें अत्यधिक आत्मविश्वास है। आचार्य दण्डी का श्लोक हमारी स्मृति में है। 'गद्यं कवीनां निकषं वंदन्ति'। गद्य को किसी भी समाज ने सदैव काव्य की कसौटी माना है। इसलिए स्वामीजी ने गद्य की तुलना मलयालम से की। उनकी सभी रचनाएँ गद्य रचनाएँ हैं।स्वामीजी गद्य लेखन के चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में खुद को स्थापित करने के लिए कृतसंकल्प थे। इतना ही नहीं, आप विवादास्पद दृष्टिकोण अपनाकर मजबूत गद्य के माध्यम से मलयालम में आलोचनात्मक प्रवचन विश्लेषण(critical discourse analysis) का एक नमूना बनाने में भी अग्रणी थे।प्रवचन विश्लेषण की पहली विधि मलयालम में चट्टम्पिस्वामीजी की गद्य रचना में दिखाई दी।

इन सब से यह संदेह हो सकता है कि वह कवि है या नहीं चट्टम्पिस्वामीजी एक कवि थे। उन्होंने अपने दो शिष्यों, पेरुनेल्ली और वेलुत्तेरी, जो तिरुवनंतपुरम के दो प्रमुख चिकित्सक, कवि और संस्कृत विद्वान थे, उनकी वासनाओं को पोषित करने के लिए एक कवि के रूप में रचना की थी। इनमें उनकी कुछ समस्याएँ भी हैं। उनकी कई रचनाएँ आज उपलब्ध हैं; कुछ परिपूर्ण भी नहीं हैं, क्योंकि उनके लिए साहित्यिक लेखन कई अन्य कर्मों की तरह एक आवश्यक कार्य नहीं था। चट्टम्पिस्वामीजी पूरी तरह से निर्लिप्त व्यक्ति थे। उनका मन किसी और चीज़ से कभी नहीं जुड़ा था,इसके सिवाय कि जो लिखा था उसे वहीं छोड़ दिया जाए और दूसरों को ज़रूरत पड़ने पर उसे उन लोगों को सौंप दिया जाए जिन्होंने ऐसा किया था। उनकी रचनाएँ जो मुक्तप्रवाह, कैवल्यनवनीतम और स्वरूपसारम हैं, इसमें निष्काम को विशेष महत्व दिया गया है। वह किसी भी बात पर अड़े नहीं थे क्योंकि स्वामीजी ऐसा करने

में सक्षम थे। यदि यह इसलिए पूछा जाता है कि उसे अपने घर, जाति, परिवार, वेशभूषा, भोजन, अधिकार, स्थिति या समय से कोई लगाव नहीं है, तो इसका एकमात्र सही उत्तर यह है कि वे इस स्थिति को प्राप्त कर चुके थे।

अब तक चट्टम्पिस्वामीजी की रचनाओं की चर्चा होती रही है। उसी प्रकार हमें भी इसकी जांच भी करनी चाहिए कि विध्वंसक के रूप में उन्होंने क्या-क्या मिटा दिये। यहाँ जाति, अस्पृश्यता, अनैतिकता, हिंसा, पितृसत्ता, ज्ञान का एकाधिकार, व्यवसाय, आधिपत्य जो पश्चिमी दुनिया के विचारों और धार्मिक विश्वासों पर कब्ज़ा कर लेता है, और धार्मिक आधिपत्य के प्रयास आदि सामने आते हैं। चट्टम्पिस्वामीजी ने सृष्टि के साथ संहार करने की ज़िम्मेदारी भी स्वयं ली। चट्टम्पिस्वामीजी के एक महान व्यक्ति होने का यही तर्क है कि उन्होंने सृजन और विनाश को एक साथ किया।

इनमें से पहली है चतुर्वर्ण- जाति व्यवस्था जो हजार वर्ष से अस्तित्व में है जो भूस्वामियों के रूप में स्थापित राजगुरु ब्राह्मणों की सुदृढ शक्तिथी। 'वेदाधिकार निरूपणम्' जैसी कृति इसके विरुद्ध ब्रह्मास्त्र है। दूसरी अभेद्य शक्ति ब्रिटेन के औपनिवेशिक शासन का सांस्कृतिक आक्रमण था, जिसे उस साम्राज्य के रूप में जाना जाता था वहाँ सूर्य कभी अस्त नहीं होता था। भारतीय धार्मिक मान्यताओं को मिटाने के लिए अधिकारियों और ईसाई प्रचारकों का उपयोग करके शिक्षा में शुरू किए गए कार्यक्रम यहाँ लागू किए गए थे। स्वामीजी ने 'क्रिस्तुमतछेदनम' पुस्तक तथा अन्य गतिविधियों के माध्यम से उस प्रवाह को रोक दिया।

शूद्र संप्रदायों में से एक होने की मान्यता प्राप्त, नायर समुदाय को ब्राह्मण दासता के माध्यम से सवर्ण पद दिया गया था। केरल में कई समूहों ने यह सोचना शुरू कर दिया कि जातिगत विरोध पैदा करना और बनाए रखना राजनीतिक लाभ के लिए अनुकूल होगा। इसलिए, कई लोग नायर समुदाय में जन्मे चट्टम्पिस्वामीजी को संदेह या इनकार की नज़र से देखने को प्रेरित हुए। इन सबके परिणामस्वरूप, केरल के अब तक के सबसे बहादुर और सबसे स्वतंत्र व्यक्ति चट्टम्पिस्वामीजी को और उनके महान आदर्शों और आशयों को यथाविधि समझने का अवसर हमें नहीं मिला।

यह भी जानना चाहिए कि चट्टम्पि स्वामीजी ने जीवन की सबसे प्रतिकूल परिस्थितियों को भी आसानी से पार कर यह सब किया था। स्वामीजी ने उन सभी भौतिक सीमाओं को तोड़ दिया जो उन्हें ज्ञान से दूर रखती थीं। वे घर के भूखे और गरीबी ग्रस्त स्थिति से निकलकर अपने परिवार का पालन-पोषण करने के लिए पत्थर और मिट्टी ढोने की स्थिति तक पहुँचे और अंत में चट्टम्पिस्वामीजी की महान स्थिति तक पहुँचे। उन्होंने कहा है कि उन्हें कई दिनों तक भूखे पेट रहना पड़ा । सब कुछ स्वार्जित ज्ञान है। ज्ञान प्राप्त करना उनके लिए विस्मृति की पूर्ति थी। खुले तौर पर कहा है कि ज्ञान की उनकी खोज कुछ नया हासिल करने के लिए नहीं थी, बल्कि जो कुछ उन्होंने पहले ही हासिल कर लिया था फिर से पुनर्जीवित करना था। चट्टम्पिस्वामीजी अपने समस्त जीवनकाल में एक पूर्ण साधक, शिक्षार्थी और शिक्षा नायक के रूप में चमके हैं। अध्ययन और शोध के अलावा, उन्होंने ऐसे महान कार्य भी किये जो कोई और नहीं कर सका, जैसे नए समाज और दृष्टिकोण का निर्माण।

20 वीं सदी में अपने ओजस्वी व्याख्यानों से पूरे विश्व में गीताज्ञान जगाने वाले स्वामीजी चिन्मयानंद ने यह स्पष्ट किया है कि चट्टम्पिस्वामीजी मेरे पहले गुरु हैं जिन्होंने मुझे आत्म-ज्ञान के महान मार्ग पर अग्रसर किया। स्वामीजी ज्ञान के स्रोत हैं। सभी योगियों का योगी हैं, गुरु ओं का गुरु हैं और ऋषियों का ऋषि हैं। चट्टम्पिस्वामीजी न केवल ऐसे शिष्यों के सृजन में सक्षम थे जो युग स्रष्टा थे बल्कि विश्वगुरु के रूप में मानेजाने वाले विवेककानंदस्वामीजी के संदेह को भी दूर करने में सक्षम थे। यह शब्दों से नहीं बल्कि अनुभव से करते थे।

स्वामीजी विवेकानन्द को अपने गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस से स्पर्श दीक्षा के माध्यम से प्राप्त ज्ञानोदय के बाद चट्टम्पिस्वामीजी के स्पर्श से कुछ ऐसा ही प्राप्त हुआ था। स्वामीजी विवेकानन्द ने यहाँ, Here,I met a remarkable man, से 'Most enigmatic ascetic I have had reason to acquaint

within all my travels in India and abroad " तक की व्याख्या की थी। सर्वज्ञ, ऋषि, सद्गुरु, परिपूर्णकलानिधि और महाप्रभु (श्रीनारायणगुरु के साक्ष्य) चट्टम्पिस्वामीजी की ब्रह्म की स्थिति को प्रकट करने के लिए इससे अधिक और क्या चाहिए?

चट्टम्पिस्वामीजी की कोई भी गतिविधि उपदेश या प्रदर्शन के माध्यम से नहीं थी। उन्होंने कर्म और अनुभव के माध्यम से सब कुछ प्रदान किया। इस आधार पर किया गया था कि सत्ताईस वर्ष की आयु में उन्हें आत्मबोध का सर्वोच्च अनुभव प्राप्त हुआ था। चट्टम्पिस्वामीजी ने केरल में पुनरुद्धार की शुरुआत को भी चिह्नित किया।

चट्टम्पिस्वामीजी द्वारा निभाई गई भूमिका अद्वितीय है। उन्होंने स्वयं जाति का उल्लंघन किया। जाति को नकारना और उसका उल्लंघन करना ऐसा कुछ था जो उन्होंने बचपन में स्वयं किया था। दूसरा यह है कि उन्होंने मंच और कार्यालय स्वीकार किए बिना श्रोताओं को संबोधित किया। यदि आप किसी घर में जाते हैं तो वहाँ का सदस्य हो जाते हैं। वहाँ के लोगों से उनके अनुकूल भाषा में किसी विषय पर बातें की जाती है।। बच्चों के लिए साफ-सफाई, शिक्षा और संस्कार जैसी बातें। यदि स्त्रियों के पास हैं, तो खाना बनाना और स्वास्थ्य ,मोक्ष, परिवार की रक्षा आदि.. पुरुषों के पास कृषि, कला और शिल्पनिर्माण आदि । लेकिन विद्वानों के द्वारा ज्ञात विषय में, चाहे वह संगीत, चित्रकला, अभिनय, कुछ भी हो, वह जहाँ भी जाता है स्वामीजी ही सबसे पहले चमकते।

केरल के इतिहास में चट्टम्पिस्वामीजी का क्या स्थान है, इसके बारे में पूछें तो वे महर्षि और ज्ञानी थे । लेकिन भौतिक स्तर पर, उन्हें एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में भी समझा जाना चाहिए। क्योंकि उन्होंने कई बौद्धिक परियोजनाएँ शुरू कीं जिन्हें आज सांस्कृतिक अध्ययन के स्वरूप में समझा जा सकता है। उन्होंने जिन क्षेत्रों का विस्तार किया , इनमें से सबसे महत्वपूर्ण है गद्य भाषा का प्रयोग। उसी तरह, दुनिया के अन्य भागों से अलग, केरल में आधुनिकता पैदा करने का प्रयास उनके काम में निहित था। औपनिवेशिक आधुनिकता को अस्वीकार करते हुए, उन्होंने अंग्रेजी का अध्ययन करने वाले और यूरोपीय साहित्य और जीवन को आत्मसात करने वालों द्वारा यहाँ प्रस्तुत आधुनिकता को स्वीकार नहीं किया। उन सभी को अस्वीकार करके, चट्टम्पिस्वामीजी भारतीय ज्ञान परंपरा और उसकी धाराओं को मजबूत बनाकर मलयालम ज्ञान की दुनिया को रोशन कर रहे थे, और प्रकाश की किरणें फैला रहे थे। कुछ लोगों ने इसे वैकल्पिक आधुनिकतावादी रचना कहा है। यह ऐसी चीज़ है जिस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसमें आत्मनिरीक्षण, वैज्ञानिक जागरूकता और विश्व अनुभव के ज्ञान की कई रोशनियाँ एक साथ मिश्रित थीं। इस स्तर पर, मलयालम के ज्ञानमंडल में चट्टम्पिस्वामीजी से पहले या बाद में कोई नहीं मिल सकता है। इस प्रकार उन्होंने हमारे देश में एक बहुत ही शानदार उदाहरण प्रस्तुत किया।

उनकी कई शुरुआती किताबें उपनाम में लिखी हुई थीं। वे उपनाम अगस्त्य और षणमुखदास थे। अपना नाम मशहूर होना वे नहीं चाहते थे। सच कहें तो चट्टम्पिस्वामीजी का कोई नाम नहीं है. माता-पिता द्वारा दिया गया नाम अय्यप्पन है। घर में कुजंन बुलाया गया था । स्कूल में आप कुञ्ञन पिल्लै के नाम से जाने जाते थे। चट्टम्पि, मॉनिटर, आदि बाद में चट्टम्पिस्वामीजी के रूप में आया था। यह समझा जाना चाहिए कि वह इस स्तर तक पहुँच गये कि उनका एक भी नाम नहीं रहा और किसी एक नाम की जरूरत नहीं रही।

दूसरा मुद्दा यह है कि, स्वामीजी अपनी दलीलें किसीके साथ पेश न करते थे। वह अपने सभी समकालीनों को बहुत अच्छी तरह से जानते थे। उनके पास त्रिवेन्द्रम और त्रावणकोर के उन दिनों के श्रेष्ठ व्यक्तित्वों के बारे में स्पष्ट विचार थे, जो व्याकरण, भाषा विज्ञान और साहित्य के क्षेत्र में फल-फूल रहे थे। स्वामीजी की किताबों की जाँच करें तो मालूम होता है कि उनका विचार कहीं से भी नहीं लिया गया हो या उन्हें किसी एक में समाया गया हो। उनके विचारों में अगस्त्य, तोलकापियर, पाणिनी, पतंजलि, भर्तृहरि, भवनंदी, शंकराचार्य ऐसे ही श्रेष्ठ विद्वान भासरा करने लायक है। चट्टम्पिस्वामीजी ने उपनिषद ,ऋषियों और महामनीषियों के अलावा किसी पर भी ध्यान नहीं दिया।

जिसे प्रवचन कहा गया था, उसके दो उदाहरण हैं जिन्हें मूल रूप से 'क्रिस्तुमतछेदनम' और 'वेदाधिकारनिरूपणम' कहा जाता था। इस लेखन का उद्देश्य एक बड़ी वैश्विक परियोजना के परिणामस्वरूप इस कदम का बचाव करना था। उस समय, बासल मिशन के नेतृत्व में, हिंदू संस्कृति और धर्म को बदनाम करने और इससे जुड़े लोगों को अलग- अलग करने के बुरे इरादे से कई लेख लिखे गए थे। हरमन गुंडर्ट और अनेक विद्वान उन गतिविधियों में शामिल रहे हैं। यह सब समझने और इसकी आलोचना करने के लिए उन्होंने 'क्रिस्तुमतछेदनम' लिखी।

वैदिक समीक्षा के मामले में भी यही किया गया। यह बुद्धि और प्रभुत्व की शक्तिको तोड़ना है। तार्किक, तथ्यात्मक, वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण करें; उनका एकमात्र उद्देश्य उसको ख़ारिज करना था। वह पूर्णतः स्वतंत्र था। जो लोग उँचे पद पर पहुँच गये हैं वे ही इसे जान पाये हैं। उनमें से, श्री नारायणगुरु ही वह व्यक्तिहैं जिन्होंने स्वामीजी को सबसे अच्छी तरह समझा। चट्टम्पिस्वामीजी की समाधि के बारे में जानकर श्री नारायणगुरु ने दो टीकाओं की रचना की। इतना ही नहीं, उन्होंने उस दिन शिवगिरी में उपवास किया और दूसरों को भी उपवास करने की सलाह दी। ये गुरुदेव द्वारा रचित श्लोक हैंः सर्वज्ञ ऋषिरुत्क्रान्तः/सद्गुरु शुकवर्त्मना/अभाति परमव्योम्नि/ परिपूर्ण कलानिधिः/ लीलया कालमधिकम/ नीत्वान्ते स महाप्रभुः/ निस्वं वपुस्समुत्सृज्य/स्वं ब्रह्मवापुरस्थिताः

पहला विशेषण 'सर्वज्ञ' है। सर्वज्ञ का अर्थ है ईश्वर। श्री नारायणगुरु ने कई देवता-स्तुति की रचनायें की हैं। लेकिन उन्होंने केवल एक ही इंसान के बारे में लिखा। वह चटटम्पिस्वामीजी के बारे में है। चट्टम्पिस्वामीजी को 'शिवाष्टक' में सर्वज्ञ शब्द से भी वर्णित किया गया है, जिसका अर्थ स्वयं महादेव है। सद्गुरु का अर्थ है वह गुरु जो सद्रूप में प्रकाशित हो। भगवद् गीता कहती है 'ब्रह्मविद ब्रह्मैव भवति'। अर्थात जो ब्रह्म को जानता है या जो स्वयं ब्रह्म बन गया है वही सद्गुरु है। इतना ही नहीं, चट्टम्पिस्वामीजी व्यापक रूप से सद्गुरु के नाम से भी जाने जाते थे। पहले श्लोक का अर्थ यह है कि सद्गुरु , जो सर्वज्ञ, ऋषि और उत्क्रांत हैं, और पूरे विश्व में पूर्ण प्रकाशमान के रूप में चमकते हैं।

शुकमार्गम उनकी महासमाधि के बारे में है। कहा जाता है कि समाधि दो प्रकार की होती है। एक पिपिलिकामार्ग द्वारा है। पिपिलिकामार्ग वह विधि है जिसके द्वारा एक चींटी पेड़ के आधार से रेंगती है और पेड़ के शीर्ष पर फल प्राप्ति तक पहुँचने में कुछ समय लेती है। दूसरा है शुकमार्ग जैसे एक पेड़ की शाखा पर बैठा पक्षी अपने पंख फड़फड़ाता है और शाश्वत आनंद की ओर उड़ जाता है, परिपक्व आत्मा को परमात्मा में निवास के क्षण में हो जाता है। इसके अतिरिक्त एक तीसरी व्याख्या भी है। शुक मार्गम का अर्थ है आकाश में यात्रा करते पक्षी का मार्ग। यह कोई नहीं जान सकता। चट्टम्पिस्वामीजी की समाधि ऐसी ही है। थोड़े समय के लिए देखा गया या अलग किया गया; वह महाप्रभु का पूर्ण अवतार था, जो अपने आपमें विलीन हो जाता है, कुछ भी नहीं बचता, उसके बाद कोई गंध नहीं रह जाती, और फिर से शुरु आत की कोई आवश्यकता नहीं होती। महाप्रभु वेदांत दर्शन में परब्रह्म को दिया गया नाम है, जो ब्रह्मांड के निर्माण और विनाश का कारण है।

दूसरे श्लोक का भाव यह है कि सद्गुरु , जो स्वयं परम ब्रह्म हैं, उसने माया के रुप से शरीर धारण किया और लंबे समय तक इसका आनंद लेने के बाद, अपने अभौतिक शरीर को त्याग दिया और ब्रह्म का मुक्तरूप धारण किया। तो यह स्पष्ट है कि चट्टम्पिस्वामीजी, भौतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्णता प्राप्त एक दुर्लभ व्यक्तिथे।

टिप्पणियाँ

1. सेंटर फॉर साउथ इंडियन स्टडीज, तिरुवनंतपुरम द्वारा 2010 में प्रकाशित, प्रस्तावना प्रोफेसर राजन गुरु ।
2. आधुनिक भाषाविज्ञान का उदय 1916 में हुआ। सुस्यूर, एरेन्ड्ट बार्थ, अल्थुसर, फौक्ल्ट, डेरिडा, सैड, एंडरसन आदि के सिद्धांतों को पेश किए जाने से दशकों पहले, चट्टम्पिस्वामीजी उनकी मार्गदर्शक अंतर्दृष्टि से प्रबुद्ध थे।
3. Structural study of myth,1955 (क्रमशः)

‘दीपदान’ एकांकी में पन्ना धाय के बलिदान का मार्मिक चित्रण - आज के संदर्भ में

डॉ शशिप्रभा जैन

शोध आलेख का सार : अपनी कोख से जन्म दिए बच्चे को दाव पर लगाकर कर्तव्य निष्टता,और जिम्मेदारी को निभाती है। राष्ट्रीय प्रेम और राजभक्ति अपने अन्दर कूट कूट कर भरी है। आज की प्रासंगिकता में इस प्रकार की नारी का होना दुर्लभ है। देश के लिए मर मिटना ही नहीं अपनी संतान का बलिदान करना, विचारणीय बिंदु है। पुत्र से भी बढ़कर राष्ट्र और राज्य को स्थान दिया है। न्याय ,साहस, बलिदान और कर्तव्य निष्टता कूटकूट कर भरी है। आज का मानव कूपमंडूक की तरह रहता है, वह अपने से आगे की सोच नहीं पाता है। संस्कार, संस्कृति, मान, मर्यादा, अपनापन जैसी मान्यताओं को नजर अंदाज कर देता है।

बीज शब्द- त्याग, राष्ट्र, एकता ,बलिदान, धाय माँ, जिम्मेदारी,मानवीयता, आदर्श

डॉ रामकुमार वर्मा हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, व्यंग्यकार और हास्य कवि के रूप में जाने जाते हैं। ‘उन्हें हिन्दी एकांकी का जनक’ माना जाता है। उन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सन 1963 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। इनके काव्य में ‘रहस्यवाद’ और ‘छायावाद’ की झलक है। डॉ. रामकुमार वर्मा का जन्म मध्य प्रदेश के सागर जिले में 15 सितम्बर सन् 1905 ई. में हुआ। इनके पिता लक्ष्मी प्रसाद वर्मा डिप्टी कलैक्टर थे। वर्माजी को प्रारम्भिक शिक्षा इनकी माता श्रीमती राजरानी देवी ने अपने घर पर ही दी, जो उस समय की हिन्दी कवयित्रियों में विशेष स्थान रखती थीं। बचपन में इन्हें ‘कुमार’ के नाम से पुकारा जाता था। रामकुमार वर्मा में प्रारम्भ से ही प्रतिभा के स्पष्ट चिह्न दिखाई देते थे। ये सदैव अपनी कक्षा में प्रथम आया करते थे। पठन-पाठन की प्रतिभा के साथ ही साथ रामकुमार वर्मा शाला के अन्य कार्यों में भी काफी सहयोग देते थे। अभिनेता बनने की रामकुमार वर्मा की बड़ी प्रबल इच्छा थी। अतएव इन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में कई नाटकों में एक सफल अभिनेता का कार्य किया है। इसी समय प्रबल वेग से असहयोग की आँधी उठी और रामकुमार वर्मा राष्ट्र सेवा में हाथ बँटाने लगे तथा एक राष्ट्रीय कार्यकर्ता के रूप में जनता के सम्मुख आये। इसके बाद वर्माजी ने पुनः अध्ययन प्रारम्भ किया और सब परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करते हुए उन्होने नागपुर विश्वविद्यालय की ओर से ‘हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास’ पर पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। रामकुमार वर्मा आधुनिक हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि, एकांकीकार और आलोचक हैं। ‘चित्ररेखा’ काव्य-संग्रह पर इन्हें हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ ‘देव पुरस्कार’ मिला है। साथ ही ‘सप्त किरण’ एकांकी संग्रह पर अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन पुरस्कार और मध्यप्रदेश शासन परिषद से ‘विजयपर्व’ नाटक पर प्रथम पुरस्कार मिला है। रामकुमार वर्मा रूसी सरकार के विशेष आमंत्रण पर मास्को विश्वविद्यालय के अंतर्गत प्रायः एक वर्ष तक शिक्षा कार्य कर चुके हैं। हिन्दी एकांकी के जनक रामकुमार वर्मा ने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और साहित्यिक विषयों पर 150 से अधिक एकांकी लिखीं। उन्होंने रहस्यवाद के हर पहलू का अध्ययन किया है। उस पर मनन किया है। अगर वर्मा जी को समझना हो और उसका वास्तविक,साहित्यक रूप देखना हो तो उसके लिए आपकी ‘चित्ररेखा’ सर्वश्रेष्ठ काव्य ग्रंथ होगा।

एकांकी साहित्य के विकास और वृद्धि में उन्होंने जो योगदान दिया इसके लिए वे हमेशा याद किए जाएँगे। प्रस्तुत एकांकी में डॉ रामकुमार वर्मा ने राजपूताने की वीरांगना पन्ना धाय में अभूतपूर्व बलिदान का चित्रण किया है। इस ऐतिहासिक एकांकी द्वारा राष्ट्रभक्तितथा राष्ट्र-प्रेम का चित्रण किया गया है। सच्चे देशभक्तपन्ना धाय की तरह अपने पुत्र की बलि चढ़ाकर भी देश के हित की रक्षा करते हैं।

डॉ. रामकुमार वर्मा द्वारा रचित एकांकी 'दीपदान' ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित एक मार्मिक रचना है। इस एकांकी के माध्यम से लेखक ने त्याग, कर्तव्य और राष्ट्रभक्ति की भावना को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। इस कृति का केंद्रीय पात्र पन्नाधाय है, जिसका चरित्र भारतीय नारी के आदर्श स्वरूप को उजागर करता है। पन्नाधाय मेवाड़ के राजपरिवार में धाय माँ के रूप में नियुक्त है। यद्यपि वह साधारण परिवार से आती है, परंतु उसके विचार और कार्य उसे महान बना देते हैं। उसका जीवन कर्तव्यपरायणता और निष्ठा का प्रतीक है। राजकुमार उदयसिंह की रक्षा को वह अपना परम धर्म मानती है। उनका यह त्याग 'पुत्र-प्रेम' पर 'कर्तव्य-प्रेम' की विजय है। उनके रक्तमें मेवाड़ के प्रति वफादारी थी। वह बनवीर की धन-दौलत और प्रलोभन के आगे नहीं झुकीं। उनके लिए महाराणा सांगा का वंश बचाना ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य था।पन्ना केवल भावुक नहीं थीं, बल्कि बुद्धिमान भी थीं। उन्होंने तुरंत निर्णय लिया कि उदयसिंह को कीरत बारी के साथ टोकरी में छिपाकर बाहर भेजा जाए। उनकी यह सूझबूझ ही उदयसिंह की जान बचा पाई। जब बनवीर तलवार लेकर आया, तो पन्ना कांपी नहीं। उन्होंने अपनी आँखों के सामने अपने पुत्र की हत्या होते देखी, लेकिन अपने कर्तव्य से विचलित नहीं हुईं।

एकांकी का सबसे हृदयविदारक और गौरवपूर्ण प्रसंग तब आता है जब पन्नाधाय अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर राजकुमार उदयसिंह के प्राणों की रक्षा करती है। मातृत्व की स्वाभाविक ममता के बावजूद वह राष्ट्र और राज्य के हित को सर्वोपरि रखती है। यह घटना उसके अद्वितीय त्याग और बलिदान भावना को दर्शाती है। पन्नाधाय का चरित्र साहस और दृढ़ संकल्प से परिपूर्ण है। अपने पुत्र की मृत्यु के पश्चात भी वह विचलित नहीं होती और अत्यंत बुद्धिमानी से शत्रुओं को भ्रमित कर राजकुमार को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा देती है। उसका यह व्यवहार उसकी मानसिक शक्तिऔर आत्मबल को प्रकट करता है। पन्नाधाय केवल एक माँ नहीं, बल्कि आदर्श नारी है। उसका मातृत्व व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय है। वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाती है। उसका जीवन यह संदेश देता है कि सच्चा प्रेम और कर्तव्य त्याग से ही महान बनता है।

रामकुमार वर्मा के एकांकी 'दीपदान' की पन्ना धाय केवल इतिहास की पात्र नहीं हैं, बल्कि उनका चरित्र आज के समाज के लिए भी उतना ही प्रासंगिक है। वर्तमान युग में जब स्वार्थ, व्यक्तिगत लाभ और आत्मकेंद्रित सोच बढ़ती जा रही है, पन्ना धाय का त्यागमय व्यक्तित्त्व हमें कर्तव्य, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की याद दिलाता है। आज के समय में मातृत्व को प्रायः केवल पारिवारिक दायरे तक सीमित कर दिया गया है, जबकि पन्ना धाय का मातृत्व व्यापक और सामाजिक है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि सच्चा मातृत्व केवल अपने बच्चे तक सीमित नहीं होता, बल्कि समाज और राष्ट्र के भविष्य की रक्षा करना भी उसका अंग है। आज जब देश को जिम्मेदार नागरिकों की आवश्यकता है, पन्ना धाय का आदर्श प्रेरणास्रोत बन सकता है।

पन्ना धाय का कर्तव्यबोध आज के संदर्भ में विशेष महत्त्व रखता है। आधुनिक समाज में लोग कठिन

परिस्थितियों में अपने दायित्वों से बचने का प्रयास करते हैं, परंतु पन्ना धाय संकट की घड़ी में भी अपने कर्तव्य से विचलित नहीं होतीं। उनका चरित्र हमें सिखाता है कि सही और गलत के बीच चुनाव करते समय व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं, बल्कि व्यापक हित को प्राथमिकता देनी चाहिए। आज के युग में नारी-सशक्तिकरण की बात की जाती है। पन्ना धाय इसका सशक्तउदाहरण हैं। वे निर्णय लेने में सक्षम, साहसी और आत्मबल से परिपूर्ण नारी हैं। उनका चरित्र यह प्रमाणित करता है कि नारी केवल सहनशील ही नहीं, बल्कि निर्णायक और नेतृत्वकारी भी हो सकती है। साथ ही, उनका चरित्र नैतिक साहस का प्रतीक है। आज जब नैतिक मूल्यों में गिरावट दिखाई देती है, पन्ना धाय का त्याग और संयम हमें जीवन-मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देता है।

पन्ना धाय का चरित्र आदर्श नागरिक, आदर्श नारी और आदर्श मानव बनने की प्रेरणा देता है। उनका जीवन संदेश देता है कि सच्चा त्याग वही है जो समाज और राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए किया जाए। इस प्रकार पन्ना धाय का चरित्र आज भी उतना ही जीवंत और प्रासंगिक है जितना अपने समय में था। आज का समाज तकनीक, गति और स्वार्थ में उलझा है। 'दीपदान' हमें याद दिलाता है कि मनुष्यता केवल सुविधाओं से नहीं, बल्कि दूसरे के दुख को समझने और उसमें सहभागी होने से बनती है।वर्तमान युग उपभोग और प्रदर्शन का है। 'दीपदान' का दीपक स्वार्थ छोड़कर समाज के लिए जलने का प्रतीक है। जो आज के भौतिकवादी दौर में बेहद ज़रूरी संदेश देता है। एकांकी में नारी का चरित्र केवल सहनशील नहीं, बल्कि नैतिक साहस और करुणा की प्रतीक शक्ति है। आज जब स्त्री-सशक्तिकरण की बात होती है, 'दीपदान' उसकी मानवीय और नैतिक नींव दिखाता है। आज लोग समस्याओं से मुँह मोड़ लेते हैं 'यह मेरी जिम्मेदारी नहीं' कहकर। 'दीपदान' सिखाता है कि एक छोटा-सा दीप भी अंधकार को चुनौती दे सकता है, यानी व्यक्ति का छोटा प्रयास भी समाज में बदलाव ला सकता है। 'दीपदान' एकांकी मूलतः संवेदना, त्याग, मानवीय करुणा और सामाजिक उत्तरदायित्व का नाटक है। आज के समय में इसकी प्रासंगिकता और भी गहरी दिखाई देती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. गद्य की नयी विधाओं का विकास-मज़ादा आज़ाद,बुक्स आर्केड 2017
2. गद्य की पहचान- अरु ण प्रकाश,अंकिता प्रकाशन,गाजियाबाद 2012
3. हिंदी का गद्य साहित्य-रामचंद्र तिवारी,विश्वविद्यालय पकाशन,दरियागंज डेल्ही 2014
4. हिंदी का गद्य विन्यास- राम स्वरु प ,लोकभारती प्रकाशन डेल्ही 2021
5. हिंदी निबंध उद्भव और विकास- हरिचरण शर्मा, डेल्ही 2022
6. वर्त्तमान हिंदी साहित्य की दिशा और दशा,सुषमा गजापुरे-I
7. दक्षिण में हिंदी भाषा और साहित्य दशा और दिशा- संपादक डॉ.र शाशिधरण, सह संपादक डॉ.र सेतुनाथ प्रकाशक- गोविन्द पचौरी, जवाहर पुस्तकालय, प्रथम संस्करण 2013

Dean of Arts&Social Sciences
Professor& Head Department of Hindi
Avinashilingam Deemed University Coimbatore

मणि मधुकर की कहानियों में नैतिक द्वंद्व और मानवीय संघर्ष

डॉ शेनुजा मॉल एच एन

मणि मधुकर न केवल एक प्रतिष्ठित नाट्यकार हैं, बल्कि हिंदी के एक सशक्तऔर संवेदनशील कहानीकार के रूप में भी उनकी गहरी पहचान है। उनका रचना संसार बहुआयामी है। उनकी कहानियाँ हिंदी कथा साहित्य में एक ताजगी और नवीनता लेकर आती हैं। अधिकांश कहानियों में राजस्थानी लोकसंस्कृति, भाषा और परिवेश की स्पष्ट छाप मिलती है, जिससे वे अपनी एक अलग सांस्कृतिक पहचान बनाती हैं।

मणि मधुकर की कहानियाँ मानवीय संवेदनाओं की गहराई और विविधता का अत्यंत मार्मिक चित्रण करती हैं। उन्होंने प्रेम, पीड़ा, संघर्ष और जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं को बेहद संवेदनशीलता और सरलता से प्रस्तुत किया है। उनकी दृष्टि समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती है, जिनमें मानवीय संबंधों की जटिलता और गहराई विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

प्रेम, दोस्ती, पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों की बारीकियों को मधुकर जी ने बेहद सहज और प्रभावशाली भाषा में प्रस्तुत किया है। उन्होंने समाज में मौजूद विषमताओं, अन्याय और शोषण जैसे विषयों को भी गंभीरता से उठाया है। उनकी भाषा सरल, स्पष्ट और अत्यंत संवेदनशील होती है, जो पाठकों को भीतर तक छू जाती है।

मणि मधुकर की कहानियाँ सामाजिक यथार्थ का सजीव चित्रण करती हैं, जिनमें पात्र प्रायः समाज के वंचित और निम्न वर्ग से संबंधित होते हैं। वे अपनी कहानियों में सामाजिक अन्याय, गरीबी, बेरोजगारी, जातीय भेदभाव और वर्ग-संघर्ष जैसे गंभीर मुद्दों को केंद्र में रखते हैं। उनकी रचनाओं में कृत्रिमता नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों की सच्चाई स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। 'नमक का दरोगा' एक ईमानदार दरोगा की कहानी, जो अपने कर्तव्यों के प्रति इतना समर्पित है कि अपने परिवार की आवश्यकताओं को भी नज़रअंदाज कर देता है। यह कहानी पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन के टकराव को उजागर करती है। 'एक भिखारी की मौत' एक भिखारी की मृत्यु के बाद उसके परिवार की दयनीय स्थिति को चित्रित करती है। इसमें मधुकर जी ने गरीबी और सामाजिक असमानता को अत्यंत संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया

'एक दिन का मेहमान' एक ऐसे व्यक्तिकी कहानी है जो लंबे समय बाद अपने परिवार से मिलने आता है। यह कथा पारिवारिक संबंधों के महत्व और उनसे जुड़ी भावनात्मक जटिलताओं को उजागर करती है।'फांसी का फंदा' रामेश्वर नामक गरीब किसान की कहानी, जो अपनी जमीन बचाने की जद्दोजहद में अंततः आत्महत्या कर लेता है। यह कथा जमींदारी प्रथा, आर्थिक शोषण और किसानों की दुर्दशा पर तीखा प्रश्न उठाती है। मणिमधुकर का लेखन समाज के उन उपेक्षित और हाशिए पर खड़े लोगों की आवाज बनकर सामने आता है। वे दलितों, महिलाओं, मजदूरों और ग्रामीण समुदायों की समस्याओं को अपनी कहानियों का मुख्य विषय बनाते हैं और उनके संघर्षों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त करते हैं।

'चारों ओर' कहानी एक युवक की आंतरिक और बाह्य संघर्षों को प्रस्तुत करती है। वह समाज की

उपेक्षा, राजनीतिक भ्रष्टाचार और सामाजिक असमानता से जूझता है। अंत में वह अपने घावों को स्वीकार कर, उन्हें चुनौती देने का निश्चय करता है। यह कथा सामाजिक बदलाव की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

आपकी कहानियों की विशेषता यह है कि वे केवल घटनाओं या पात्रों का विवरण नहीं देतीं, बल्कि उन्हें जीवन्त रूप में प्रस्तुत करती हैं।यदि कहीं वर्णन होता भी है, तो वह एक निश्चित बिंदु पर पहुँचकर प्रस्तुति में रूपांतरित हो जाता है। उदाहरण स्वरूप, उनकी प्रसिद्ध कहानी 'फाँसी' में कुली हड़मान का एक वृद्ध यात्री और उसकी बेटी की पीड़ा से द्रवित होकर आग में हाथ डाल देना - केवल एक विवरण नहीं, बल्कि एक नाटकीय क्षण का विस्फोटक प्रस्तुतीकरण है। इसी तरह, 'उजाड़ और अधमरे' में जब दाखाँ के प्रेमी हमीद की हत्या उसके पति धनसिंह द्वारा की जाती है, तो वह उग्र प्रतिक्रिया देती है, लेकिन वही दाखाँ जब अपने पति त्त्द्म सैनिकों द्वारा हत्या देखती है, तो फूट-फूट कर रोती है। इस दृश्य में अज्जू का धनसिंह की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करना 'हे ईश्वर! हे ईश्वर!' इस कहानी को केवल विवरणात्मक नहीं, बल्कि बहुआयामी, दृश्यात्मक और गहराई से संपन्न बना देता है।

'जख्म के चारों ओर' में पात्र लुणिया, अपने पुराने संबंधों को बेहद सहजता से स्वीकार करता है - जैसे नथिया का पहले उसके साथ और फिर सरपंच के भाई के साथ रहना, उसे किसी विशेष प्रतिक्रिया के लिए विवश नहीं करता। नथिया भी अपने अतीत से भावनात्मक रूप से मुक्त दिखती है। रेगिस्तान का यह भूगोल संबंधों की उलझनों से परे, मानो केवल जीवन जीने की आकांक्षा और प्रवाह से भरा हुआ है।

मणि मधुकर की कहानियों का भौगोलिक परिवेश मुख्यतः रेगिस्तानी है, लेकिन यह भूगोल सांस्कृतिक नहीं, बल्कि प्राकृतिक है। इसलिए यदि कोई उनकी कहानियों में पारंपरिक राजस्थानी संस्कृति या रिवाजों की खोज करता है, तो उसे निराशा हो सकती है। वास्तव में, उनका उद्देश्य भी यही नहीं है। उनके पात्र रेगिस्तान की कठिन परिस्थितियों में जिजीविषा और मानवीय संवेदना के साथ जीवन जीते हैं। मणिमधुकर की कहानियाँ स्थूल घटनाओं पर आधारित नहीं हैं, बल्कि उनमें छिपे नैतिक द्वंद्व और मानवीय संवेदनाओं की गहराई को ज़रूर पकड़ती हैं। सतह पर ये कहानियाँ जितनी साधारण लगती हैं, उतनी ही भीतर से गहरी और अर्थपूर्ण होती हैं। 'फाँसी' में कुली हड़मान का विद्रोही व्यवहार एक असहाय जीवन के प्रति जाग्रत संवेदना और गहरे नैतिक विवेक का परिणाम है।

'जली हुई रस्सी' में पुन्नी और रावजी का संबंध एक जटिल भावनात्मक संघर्ष में बदल जाता है, जब रावजी पुन्नी के पति को झूठे केस में फँसाता है। रावजी द्वारा जबरदस्ती किए जाने पर पुन्नी का स्वयं को उसके हवाले कर देना -"मैं इसी लायक हूँ, मुझसे ऐसा ही सलूक करो"- एक गहरी नैतिक प्रतिक्रिया है। यह उस विद्रोह की अभिव्यक्ति है जो शब्दों में नहीं, बल्कि क्रिया में व्यक्त होती है। यह शैली अज्ञेय की 'हॉली बोन की बतखें' में हीली द्वारा बतखों की हत्या की व्यंजना से मिलती-जुलती है।

मणि मधुकर के भीतर का नाटककार उनकी कहानी कहने की शैली में स्पष्ट दिखाई देता है।वे नैतिक द्वंद्व को विश्लेषण की तरह प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि उसे किसी आकस्मिक, लेकिन सार्थक दृश्य के माध्यम से दिखाते हैं। इसके लिए जिस रचनात्मक संयम की आवश्यकता होती है, वह उनके लेखन में पूरी तरह मौजूद है। 'बैताल कथा' में दम्मो द्वारा अपने पति को विष देकर मार देना और फिर उसी पलंग पर निक्की के साथ सोना - यह दृश्य गहरी घृणा उत्पन्न करता है, लेकिन लेखक इसे परोसते नहीं, बस दिखाते हैं। अंत में निक्की द्वारा छगनलाल के कंकाल को

लाना और उससे वही प्रश्न दोहराना - पूरी कथा की विडंबना को उजागर कर देता है।

मणि मधुकर की कहानियाँ रेगिस्तान के भूगोल में गहरे जीवन-यथार्थ से साक्षात्कार कराती हैं। इनमें औरत-मर्द के रिश्तों की भूख, रोटी की आवश्यकता और किसी तरह जीते चले जाने की जिजीविषा प्रमुख है। इन कहानियों में मानवीय और अमानवीय दोनों पहलुओं को एक कलाकार की निष्पक्ष दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। इस टकराव में संवेदना स्वतः ही उभरती है, बिना किसी अतिरिक्त व्याख्या के।

मणि मधुकर की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और स्वाभाविक होती है, जो न केवल पाठकों को आसानी से समझ आती है, बल्कि उनके पात्रों की सामाजिक पृष्ठभूमि के अनुरूप भी होती है। वे अपनी कहानियों में अत्यधिक अलंकरण या जटिल वाक्य-विन्यास का प्रयोग नहीं करते, बल्कि जनसामान्य की बोलचाल की भाषा को अपनाकर यथार्थ को जीवंत बना देते हैं। उनकी शैली में प्रतीकों, बिंबों और संवादों का कुशल संयोजन देखने को मिलता है, जिससे कहानी न केवल भावनात्मक रूप से समृद्ध होती है, बल्कि कथ्य की शक्ति भी कई गुना बढ़ जाती है। उनके संवाद पात्रों की अंतरात्मा और परिस्थितियों को गहराई से प्रकट करते हैं और कथानक को प्रभावशाली ढंग से आगे बढ़ाते हैं।

मणि मधुकर की कहानियों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वे सामाजिक और मानवीय संवेदनाओं को बोझिल या दार्शनिक शब्दों में नहीं, बल्कि सहज और आत्मीय भाषा में प्रस्तुत करते हैं। यही सादगी और आत्मीयता पाठक को सीधे कहानी के मर्म से जोड़ देती है। उनकी लेखन-शैली में विषयवस्तु, भाषा और भावनात्मक गहराई का ऐसा सामंजस्य देखने को मिलता है, जो उन्हें आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य में एक विशिष्ट पहचान दिलाता है।

निष्कर्ष : मणि मधुकर की कहानियाँ सामाजिक यथार्थ, मानवीय भावनाओं, मानवीय संवेदनाओं, नैतिक द्वंद्वों और जीवन की जिजीविषा और सांस्कृतिक चेतना का अद्वितीय संगम हैं। वे न केवल मनोरंजन करती हैं, बल्कि पाठकों को सोचने, महसूस करने और समाज को नए दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा भी देती हैं। उनकी कहानियाँ साहित्य में संवेदना, संघर्ष और परिवर्तन की सशक्तआवाज़ हैं।यही उनके कथा-साहित्य की सबसे बड़ी ताकत है।मणि मधुकर की कहानियाँ आज भी पूरी तरह प्रासंगिक हैं, क्योंकि जिन सामाजिक मुद्दों को उन्होंने अपनी रचनाओं में स्थान दिया, वे समस्याएँ आज भी समाज में मौजूद हैं। उनका लेखन पाठकों को सामाजिक परिवर्तन की दिशा में सोचने और प्रेरित होने के लिए बाध्य करता है।

संदर्भ सूची :-

1. डॉ साधना शाह : नई कहानी में आधुनिकता बोध पृ:76
2. रामविलास शर्मा, 1988 मणि मधुकर : एक साहित्यिक अध्ययन पृ:34
3. सुरेश चंद्र, 2000 मणि मधुकर की कहानियों का अध्ययन पृ:16
4. रघुवर दयाल : समकालीन हिन्दी कहानी परिदृश्य पृ:32

के.वी.एस.एम सरकारी कॉलेज
नेडुमंगाड़, तिरुवनंतपुरम

मन्नू भँडारी की कहानी 'यही सच हैं' में प्रतिपादित स्त्रीविमर्श

डॉ षीना वी के

मन्नू भंडारी आधुनिक हिंदी साहित्य के लोकप्रिय एवं महत्त्वपूर्ण साहित्यकार हैं। उन्होंने साहित्य की प्रमुख विधाओं मे महत्वपूर्ण काम किया है। उपन्यास, कहानी, नाटक, आत्मकथा साहित्य में उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

मन्नू भड़ारी का जन्म 3 अप्रैल 1931 में भानपुरा मध्यप्रदेश मे हुआ था। और मृत्यु 15 नवम्बर 2021 मे हुई। मन्नू भंडारी की प्रारंभिक शिक्षा अजमेर मे हुई थी। 1949 मे उन्होंने कलकत्ता से बी ए की उपाधि प्राप्त की।इसके बाद बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से हिंदी भाषा और साहित्य मे एम ए की उपाधि प्राप्त की।फिर कलकत्ता के विश्वविद्यालय मे शिक्षण के कार्य से जुडी रही। कलकत्ता से प्रसिद्ध साहित्यकार राजेंद्र यादव से मिलन हुआ और उनसे विवाह हुआ।बाद मे उनके परिवार कलकत्ता से दिल्ली चले गए। अवकाश प्राप्त होने तक दिल्ली विश्वविद्यालय के मिरांडा कॉलेज में प्राध्यापिका के रूप मे कार्यरत रही।

मन्नू भंडारी की प्रसिद्ध कहानी हैं यही सच है। इसी कहानी के आधार पर 'रजनीगंधा' सिनेमा बनाया गया जो काफ़ी लोकप्रिय बने।

'यही सच हैं' कहानी के प्रमुख पात्र है दीपा, निशीथ, संजय, दीपा की सहेली इरा, आदि। दीपा पटना में रहने वाली थी।थीसिस पूरा करने के लिए दीपा कानपुर मे कमरा लेकर वहाँ रहने लगी। वहाँ से पीएच डी करने लगी। दीपा के भाई और भाभी पटना मे रहते हैं। दीपा उनको कभी कभी पत्र लिखती थी।

दीपा के जीवन मे दो प्रेम सम्बन्ध हुए थे। उनका प्रथम प्रेम निशीथ नामक युवक से हुआ जो दफ्तर में काम करता हैं ।अठारह वर्ष की अवस्था मे दीपा का निशीथ से प्रेम सम्बन्ध हुआ जो कच्चे प्रेम की तरह निकला। बाद मे उस सम्बन्ध मे दूरी, अलगाव बोध आये। वह रिश्ता टूटने के बाद दीपा का सम्बन्ध संजय से हुआ। संजय दफ़्तर में काम करता था। इस प्रकार दो प्रेम सम्बन्ध के बीच दीपा मानसिक संघर्ष अनुभव करने लगती हैं।

दीपा विचार करती है कि निशीथ ने दीपा के प्रति प्रेम को एक खिलवाड़ समझ रखा है। दीपा के मन में निशीथ के प्रति घृणा बढ़ने लगी थी। वह निशीथ और संजय की तुलना करके विचार करती हैं निशीथ को समय की पाबन्दी थी। वह ठीक वक्तपर दीपा से मिलने आता था। निशीथ नीली साड़ी पसंद करता था। दीपा जब नई साड़ी पहनकर उसके सामने आती तो निशीथ उसकी खूबसूरती की प्रशंसा करता था। लेकिन संजय का व्यवहार ऐसा नहीं था। संजय दीपा से मिलने देर से आता था। यदि दीपा कोई नई साड़ी पहनकर आती तो संजय उसपर ध्यान नहीं देता था। संजय अक्सर दीपा के शरीर छूकर प्यार प्रकट करता था। उसको आलिंगन करते था और प्यार भरी बातें करता था।

इस कहानी के प्रमुख पात्र दीपा जो पीएच डी कर रही थी उसके जीवन मे आये दो पुरुष थे निशीथ और संजय। 'यही सच हैं' कहानी मुख्यतः कानपुर, कलकत्ता के इर्द गिर्द घटती हैं।

कानपुर में दीपा कमरा लेकर पीएच डी पूरा करने के लिए कार्यरत थी।कहानी के प्रारम्भ मे दीपा के कमरे का दृश्य है।दीपा संजय की प्रतीक्षा करती हुई पढ़ाई के कमरे में बैठती हैं। थीसिस पूरा करने केलिए सारा समय पढ़ाई में लगाना चाहिए। मेज के पास बैठकर पढ़ने का उपक्रम वह करने लगी। अन्त मे संजय ने आकर दरवाजा खटखटाया।

संजय रजनीगंधा के ढेर सारे फूल लेकर मुस्कुराता हुआ दरवाजे पर खडा था। और कमरे मे आकर फूलों को

मेज पर रखकर रुढ़ी दीपा को मनाता हुआ बात करने लगा। रजनीगंधा के फूलों की महक से सारा कमरा महकने लगा था।

संजय देर से दीपा के पास पहुँचा था। संजय के अनेक दोस्त थे। दोस्तों के बीच फँसने के कारण वहाँ से देर से आया था। दोस्तों को नाराज करना संजय ने नहीं चाहा।

संजय और दीपा के प्यार का सम्बन्ध निराला था। संजय रोज़ दीपा के कमरे मे फूल लेकर आता था। फूलदान के पुराने फूल फेंक कर नये फूल उनमें वह लगाता हैं। फूल सजाने में वह कुशल था।

दीपा रजनीगँधा फूल पसंद करती थी। इस कारण संजय फूल लेकर उसके कमरे में आता था।फूल रोज़ मिलते-रहने की संभावना पर उसकी आदत रम हो गई।फूल के बिना पढ़ने मे उसका मन नहीं लगता हैं ।

दीपा को सहेली इरा का पत्र मिला था जिसमें लिखा था कि किसी दिन इंटरव्यू का बुलावा कलकत्ता से आएगा।तब कलकत्ता जाना पड़ेगा। संजय ने कहा कि अगर कलकत्ता के कॉलेज मे नौकरी मिल गई तो दोनों को वहाँ रहने की योजना करनी हैं।संजय ने कहा कि कलकत्ता में कॉलेज में दीपा को नौकरी मिल गई तो संजय भी वहाँ तबादला लेकर आएगा। इंटरव्यू में भाग लेने का निर्णय दीपा ने लिया। कलकत्ता के दफ़्तर में निशीथ नौकरी कर रहा था। शायद निशीथ से भेट होगी संजय ने कहा। निशीथ दीपा का प्रथम प्रेमी युवक था।

दीपा से सँजय ने कहा — "तुम्हे यह जॉब मिल जाए तो मैं भी अपना तबादला कलकत्ता ही करवा लूँ हेड ऑफिस में। यहाँ की रोज़ की किच किच से तो मेरा मन ऊब गया हैं। कितनी ही बार सोचा कि तबादला की कोशिश करूँ पर तुम्हारे खयाल ने हमेशा मुझे बाँध लिया। ऑफिस में शांति हो जाएगी पर मेरी शामें कितनी वीरान हो जाएगी।.."[1]

कहानी में यत्र तत्र दीपा के विचार मिलते हैं। संजय कहता था कि दफ्तर मे हर वक्त मानसिक संघर्ष और झगड़ा हैं। संजय के मन में कलकत्ता जाकर दीपा के साथ जीवन बिताने की योजना है। दीपा से संजय ने कहा कि इंटरव्यू के लिए जाते वक्तनिशीथ मदद करेगा। आजकल इंटरव्यू एक दिखावा मात्र हैं, किसी जान पहचान वाले से इन्फलून्स डालना चाहिए।

निशीथ के नाम सुनते ही दीपा नफ़रत का भाव लेती हैं। निशीथ की याद से उसे क्रोध, घृणा, आदि आती हैं। अठारह वर्ष की अवस्था में दीपा को निशीथ से प्यार हुआ था। लेकिन उसमें स्थायित्व नहीं था। उसके बाद संजय से उसकी मुलाक़ात हुई थी। निशीथ ने प्रेम को टुकराकर उसका अपमान किया कि दीपा ने विचार किया।दीपा और निशीथ के प्रेम टूटने के बाद संजय से दीपा ने मित्रता स्थापित की। और उसके आलिंगनों चुम्बनों मे अपने को बिखेरने दिया।

इंटरव्यू का पत्र दीपा को मिला।परसों कलकत्ता जाना चाहिए। संजय को दफ़्तर से छुट्टी नहीं मिली। इस कारण से दीपा को अकेली होकर कलकत्ता जाना पड़ा।

रेलगाडी में दीपा कलकत्ता के हावड़ा स्टेशन पहुँच गई, गाड़ी से उतरी तो सहेली इरा से भेंट हुई। टैक्सी में दोनों इरा के घर में पहुँच गई। शाम को इरा और दीपा कॉफी हाउस में कॉफी पी रही थीं तब निशीथ से मुलाकात हुई। दीपा से निशीथ ने बातें की, निशीथ काफी बदल गया था। उसने सिर के बाल बढ़ा दिया था। उसका रंग स्याह हो गया था। वह दुबला भी हो गया है। तीन वर्ष के बाद निशीथ से मिलन हुआ था। दीपा के मन में निशीथ के प्रति प्यार की भावना जाग गयी। दीपा ने विचार किया कि निशीथ के मन मे कोई पीड़ा है। निशीथ ने अब तक कोई विवाह भी नहीं किया है। संजय के बारे मे भी दीपा याद करने लगी।

इंटरव्यू के लिए निशीथ ने अपनी ओर से पूरी

सहायता की। दीपा अपने बारे मे विचार करती हैं —"यह नौकरी मेरे लिए कितनी आवश्यक हैं, मिल जाये तो संजय कितना प्रसन्न होगा, हमारे विवाहित जीवन के आरंभिक दिन कितने सुख मे बीतेंगे।"[2]

कलकत्ता में अगले दिन मे दीपा निशीथ के साथ घूमने गई। लेकिन निशीथ ने काम की बात के अलावा कुछ अन्य बात नहीं कही थी।संजय के बारे में दीपा ने निशीथ से कुछ नहीं कहा।

इंटरव्यू के दिन निशीथ उसके घर में वक्त के पहले आया। इंटरव्यू के वक्त दीपा नर्वस थी, सभी उत्तर उसने नहीं कहा तो भी उसमें आत्माविश्वास था।इंटरव्यू के बाद निशीथ ने कहा कि दीपा को नौकरी के लिए चुना जाना करीब निर्णीत हो चुका है। दीपा ने विचार किया कि यह सब निशीथ की वजह से हुआ है।

इंटरव्यू के बाद दीपा टैक्सी में निशीथ के साथ शहर मे घूमती हैं। कॉफी हाउस में जाती है।शाम को लेक में चली जाती हैं। निशीथ ने पुछा कि नौकरी मिलने के बाद क्या करने का विचार है, तब दीपा ने कुछ नहीं कहा। रात ढ़लने पर दोनों लौटे।

कानपुर लौटने का दिन आया। दीपा रेल गाड़ी मे चढ़ गई। निशीथ रेल्वे स्टेशन आया था। दोनों ने बात की। गाड़ी सरककर जाने लगी तो निशीथ दीपा के हाथ में हाथ रखता है। गाड़ी के छूटते ही निशीथ हाथ छोड़ देता है। आँसू भरी आंखों से दीपा ने रेल गाडी में यात्रा की थी।

घर पहुँचने पर संजय का पत्र देखा। संजय ने लिखा है कि पाँच- छह दिन के लिए वह ऑफिस से बाहर हैं उसके बाद लौट आएगा। दीपा विचार करती हैं इतने दिनों तक संजय को छलती आई; अपने को छलती आई। दीपा निशीथ की याद करती हुई उसको पत्र लिखकर भेजती हैं। लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। तब इरा का तार आया उसमें लिखा था कि नियुक्तिहो गई हैं बधाई"[3], लेकिन दीपा को ज्यादा ख़ुशी नहीं हुई।

आखिर निशीथ का बधाई पत्र आया। शेष फिर, शुभेच्छु। उसने और कुछ नहीं लिखा था।

तब दरवाजे पर संजय आया। रजनी गंधा फूल लेकर मुस्कराता हुआ । दीपा और संजय दोनों आलिंगन करते हैं। बांहों में कसते हैं।दीपा विचार करती हैं कि संजय का प्यार ही सच हैं यथार्थ हैं।—"मुझे लगता हैं यह स्पर्श, यह सुख,यह क्षण,ही सत्य हैं वह सच झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था।"[4] दीपा विचार करती हैं।

प्रस्तुत कहानी का शीर्षक सार्थक हैं। कहानी की भाषा कथानक को आगे बढ़ाने मे सहायक है। कथापात्र की संख्या सीमित होने पर भी सशक्त हैं और कहानी का कथ्य-पक्ष पाठकों को आकर्षित करता है।। अंग्रेजी, संस्कृत शब्द, हिंदी शब्द आदि के प्रयोग से भरपूर हैं प्रस्तुत कहानी। कहानी में दीपा अनेक स्थल पर आत्मकथात्मक शैली में अपने विचार प्रकट कर रही है। संवाद योजना समुचित रूप से हुई हैं जो कथापात्र के भाव प्रकट करने मे सक्षम हैं। पात्र चरित्र चित्रण कहानी के अनुकूल हैं।नारी की विभिन्न समस्याएँ और त्रिकोण प्रेम आदि इस कहानी में अभिव्यक्ति हैं। कहानी के भाव पक्ष और कला पक्ष पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करने मे सक्षम हैं।

सन्दर्भ सूची

1 मन्नू भंडारी - यही सच हैं - मन्नू भंडारी की यादगारी कहानियाँ पृ 73
2 वही पृ-81
3 वही पृ-92
4 वही पृ-94

प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
सरकारी ब्रेन्नेन कॉलेज, तलश्शेरी, , कण्णूर

अनुसूचित जनजाति की साक्षर महिलाओं के माध्यम से सामाजिक सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन पर प्रभाव का एक अध्ययन

डॉ समीर बी वाघरोडिया/ अश्विन कुमार राठवा

सारांशः भारत आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। तब अंदरूनी ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक सशक्तिकरण की जरूरत है । आज समाज में बदलाव लाने का काम ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षित महिलाओं द्वारा शुरू किया जा रहा है । प्रस्तुत शोध यह देखने के उद्देश्य से किया गया है कि महिला शिक्षा के सामाजिक सशक्तिकरण माध्यम से अनुसूचित जनजातियों में किस हद तक सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक सशक्तिकरण हुआ है?

प्रस्तुत अध्ययन में गुजरात के छोटाउदेपुर जिले में महिलाओं की साक्षरता के संबंध में सामाजिक परिवर्तन पर संबंधी अभिप्रायो पर विचार करते हुए विश्लेषण किया गया और उस विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष निकाले गए। प्रस्तुत अध्ययन में यह पता चला कि शिक्षित महिलाएँ समाज में किस हद तक बदलाव ला सकती हैं ।

1. **प्रस्तावना :-**जैसा कि भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की जा रही है, यह माना गया है कि साक्षर महिलाएँ समाज के विभिन्न क्षेत्रों में बदलाव ला सकती हैं और महिलाएँ कई क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन लाने में बहुत बड़ा योगदान दे सकती हैं। लेकिन क्या आदिवासी इलाकों में साक्षर महिलाएँ वास्तव में सामाजिक बदलाव लाने में सक्षम हैं?

   यह देखना बाकी है कि क्या समाज के विभिन्न आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में महिलाओं के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन हुआ है। वर्तमान अध्ययन यह पता लगाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया है।

2. **समस्या का कथनः** अनुसूचित जनजाति की साक्षर महिलाओं के माध्यम से सामाजिक सशक्तिकरण और परिवर्तन पर प्रभाव का एक अध्ययन।

3. **मुख्य शब्दः** साक्षर महिला, सामाजिक सशक्तिकरण , सामाजिक परिवर्तन

4. **अध्ययन के उद्देश्यः-** प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं

1. अनुसूचित जनजातियों की साक्षर महिलाओं के माध्यम से सामाजिक सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन पर प्रबुद्ध नागरिकों के अभिप्रायों का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जनजातियों की साक्षर महिलाओं के सामाजिक क्षेत्रों में परिवर्तन का अध्ययन करना

5. **शोध प्रश्नः-** प्रस्तुत अध्ययन के प्रश्न इस प्रकार हैं

1. अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के साक्षर होने से सामाजिक परिवर्तन पर क्या कोई प्रभाव पड़ता है?
2. अनुसूचित जनजाति की साक्षर महिलाएँ समाज के विभिन्न क्षेत्रों में क्या आमूल परिवर्तन ला सकी हैं?

6. **व्याप विश्व :-**व्याप विश्व में गुजरात के छोटा उदयपुर जिले के प्रबुद्ध नागरिको को शामिल किया था ।

7. **नमूने का चयनः** प्रस्तुत अध्ययन में छोटाउदेपुर जिले के 6 तहसील में से प्रत्येक तहसील से 24 प्रबुद्ध नागरिकों को यादृच्छिक रूप से चुना गया, कुल 144 प्रबुद्ध नागरिक यादृच्छिक रूप से नमूने के रूप में चुने गये।

8. **अनुसंधान पद्धतिः** प्रस्तुत शोध में अनुसूचित जनजाति की साक्षर महिलाओं से सामाजिक क्षेत्रों में हो रहे बदलावों की जानकारी प्राप्त करने के लिए सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया।

9. **अनुसंधान उपकरण की रचनाः** अनुसूचित जनजाति की साक्षर महिलाओं से सामाजिक क्षेत्रों में परिवर्तन के संबंध में पांच विभागों में अभिप्रायवली के विधानों को विभाजित किया गया था। 26 विधानों को विशेषज्ञों द्वारा सत्यापित किया गया। विशेषज्ञों द्वारा 23 विधानों का चयन किया गया। इन 23 अभिप्राय के जनमत सर्वेक्षण का परीक्षण गांधीनगर तहसील के 20 प्रबुद्ध नागरिकों पर किया गया और संशोधन जोड़े गए और 23 विधानों में से 21 विधानों का चयन किया गया। इस प्रकार प्रस्तुत शोध के लिए माहिती एकत्रीकरण करने के लिए एक संरचित अभिप्रायवली का उपयोग किया गया था।

10. सीमाः-प्रस्तुत अध्ययन की सीमाएँ इस प्रकार हैं।

1. प्रस्तुत अध्ययन में साक्षर महिलाओं से सामाजिक क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों के संबंध में प्रबुद्ध नागरिकों के विचार लिये गये हैं।
2. सामाजिक क्षेत्रों में परिवर्तन के संबंध में राय पांच विभागों में सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण स्वयं रचित है।

11. माहिती एकत्रीकरण की प्रविधि।ः- शोध का अध्ययन करने के लिए स्वरचित अभिप्रायवली के माध्यम से माहिती संग्रह किया गया था ।

12. **माहिती एकत्रीकरणः-** प्रस्तुत अध्ययन अनुसूचित जनजाति की साक्षर महिलाओं के कारण सामाजिक क्षेत्रों में बदलाव के बारे में है, इस लिए छोटा उदेपुर जिले के 200 प्रबुद्ध नागरिकों को एक गूगल फार्म भेजा गया था, जिसमें से 188 प्रबुद्ध नागरिकों ने गूगल फॉर्म के माध्यम से अपनी राय दी। जिसमें से 144 मतों से जानकारी एकत्रित की गई।

13. **माहिती विश्लेषण अर्थघटन :** माहिती एकत्रीकरण के बाद शोध प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए 144 प्रबुद्ध नागरिकों के अभिप्रायो का विश्लेषण किया गया। शतमानअंक शास्त्रीय प्रविधि का उपयोग करके विश्लेषण किया गया। माहिती के विश्लेषण के आधार पर अर्थ घटन किया गया। विवरण-तालिका यहाँ स्थानभाव के कारण नहीं दी गई है।

14. **अध्ययन के निष्कर्ष-** प्रस्तुत अध्ययन में प्रबुद्ध नागरिकों द्वारा दी गई राय से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गये हैं।

1. महिला शिक्षा के माध्यम से सामाजिक विवाह प्रथा में कम उम्र में विवाह में कमी देखी गई है लेकिन तलाक की दर में वृद्धि देखी गई है।
2. खण्डीय परिवार का अनुपात संयुक्तपरिवार की तुलना में अधिक है
3. पहले के समय की तुलना में नशे की मात्रा में कमी आई है
4. संस्कृति के संरक्षण और विकास की दर में भी कमी आई है।
5. अधिकतर पढ़ी-लिखी महिलाएं रूढ़िवादी सोच या पारंपरिक ढांचे में रहना पसंद नहीं करतीं।

6. सामाजिक मूल्यों, पारिवारिक मूल्यों और पारिवारिक समस्याओं के समाधान में महिलाओं की अहम भूमिका होती है।

7. शिक्षा के माध्यम से सामाजिक जागरूकता, स्वास्थ्य क्षेत्र के प्रति जागरूकता काफी हद तक देखी जा रही है जिससे समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक बदलाव आ रहे हैं।

8. महिला शिक्षा का प्रचलन बढ़ने से महिलाएँ वास्तव में आर्थिक रूप से सशक्तहुई हैं, समाज में सकारात्मक रुझान के साथ-साथ समतावादी रुझान और समाज का समग्र विकास देखने को मिल रहा है।

9. सामाजिक संगठनों के साथ-साथ नेतृत्व पहल में प्रमुख स्थान के कारण, महिलाओं द्वारा सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए नेतृत्व पहल करने की अधिक संभावना है।

15. **निर्देश :-** दिए गए निष्कर्षों को ध्यान में रखते हुए, हम सरकार को निम्नलिखित सुझाव देते हैं।

1. सरकार को सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक मूल्यों को नुकसान पहुँचाए बिना सामाजिक परिवर्तन पर ध्यान देना चाहिए

2. सरकार को इस तरह से शिक्षा प्रदान करनी चाहिए जिससे भारतीय संस्कृति को संरक्षित किया जा सके और भारतीय संस्कृति के संदर्भ में सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन लाया जा सके जिसके लिए सरकार को भारतीय संस्कृति के संदर्भ में पाठ्यक्रम बनाना चाहिए।

सन्दर्भ साहित्य

Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Retrieved from https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English.pdf

उचाट, डी. ए. और सहकर्मी 'अनुसंधान के संदोहन' राजकोटः शिक्षा शास्त्री भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय

देसाई, एच.जी. और देसाई, के.जी. (1973) 'अनुसंधान पद्धति और प्रविधियां ' अहमदाबादः विश्वविद्यालय ग्रंथ सूची बोर्ड, गुजरात राज्य

डेव, एच.एच. (2016) 'सामाजिक समस्याएँ' अहमदाबादः विश्वविद्यालय ग्रंथ निर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य

श्रीनिवास एम.एन. 'आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन' अहमदाबादः विश्वविद्यालय ग्रंथ निर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य

डॉ. समीर बी वाघरोडिया
मददनिश अध्यापक,
एम.बी.पटेल कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
सरदार पटेल विश्वविद्यालय,वल्लभ विद्यानगर,
आणंद, गुजरात

श्री अश्विन कुमार राठवा
मददनिश अध्यापक,
एम.बी.पटेल कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
सरदार पटेल विश्वविद्यालय,वल्लभ विद्यानगर,
आणंद, गुजरात

जनचेतना के कवि मंगलेश डबराल

रम्या एल

जनचेतना हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण आन्दोलन है। जिसकी शुरुआत 1960- 70 दशक में हुई थी। कवि मंगलेश डबराल हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि एवं आलोचक थे, जिन्होंने जनचेतना भरी कवितायें लिखीं। जनचेतना आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य समाज में जागरूकता और चेतना पैदा करना था। कवि मंगलेश डबराल अपनी कविताओं के द्वारा समाज में व्याप्त गरीबी, शोषण, भ्रष्टाचार जैसे सामाजिक अन्याय को पोंछ डालना चाहता था। सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर परिवर्तन लाना वह चाहता था। उनकी भाषा सरल और स्पष्ट हैं। व्यंग्य और आलोचना उनकी कविताओं की मुख्य विशेषताएँ हैं। उन्होंने समाज की वास्तविकताओं को उजागर करने का प्रयास किया है।

कवि मंगलेश डबराल की कवितायें मूल्तः जनवादी कविताएँ हैं। बेरोज़गारी, बढ़ती हुई महँगाई, भ्रष्टाचार, पारिवारिक विघटन, आतंकवाद, सांप्रदायिकता, बदलते धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्य सभी पर गहरी संशक्तिसे जुड़कर कवि ने काव्य रचना की है। कवि मंगलेश डबराल कहते है कि क्रांति और सुधार हमारे जीवन का हिस्सा है। हमारे मौजूदा संस्था और व्यवस्था को बदलना चाहते तो वहाँ क्रांति के ज़रिए ही सुधार संभव है। राजनैतिक क्षेत्र के कानून और नीतियों में हुए अनीतियों को पूर्ण रूप में पोंछना असंभव है। लेकिन सभी नागरिकों के लिए निष्पक्ष और समान व्यवहार सुनिश्चित करना हमारे कानून का दायित्व है। कवि अपने काव्यसंग्रह 'आवाज भी एक जगह है' में खोखले राजनीति पर व्यंग्य करता है। उनकी कविता 'पागलों का एक वर्णन' के ज़रिए कवि कहते हैं कि हमारे प्रजातंत्र और जीने की स्थिति से साधारण जनता के दिमाग उड़ गया है। इस दुनिया में व्याप्त अत्याचारों को झेलते-सहते कुछ पागल बन जाते हैं। जनता के मन में चोट उत्पन्न होने पर उनमें चेतना का विकार उत्पन्न होता है। कवि मंगलेश डबराल की पंक्तियाँ इसकी व्याख्या देती हैं।

"पागल होने का कोई नियम नही है/इसलिए तमाम पागल अपने अद्वितीय तरीके से पागल होते हैं/स्वभाव में एक-दूसरे से अलग/व्यवहार में अक्सर एक-दूसरे से विपरीत" ('पागलों का एक वर्णन - 'आवाज़ भी एक जगह है' पृ सं 21)

भारतीय स्वतंत्रता के बाद की स्थिति, गरीबी और आर्थिक असमानता आदि पर उनकी कवितायें प्रश्न उठाती हैं। सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता पर उनकी कवितायें बल देती हैं। सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, शिक्षा और जागरूकता, पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, महिला अधिकार और लिंग समानता, दलित और वंचित वर्गों के अधिकार आदि पर उनकी कवितायें बल देती है। उनकी कविता में विद्रोह, आक्रोश और व्यंग्य का समन्वय देख सकते हैं। इंसानियत, दया आदि मनुष्य जाति का गुण है। मानवता के प्रति समर्पित होकर नैतिक मूल्यों की रक्षा करने का संदेश उनकी कवितायें देती हैं। कवि ने अपनी कविता 'मरणोपरांत कवि' कविता में इस वक्त के सामाजिक संवेदनशून्यता का सही दस्तावेज किया हैं।

'ज़रा सा लिखने से फैल जाती थी/एक बडी -सी बेचैनी।/और बाद में हमारे संवेदनशून्य समाज ने/इस पर गौर करना ही कर दिया बंद।" (मरणोपरांन्त कवि, 'आवाज भी एक जागह है, पृ.स-36)

कवि मंगलेश डबराल की कविता 'गाता हुआ लड़का' में बच्चों की बेबसी का चित्रण है। कवि की राय में बच्चों का काम पर जाना बहुत भयानक दृश्य हैं। आज भी जगह-जगह पर बच्चों को काम पर जाते हुए दिखाई पड़ता है। दुकानों में, घर के बाहर साफ-सफाई करते हुए, कूडा बीनते और बोझ ढोते हुए, ढाबे पर खाना पकाते, अन्य गृहों में नौकर के रूप में बच्चों को दिखाई पड़ता है। गाडी में उतार-चढ़ाकर वह बच्चे अपनी जीविका चलाने के लिए गाना गाते पैसा कमाते है। पारिवारिक विवशताएँ और आर्थिक असुरक्षता उनको काम करने के लिए मज़बूर करती है। कवि का कहना है कि हमारे समाज और परिवार बालश्रम के खतरों को नहीं समझता है। बचपन में उनको

खेलने -कूदने, पढ़ने- लिखने का अवसर प्राप्त होना चाहिए। इसके अभाव में उनको अपना बचपन नष्ट हो जाएगा। बालश्रम बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास को बाधित करता है। हमारी नीति -व्यवस्था की प्रगति पर ध्यान नही देती है। इसलिए संसार में आज भी करोडों बच्चे बालश्रम में लिप्त हैं। इसके खिलाफ लड़ाई करना अनिवार्य है जिससे वास्तविक और यथार्थ प्रगति संभव है। इस विषय पर जनता को चेतना दिलाते हुए कवि की पंक्तियाँ हैं: 'दिल्ली में वह एक उमस का दिन था/बारह -तेरह बरस का लड़का /भीड़ भरी बस में गाता था एक खुशी का मीठा गाना/गले में नन्हा हारमोणियम लटकाये/उसकी चारेक बरस की बहन मांगती थी पैसा" ('गाता हुआ लड़का"- 'आवाज़ भी एक जगह है'- पृ.स. 60)

कवि मंगलेश डबराल की कवितायें हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उत्तर आधुनिकता की गूँज हर एक पंक्तियों में स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ती है। संवेदनशील और सामयिक स्थिति से आंदोलित होकर उन्होंने काव्य रचना की है। समस्याओं के उद्घाटन के साथ उनके निराकरण के संकेत भी देकर पाठकों को विचार मंथन के लिए प्रवृत्त करते हैं। उनकी कविताओं की वैचारिक उर्जा और संप्रेषण शक्ति पाठकों को प्रभावित करते है। कवि कहते हैं कि एकता की शक्ति सबसे श्रेष्ठ है। जीवन के पथ पर हमें कई समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। वहाँ निडर होकर एकता से जुड़कर चिंतन करना चाहिए और आगे बढ़ना चाहिए। वहाँ सभी मुश्किलें आसान हो जाए। श्री मंगलेश डबराल की कविता 'रेल में सात कवितायें' इस असलियत से हमें अवगत करवाती है- "एकाएक आसमान में/एक तारा दिखाई देता है/हम दोनों साथ -साथ/जा रहे है अंधेरे में/वह तारा और मैं" (पहाड़ पर लालेटन, पृ.58)

कवि कहते है कि अपने वातावरण के प्रभाव से जनता में नैतिकता, औचित्य और व्यवहार कुशल उत्पन्न होते हैं। जनता में चिंतन और चेतना के विकास में सामाजिक वातावरण का योग है। चेतन भरी जनता सतर्क रहते है साथ ही अपने स्थान और समय के प्रति उन्मुख रहते है। कवि का कहना है कि जनता को अपने आसपास में घटित होनेवाली क्रियाओं के उचित प्रतिक्रिया देने में सक्षम होना चाहिए। जब परिवर्तन पर्याप्त रूप में बढ़ नहीं रहे है तो वहाँ सुधार क्रांति का उत्प्रेरक बन जाता है। क्रांति का लक्ष्य यथास्थिति में चरम या पूर्ण रूप में परिवर्तन लाना है। कवि कहते हैं कि आज के युवावर्ग बेवकूफ नही है। उनमें नये युग की प्रतीक्षा है। मंगल कामनाओं की पूर्ती करने की इच्छा है। वे अपनी इच्छाओं और प्रतीक्षाओं का विघटन करनेवालों पर पूरी ताकत के साथ विद्रोह करते है। कवि मंगलेश डबराल की कविता 'खिडकी' आम जनता के सपनों को खत्म करनेवाले लोगों की और आक्रोश दिलाती हैं :-"घरों की खिड़कियाँ खुल रही हैं। आँखों की तरह/मुझे यह खिड़की खोलनी चाहिए/जो तमाम खिड़कियों के/खुलने की शुरुआत हैं। ('खिडकी', पहाड़ पर लालटेन पृ.सं. 72)

कवि मंगलेश डबराल कहते हैं कि आज के ज़माने में भ्रष्टाचार, चोरबाज़ारी तथा अन्य अनैतिक कार्यों में वृद्धि होती है। हम खतरनाक समय में प्रवेश कर रहे है। पुराने और आज के ज़माने में गंभीर अंतर है। वैश्वीकरण की गतिशीलता के कारण बड़े पैमाने पर संघर्ष होते रहते है। उन्नत तकनीक की सहायता से परमाणु हथियार जैसे युद्ध सामग्री का उत्पादन बढ़ रहा है। भूमण्डलीकरण से विकृत समाज की दस्तावेज है युद्ध। कवि मंगलेश डबराल की कविता 'सफेद दीवार' युद्ध के भीषण परिणाम और इससे तड़पते असहाय साधारण जनता की विह्वलताओं का पर्दाफाश किया है: "एक लड़की अपनी सबसे बड़ी इच्छा/यहाँ उकेर सकती है/यहाँ भूखे बच्चों की तस्वीर लगायी जा सकती है/गोलियों के निशान बनाये जा सकते है" (घर का रास्ता, सफेद दीवार पृ. 52)।

जनचेतना आन्दोलन ने हिन्दी साहित्य में एक नए युग की शुरुआत की। समाज में जागरूकता और परिवर्तन की दिशा में कवि मंगलेश डबराल की कविता महत्वपूर्ण योगदान देती है। जनचेतना भरी उनकी कवितायें आज भी प्रासंगिक हैं।

शोध छात्रा
एस.एन. कॉलेज
कोल्लम

समकालीन स्त्री कविता में नारी विमर्श : भाषा, अस्मिता और प्रतिरोध

डॉ नवीना जे नरितूक्किल / वीणा के नंपियार

मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का सर्वाधिक जीवंत माध्यम लेखन है। लेखन केवल विचारों की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि अनुभवों, संवेदनाओं और सामाजिक यथार्थ को शब्द देने की सृजनात्मक प्रक्रिया है। यदि पुरु ष साहित्य के निर्माण को अपनी जीविका, प्रतिष्ठा और आत्म-अभिव्यक्ति का साधन बना सकता है, तो स्त्री के लिए यह कार्य संकोच, संदेह और सामाजिक प्रश्नों का कारण क्यों बने यह एक गंभीर विमर्श का विषय है। यह प्रश्न केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक संरचनाओं से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। ऐतिहासिक रूप से स्त्री को घरेलू दायरे, मर्यादा और मौन में बाँधकर रखने की मानसिकता ने उसके रचनात्मक आत्मविश्वास को बार-बार चुनौती दी है। इसके बावजूद आज यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि साहित्य के क्षेत्र में केवल पुरु ष ही नहीं, बल्कि स्त्री रचनाकार भी अपनी विशिष्ट संवेदनात्मक शैली, भाषा और दृष्टि के माध्यम से प्रभावी रचनाएँ प्रस्तुत कर रही हैं। उनकी लेखनी ने साहित्य को नए अनुभव, नई चेतना और नई भाषा प्रदान की है, जिससे हिंदी साहित्य अधिक व्यापक और समावेशी बना है।

साहित्य समाज की चेतना का प्रतिबिंब है। समाज में घटित होने वाली घटनाएँ, मूल्य, संघर्ष, असमानताएँ और परिवर्तन साहित्य में किसी न किसी रूप में अभिव्यक्त होते हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो स्त्री लेखन समाज के उस पक्ष को सामने लाता है, जो लंबे समय तक उपेक्षित रहा। स्त्री दुर्बल नहीं है; वह अपने जीवन के सत्य को अभिव्यक्त करना चाहती है, जिसे उसने स्वयं भोगा है। उसके अनुभव केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक और सामाजिक भी हैं। स्त्री रचनाकारों के लेखन का प्रमुख आधार आत्मानुभूति और आत्मकथात्मक तत्व हैं, जिनके माध्यम से वे अपने जीवन-संघर्षों, पीड़ाओं, आकांक्षाओं और प्रतिरोध को स्वर देती हैं। यही कारण है कि उनका लेखन अधिक प्रामाणिक, संवेदनशील और यथार्थपरक बनता है। साहित्य में स्त्रीवादी लेखन को समझने के लिए स्त्री रचनाकारों की कृतियों का अध्ययन आवश्यक है, क्योंकि उनके अनुभव, दृष्टिकोण और संवेदना पुरु ष लेखन से भिन्न और विशिष्ट हैं। लेखन में स्त्रियों की भागीदारी ने हिंदी साहित्य को वैचारिक रूप से अधिक सशक्त बनाया है और उसकी अभिव्यक्ति की सीमाओं का विस्तार किया है।

आज साहित्यिक भाषा के निखरते और परिवर्तित रू प में महिला लेखन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। समकालीन महिला लेखन का मूल आधार स्त्री जीवन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है, जो उसकी कलात्मकता और गहराई को उजागर करता है। यह लेखन केवल बाह्य घटनाओं या सामाजिक स्थितियों का वर्णन नहीं करता, बल्कि स्त्री के अंतर्मन, उसकी मानसिक संरचना, उसकी इच्छाओं, पीड़ाओं, भय और द्वंद्वों को भी अभिव्यक्त करता है। स्त्री विमर्श समकालीन साहित्यिक विमर्शों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि यह सत्ता, भाषा, संस्कृति और पहचान जैसे प्रश्नों से जुड़ा हुआ है। समकालीन हिंदी कविता में कवयित्रियाँ ऐसे प्रश्न उठा रही हैं, जो लिंग-केन्द्रित भाषा से संबंधित हैं और साहित्यिक अभिव्यक्तिके स्थापित ढाँचों को चुनौती देते हैं। इस प्रक्रिया में वे नई भाषा, नए प्रतीक और नए शिल्प की खोज करती हैं।

हिंदी साहित्य का इतिहास मुख्यत? पुल्लिंग-केन्द्रित भाषा और दृष्टिकोण का इतिहास रहा है। साहित्यिक भाषा की संरचना, उसके प्रतीक, मुहावरे और लोकोक्तियाँ लंबे समय तक पुरुष अनुभवों और पुरु ष सत्ता के इर्द-गिर्द निर्मित रही हैं। जिन क्षेत्रों में स्त्रियाँ कार्य करती हैं, वहाँ उन्हें इस लिंग-केन्द्रित भाषा के दुष्प्रभावों का सामना करना पड़ता है। एक स्त्री कवि जिस काव्य भाषा का प्रयोग करती है, वह प्रायः पहले से निर्मित पुरु ष-केन्द्रित भाषा होती है। यह भाषा लचीली और व्यापक तो है, किंतु स्त्री की

अस्मिता, बेचैनी, संघर्ष और समस्याओं की पूर्ण अभिव्यक्ति में सक्षम नहीं है। स्त्री कवियों को यह अनुभव होता है कि अब तक प्रचलित काव्य भाषा के माध्यम से उनकी अनुभूतियों का संपूर्ण चित्रण संभव नहीं है। इसी कारण वे भाषा के नए रूप, नए प्रयोग और नई संरचना की तलाश करती हैं, ताकि उनकी अनुभूति पूरी तरह अभिव्यक्त हो सके।स्त्री कविता को यह भय भी रहता है कि मर्दवादी पाठकों और आलोचकों द्वारा उसकी रचनात्मकता और स्त्री अस्तित्व पर आघात पहुँचाया जाएगा। आलोचना, उपेक्षा, उपहास और नैतिक प्रश्नों के माध्यम से स्त्री लेखन को अक्सर हाशिये पर धकेलने का प्रयास किया गया है। इसलिए स्त्री कवि ऐसी काव्य भाषा का सृजन करती है, जो पुरु ष-केन्द्रित साहित्यिक एवं सामाजिक व्यवस्था द्वारा विखंडित न हो। यह भाषा प्रतिरोध, मौन और संकेतों के माध्यम से अपनी बात कहती है और स्त्री अनुभव को सुरक्षित रखने का प्रयास करती है।

इक्कीसवीं सदी की कवयित्रियों की कविताओं में आत्मसम्मान, समान अधिकार, स्वतंत्रता और अस्मिता के लिए संघर्षशील स्त्री का स्पष्ट चित्रण मिलता है। यह स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सजग है और सामाजिक अन्याय को चुपचाप स्वीकार करने के बजाय उसका प्रतिरोध करती है। निर्मला पुतुल, तेजी ग्रोवर, अनामिका, सविता सिंह, कात्यायनी, ममता कालिया, सुधा अरोड़ा, गगन गिल, निर्मला गर्ग आदि कवयित्रियों ने इस क्षेत्र में विशेष योगदान दिया है। यद्यपि हिंदी में कवियों की तुलना में कवयित्रियों की संख्या अभी भी कम है, फिर भी उनके लेखन में पुरुष-नियंत्रित मौन को तोड़ने के प्रयास स्पष्ट रू प से दिखाई देते हैं। उनका लेखन स्त्री अनुभवों को केंद्र में लाकर साहित्य को नई दिशा देता है।

कवयित्रियों के लिए लेखन विलास या टूटे हुए दिल का रुदन मात्र नहीं है, बल्कि यह उनके संपूर्ण अस्तित्व की अभिव्यक्ति है। जब एक स्त्री लिखती है, तो वह केवल अपने लिए नहीं, बल्कि अनेक स्त्रियों की भावनाओं, परिस्थितियों, पीड़ाओं और सच्चाइयों को स्वर देती है। ये वे अनुभव हैं, जिन्हें पितृसत्तात्मक समाज न देखना चाहता है, न समझना। इस प्रकार स्त्री लेखन व्यक्तिगत से सामूहिक चेतना की ओर अग्रसर होता है और सामाजिक बदलाव की संभावना को जन्म देता है।प्रखर स्त्रीवादी आलोचक सविता सिंह के संपादन में प्रकाशित कविता-संग्रह प्रतिरोध का स्त्री स्वर में बीस कवयित्रियों की कविताएँ संकलित हैं। इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ प्रतिरोध से ओत-प्रोत हैं। ये कविताएँ यह स्पष्ट करती हैं कि प्रतिरोध के लिए चीखना या आक्रामक होना आवश्यक नहीं; मौन, धैर्य और आत्मसंयम भी प्रतिरोध के सशक्त रूप हो सकते हैं। यह मौन व्यवस्था के विरु द्ध एक गहन और प्रभावी प्रतिवाद प्रस्तुत करता है, जो पाठक को भीतर तक झकझोर देता है।

इक्कीसवीं सदी की कवयित्रियों में अनामिका का स्थान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने कविता को हथियार के रू प में प्रयोग करते हुए नारी संवेदनाओं, अनुभवों और संघर्षों को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया है। उन्होंने नारी के प्रति प्रयुक्त भाषा का मानवीकरण किया है और इस बात पर बल दिया है कि भाषा में प्रयुक्त मुहावरों और लोकोक्तियों में भी परिवर्तन आवश्यक है। उनकी कविता बेजगह की ये पंक्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं - "अपनी जगह से गिरकर/कहीं के नहीं रहते/केश, औरतें और नाखून/अन्वय करने थे किसी श्लोक का/ ऐसे हमारे संस्कृत टीचर"

इन पंक्तियों के माध्यम से अनामिका यह स्पष्ट करती हैं कि परंपरागत रूप से केश, नाखून और औरत तीनों को एक ही दृष्टि से देखा गया है और इसी मानसिकता के आधार पर स्त्रियों को नियंत्रित और प्रताड़ित किया गया है। यह स्थिति युगों से चली आ रही है और सामाजिक चेतना में गहराई तक पैठी हुई है।

अनामिका के कृतित्व में स्त्री जीवन की प्राकृतिक, सहज और यथार्थवादी झलक मिलती है। वे मानती हैं कि अन्याय का प्रतिकार अन्याय नहीं होता। स्त्री आंदोलन की समर्थक स्त्रियाँ पुरु ष नहीं बनना चाहतीं, बल्कि समान अधिकार और समान अवसर चाहती हैं। वे पुरुषार्थ का विरोध नहीं करतीं, बल्कि पुरु षवादी मानसिकता और सत्ता संरचना का विरोध करती हैं। 'स्त्रियाँ' कविता में वे कहती हैं- "सुना गया हमको/यों ही उड़ते मन से/जैसे सुने जाते हैं फिल्मी गाने/सस्ते कैसेटों पर/ठसाठस भरी बस में"

जब स्त्री अपने अधिकारों की मांग करती है, तो उसकी भाषा में आक्रोश और विद्रोह का स्वर स्वाभाविक रूप से प्रकट होता है- "एक दिन हमने कहा/हम भी इंसान हैं/हमें कायदे से पढ़ो/एक-एक अक्षर/जैसे पढ़ा होगा/बी.ए. के बाद/नौकरी का पहला विज्ञापन"

स्त्री अस्मिता की प्रमुख प्रवक्ता कात्यायनी के अनुसार, स्त्री अपने लिए स्थान खोजती है और न मिलने पर उसे स्वयं रचने का प्रयास करती है। उनकी कविता भाषा में छिप जाना स्त्री का भाषा की लिंग-केन्द्रिकता पर गंभीर प्रश्न उठाती है- "न जाने क्या सूझा/एक दिन स्त्री को/खेल-खेल में भागती हुई/भाषा में समा गई/छिपकर बैठ गई"

यह कविता उन लोगों पर तीखा व्यंग्य करती है, जो स्त्री लेखन को चूल्हा-चौका और घरेलू अनुभवों तक सीमित मानते हैं। कात्यायनी पुरु ष-केन्द्रित भाषा को चुनौती देती हैं, क्योंकि उनके अनुसार भाषा की संरचना बदले बिना स्त्री को वास्तविक अर्थों में वाणी नहीं मिल सकती।

गगन गिल की कविता कविगण लड़कियों की कविताओं से डरते हैं समाज की मानसिकता पर तीखा प्रहार करती है - "कविगण लड़कियों की कविताओं से डरते हैं/उनकी कविताओं में तो बस/थोड़ी-सी वे खुद होती हैं/थोड़ी-सी उनकी चाह"

नीलेश रघुवंशी की कविता 'स्त्री विमर्श' में स्त्रीमुक्तिकी तीव्र आकांक्षा व्यक्तहोती है - "मिल जानी चाहिए अब मुक्तिस्त्री को/आखिर कब तक विमर्श में रहेंगी मुक्ति?"

आज साहित्य में सहानुभूति नहीं, बल्कि स्वानुभूति की आवश्यकता है। स्त्री कवयित्रियाँ केवल शोषण और पीड़ा का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि विद्रोह, चेतना और मुक्तिकी कामना भी व्यक्तकरती हैं। स्त्री की पहचान और स्वतंत्र अस्तित्व की स्थापना ही स्त्री कविता का मुख्य उद्देश्य है, जो उसे समकालीन साहित्य में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

निष्कर्ष : इक्कीसवीं सदी की स्त्री कवयित्रियों की कविताओं में अनुभूत सत्य, आत्मान्वेषण और व्यक्तित्व की खोज स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनकी कविताएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की सशक्तआवाज़ भी हैं। ये कविताएँ पाठक को सोचने, प्रश्न करने और स्थापित पितृसत्तात्मक मान्यताओं पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं। इस प्रकार स्त्री कविता समकालीन हिंदी साहित्य को न केवल समृद्ध करती है, बल्कि उसे अधिक मानवीय, लोकतांत्रिक और संवेदनशील भी बनाती है।

संदर्भ

1. अनामिका - स्त्रियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
2. कात्यायनी-भाषा में छिप जाना स्त्री का, किताबघर प्रकाशन
3. गगन गिल-एक दिन लौटेंगी लड़कियाँ, राजकमल प्रकाशन
4. निर्मला पुतुल - अपने घर की तलाश में

शोध निर्देशिका - **डॉ नवीना जे नरितूक्किल**
सहायक आचार्य
बी सी एम कॉलेज
कोट्टयम

शोध छात्रा
हिंदी विभाग
सेंट थॉमस कॉलेज
पाला, कोट्टयम

शिवानी की कहानियों में स्त्रियोचित संवेदना

अच्युत शुक्ला

सन् 2023 में हिंदी साहित्य की जानी मानी स्त्री कथाकारों में से एक गौरा पंत 'शिवानी' के जन्म के शत वर्ष (जन्म 1923 ई. में) पूर्ण हो जायेंगें एवं उनकी पुण्यतिथि के बीस वर्ष (देहावसान 2003 ई. में) सम्पूर्ण होंगे। स्त्री संवेदनाओं, उनके मनोभावों का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंकन उनकी कहानियों और उपन्यासों में मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनको यह रचना वैविध्य उनकी यायावरी प्रवृत्ति के कारण मिला हो। सुदूर उत्तर में पहाड़ी से उनके पूर्वजों का जुड़ाव, पश्चिम में गुजरात में जन्म, पूर्व में शांतिनिकेतन में शिक्षा- उनका जीवनगत फैलाव उनकी रचनाओं में भी बड़ा साफ झलकता है। यहाँ तक कि कुछ वर्ष वे विदेश में भी रहीं।

उनकी बेबाक किस्सागोई उनके लेखन में चार चाँद लगाती है। उनके कहानी कहने के ढंग में एक सहज आकर्षण है जो अन्त तक पाठक को बाँधे रखता है। एकदम स्पष्ट लहजा, भावनाओं को अपनी सम्पूर्णता में सहेजे हुए, संवेदनाओं को परिपक्वता के साथ उकेरते हुए उनकी कहानियों में प्रकट हुआ है। साथ ही साथ एक और चीज़ जो उनकी अधिकांश कहानियों में मिलती है वह है- आंचलिक विशेषता, विशेषतः कुमाउँनी अंचल। पहाड़ो से उनका निस्वार्थ लगाव उनके किस्सागोई का सहज अंग बन गया है। पात्र भी वहीं के हैं, पात्रानुकूल भाषा भी वहीं की है। कहानियों के साथ-साथ उन्होंने उपन्यास, संस्मरण, रेखाचित्र, बाल साहित्य, यात्रावृत्त तथा आत्मकथा- सुनहुं तात यह अकथ कहानी भी लिखे हैं।

उनके किस्सागोई के सहज आकर्षण से मंत्रबिद्ध होकर डॉ. अमिता श्रीवास्तव शिवानी स्मृति विशेषांक में लिखती हैं कि- "शिवानी हिन्दी की उन बड़ी कथाकारों में से है जिन्होंने अपने पात्रों को बड़ी ममता और संवेदना से रचा है और उन्हे करुणा का ऐसा अक्षय कोष सौंप दिया है कि वे हमें बार-बार मानवीय करुणा और विडम्बना को डबडबाई आँख के सामने ला खड़ा करते हैं। उनके पात्र अपनी संवेदना की अजस्र धारा में बहा ले जाते हैं कि उनका कोई भी उपन्यास एक बार शुरु कर देने के बीच में कहीं छोड़ देना असंभव है। हम मानो करुण नियति झेल रहे उनके पात्रों के साथ-साथ ही थपेड़े खाते हुए कथा के अंत तक पहुँचने के लिए विकल हो उठते हें। यही शिवानी के कथा साहित्य का जादुई सम्मोहन है, जो पाठकों की विभिन्न संवेदनाओं के द्वारा इस कदर बाँध लेता है कि शिवानी के उपन्यास पढ़ लेने के बाद बार-बार उनके अन्य उपन्यास तलाशने में जुट जाते हैं।"[1]

'लाल हवेली' कहानी उनकी सुप्रसिद्धि का आधार बिन्दु है। इस कहानी में सांप्रदायिक बंटवारे की ज्वाला में सुधा से ताहिरा में परिवर्तित हुई नायिका के मानसिक अंतर्द्वन्द्व को बेहद बखूबी से उकेरा गया है। हिन्दुस्तान में शादी में अपने पड़ोसी देश से शादी में सम्मिलित होने आयी ताहिरा संयोगवश उसी शहर में आती है जहाँ वह सोलह वर्षीय हिन्दू नवयुवती सुधा के रुप में ब्याहकर पहले-पहल आयी होती है। उसके अंतर्मन का द्वन्द्व तब और गहराता है जब उसे यह पता चलता है कि उसका पूर्व पति अभी भी वैरागी जीवन व्यतीत कर रहा है। शिवानी जी के कथासूत्र का आकर्षण पाठकों के मन में निरन्तर आगे घटित होने वाली घटनाओं को जानने का कौतूहल करता रहता है। सामने लाल हवेली के परिदृश्य को देखकर ताहिरा बीती स्मृतियों को याद करती है:- "इतने साल गुजर गए, फिर भी उनकी एक-एक आदत उसे दो के पहाड़े की तरह जुबानी याद थी। सुधा, सुधा कहाँ है तू? उसका हृदय स्वयं धिक्कार उठा, तूने अपना गला क्यों नहीं.....''[2]

'नथ' कहानी स्त्री के सर्वस्व समर्पण और बलिदान की कहानी है। अपनी कहानी में शिवानी द्वारा पुट्टी के हर सूक्ष्म व्यक्तित्व का अंकन किया है- "उसके गालों की उठी मंगोल हड्डियों के बीच गुलाबी रस का सागर छलक उठा।"[3]

या फिर "स्वास्थ्य से दमकते लाल चेहरे पर उसकी तीखी नाक और बड़ी-बड़ी आँखें लामा कन्याओं की भाँति चपटी और छोटी नहीं थी।"[4]

कहानी सहज, स्वाभाविक और पवित्र प्रेम की गाथा है। हिन्दी कहानी साहित्य में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी कृत 'उसने कहा था' (1915), फणीश्वरनाथ रेणु की 'मिरदंगिया' और शेखर जोशी की 'कोसी का घटवार' जैसी प्रेमपरक कहानियों की कोटि में यह कहानी खड़ी दिखाई पड़ती है। भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि में दो भिन्न भाषाएँ बोलने वाले व्यक्तियों के मध्य संवाद की केवल एक ही भाषा है- हृदय की। जो नथ पुट्टी के पति गुमान की अंतिम निशानी है। वही अन्त में उसका सात्विक दान बन जाता है। पुट्टी उस नथ का दान कर देती है जो उसके पति की शहादत के बाद उसका सब कुछ है।

'गूंगा' कहानी की पृष्ठभूमि स्वैच्छिक विवाह से उत्पन्न संतान के प्रति समाजगत निष्ठुरता और हाशिए की समस्या से जूझते बच्चे की है। कृष्णा जो एक बड़े सर्जन की बेटी है, की एक संतान है- गूंगा जिसको सामाजिक उलाहना के भय से उसके सर्जन पिता आश्रम में दे आये हैं। कहानी में घटनाएँ बड़ी तेजी से बदलती दिखाई देती हैं। कहानी में ऐसे बच्चे जिनको जन्म देकर छोड़ दिया गया है और अगर वे दिव्यांग भी हैं तो उनका सामान्य जीवन कैसा है; इस मुद्दे को उठाने के साथ-साथ माँ के ममत्व को भी कुछ हद तक उकेरने का प्रयास किया गया है- "वह शायद किसी की मंगनी की कमीज पहने था, जिसकी बाहें, उसके हाथ से बहुत नीचे लटक रही थी या शायद कमीज की लम्बाई महज इसलिए बढ़ा दी गई थी कि जीर्ण निक्कर के नीचे के अंगों की लाज ढांकने से एकदम ही इन्कार कर दिया था।"[5]

'लाटी' कहानी की अंतर्वस्तु में कप्तान जोशी और उसकी रोगिणी पत्नी बानो, जो कि क्षयरोग से पीडित है, की कथा है। प्रासंगिक कथा के रूप में नेपाली भाभी की कथा भी है, जिनके माध्यम से शिवानी स्त्री अंतर्मन की अभिलाषाओं को उकेरती चलती हैं। शिवानी स्त्रियों के हाव-भाव और मनोदशाओं का सूक्ष्मतर अंकन करने में बेहद कुशल हैं।

एक समय था जब क्षय रोग असाध्य और तीव्र संक्रमणकारी था। लाटी कहानी को पढ़ते हुए यदि कृष्णा सोबती की 'बादलों के घेरे' की मन्नो की याद आ जाए तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। पर दोनों कहानियों का कथनाक सर्वथा भिन्न है। लाटी कहानी में नव विवाहिता बानो के पति के दूर रहने पर ससुराल की प्रताड़ना और उसके कारण उसका शरीर क्षरित होना चित्रित है। क्षय रोग से पीड़ित बानो स्वयं अपनी मृत्यु से वार्ता करने हेतु कहीं दूर चली जाती है, इधर कप्तान जोशी एक ही वर्ष में दूसरा विवाह कर लेते हैं। शिवानी लिखती हैं कि- "मर्द की जवानी जाड़े की भयंकर रात होती है, जो काटे नहीं कटती।"[6]

कप्तान जोशी कुछ वर्षों बाद अपने भरे पूरे परिवार के साथ वापस उन्हीं पहाड़ों पर जहाँ सैनेटोरियम बना था, जाते हैं- वहाँ अधेड़ वैष्णवियों के बीच एक स्त्री जिसकी जीभ कटकर कहीं गिर गयी थी, वह जो नदी में तैरती मिली थी- यह वही बानो थी।

कहानियों में नाटकीय मोड़ों का सृजन और पाठकीय कौतूहल का सन्निवेशन शिवानी जी की लेखनी की उल्लेखनीय विशेषता है। उपर्युक्त कहानी में स्त्री समर्पण और उसके आत्मबलिदान का यथार्थ अंकन किया है। पहले ससुरालियों की प्रताड़ना- "उन दो वर्षों में बानो ने सात-सात ननदों के ताने सुने, भतीजों के कपड़े धोये, ससुर के होज बिने, पहाड़ की नुकीली छतों पर पाँच-पाँच सेर उड़द पीट कर बड़ियाँ तोड़ी।"[7] फिर क्षय रोग की विषाक्तता, फिर उसका लाटी

बनकर अभागिन का जीवन जीना- "उठ साली लाटी' हेड वैष्णवी ने हलकी सी ठोकर में लाटी को उठाया।"[8] अनायास ही जयशंकर प्रसाद के ध्रुवस्वामिनी(1933ई.) नाटक में मन्दाकिनी का कथन ध्यान हो उठता है (द्वितीय अंक; जहाँ कोमा शकराज का शव लेने आती है)- "स्त्रियों के इस बलिदान का भी कोई मूल्य नहीं। कितनी असहाय दशा है। अपने निर्बल और अवलम्बन खोजने वाले हाथों से यह पुरुषों के चरणों को पकड़ती है और वह सदैव ही इनको तिरस्कार, घृणा और दुर्दशा की भिक्षा से उपकृत करता है। तब भी यह बावली मानती है!"[9]

'अपराधी कौन' नामक कहानी में ननद-भाभी के मध्य एक लम्बी नीली मखमली डिबिया में बन्द नागिन के आकार की लचकती करधनी के गायब हो जाने के पीछे उसको चुराने वाले की तलाश पर आधारित है। हालाँकि बीच बीच में स्त्रियोचित स्वभाव का वर्णन भी शिवानी जी करती चली है- "अपने दामी आभूषण का मूल्य बताने में क्या कभी नारी चूकती है।"[10]

हालाँकि कहानी अपने कलेवर में अत्यन्त सामान्य है। कथारस का निर्वाह भी कसा हुआ नहीं है। बस शब्दाडंबरों की भरमार है।

वहीं दूसरी ओर 'शपथ' कहानी में पात्र संख्या अपेक्षाकृत अधिक होने के बाद भी कथारस का संपूर्णता के साथ निर्वहन हुआ है। कहानी एक ही घर के तीन भाइयों की विवाहिताओं पर आधारित है। कहानी का मूलाधार अप्रैल की पहली तारीख है जो तथाकथित मूर्ख बनाने के दिवस के नाम से प्रसिद्ध है।

शिवानी जी की कमोबेश हर कहानी में नारियों का सौन्दर्यगत चित्रण एक सा ही मिलता जुलता प्रतीत होता है। (मंगोल कपोल, आनन्दी चेहरा, क्षीण कटि, पीताभा-कांचन सन्नभ चमक इत्यादि) इस कहानी की नायिका शुभ्रा का चित्रण करते हुए वे लिखती हैं- 1. "तब का गोल-गोल आनन्दी चेहरा लम्बोतरा होकर और भी आकर्षक बन गया था। सुघड़ जूड़े में मंडित घने केशपाश की गरिमा क्षीण होने से ही सम्भवतः उन्हें काट-छाँटकर यत्न से टीज कर दिया गया था। उन अधरों की स्वाभाविक लालिमा को, मैनें बहुत निकट से देखा था। उन्हें निरन्तर रंगकर ही क्या स्वामिनी ने ऐसा धूमिल बना दिया था! सूखे पपड़ी-पड़े क्लान्त अधरों पर अवसन्न स्मित की रेखा सहसा उज्ज्वल हो उठी।"[11]

2. "अपनी क्षीण कटि के कौमार्य को, वह निश्चय ही मुट्ठी में बाँधकर सेंतती आई थी, पर फिगर को जकड़े रहने पर भी संस्कृति, जैसे उसकी पकड़ से छूटकर बहुत दूर छिटक गई थी। पट्टी-से ब्लाउज पर, बड़ी उदासीनता से पड़ा उसकी पारदर्शी साड़ी का आँचल, अँगुलियों पर हीरे की वर्तुलाकार जगमगाती अँगूठी से उज्ज्वल हो उठी निकोटीन के इतिहास की निर्लज्ज कालिमा, और आँखों के नीचे रात्रिजागरण से उभरी काली झाईं, जिसे उसका मस्करा कौशल भी नहीं छिपा सका था।"[12]

हालाँकि इस तथ्य को उन्होनें स्वयं उल्लिखित किया है कि क्यों उनका स्त्रियोचित सौन्दर्यगत वर्णन कमोबेश हर कहानी में एक सा है- "यदि मेरा कहानियों में, मेरे उपन्यासों में कुमायूँ के प्रति मेरे मोह का स्वर रह-रहकर मुखर हो उठता है, तो मुझे आश्चर्य नहीं होता। किन्तु, मेरे आलोचकों की दृष्टि में मेरा यही सबसे बड़ा दोष है। क्यों मेरी प्रत्येक रचना कुमायूँ के ही सूर्योदय एवं सूर्यास्त तक सीमित रहती है? क्यों मेरी प्रत्येक नायिका अपरूप सुन्दरी होती है? क्यों उसके उठे कपोलों पर पिघले सुवर्ण की पीताभा निरन्तर चमकती चली जाती है? क्या यह दुहराव नहीं है? मैं नहीं कह सकती कि मेरे पाठकों को भी यह दुहराव लगता है या नहीं! मेरे लिए तो कुमायूँ के प्रत्येक सूर्योदय एवं सूर्यास्त की निजी मौलिकता है। जिस परिवेश में मैं रही हूँ, जहाँ मैनें सिर पर घास के अशक्य बोझ की गरिमा वहन करती सुन्दरी ग्राम्या के अलस पद-विन्यास को दिन-रात देखा है, वहाँ क्या मुझे एक बार भी बासीपन की गंध आई है?"[13]

एक अन्य कहानी 'ज्येष्ठा' पर यदि दृष्टिपात करें तो हम पातें हैं कि शिवाजी की अधिकांश कहानियों में नारियाँ ही केन्द्रबिन्दु में है। उनकी कहानी का मूलाधार स्त्री चेतना, वेदना एवं संवदेना है। ज्येष्ठा कहानी के प्रथम परिच्छेद में उन्होने नारी के अन्तर्मन में जाकर उसकी तहों के बन्द विचारों को टटोलने का प्रयास किया है- "कभी-कभी, नारी ही नारी के लिए एक जटिल पहेली बन उठती है। वैसे एक नारी के जिस छलनामय स्वभाव का घनिष्ठ परिचय दूसरी नारी को अपने पारिवारिक जीवन में पग-पग पर मिलता रहता है, वह शायद किसी पुरुष को कभी नहीं मिल सकता। जिठानी, देवरानी, ननद, भाभी यहाँ तक कि एक माँ की जाई दो सगी बहनों को भी कभी-कभी ईर्ष्या, द्वेष, कामना या लोभ की आरी चीरकर विलग कर देती है। वैमनस्य के अखाड़े में जूझती वीरांगनाएँ किसी कुशल फेंसिंग के कलाकार की दक्षता से प्रद्विद्विंनी को कभी जिह्वा के प्रहार से धराशायिनी कर देती हैं और कभी छल-बल से। जहाँ मूर्ख पुरुष क्रोध से अंधे बन कभी-कभी फाँसी के फन्दे को भी भूलकर, शत्रु मुंड गंडासे से अलग कर देते हैं, वहाँ प्रतिशोध लेने के लिए नारी कभी ऐसी अविवेकपूर्ण मूर्खता नहीं करती। वह शत्रु की सुख्याति, सुनाम यहाँ तक कि उसका सर्वस्व भी हरण कर सकती है, केवल अपनी तीखी जिह्वा के कुटिल प्रहार से। इसमें कोई सन्देह नहीं कि नारी ही नारी की सबसे बड़ी शत्रु है।"[14]

'सती' कहानी में मदालसा नामक युवती अपने साथ यात्रा कर रही तीन सहयात्रियों को भोज्य पदार्थ में कुछ मिलाकर उनके सारे कीमती सामान को चुरा ले जाती है। कहानी हास्यप्रधान एवं आनंदप्रधान है।

इसी तरह 'चीलगाड़ी', 'के', 'पुष्पहार', 'करिए छिमा' इत्यादि अनेकानेक कहानियों में शिवानी जी की स्त्री संवेदना व्यापक रूप में दिखाई देती है। 'करिए छिमा' की हीरावती को कौन भुला सकता है? शिवानी जी मुखर रूप में स्त्रियों के अधिकारों, उनके मनोभावों, संवेदनाओं, अनुभूतियों के प्रति प्रतिबद्ध, संबद्ध व आबद्ध दिखाई देती हैं। यह कहना बेमानी होगा कि उन्होने अपनी कहानियों में कहीं वैषम्य पनपने दिया है। उनकी कहानियों नारी जीवन के मन में गहराई तक उतरती हैं और परत दर परत उघारती चलती हैं। उनकी कहानियों में स्त्री जीवन के यथार्थ को बड़ी बारीकी के साथ चित्रित किया गया है।

संदर्भः-

1. शिवानी की कहानियों में स्त्री अस्मिता का संघर्ष, निधि कौशिक, IJRRSS, Vol. 4, Issue 2, 2016
2. https://hindikahani.hindi-kavita.com/Lal-Haveli-Shivani.php
3. https://hindikahani.hindi-kavita.com/Nath-Shivani.php
4. वही
5. https://hindikahani.hindi-kavita.com/Goongs.php
6. https://poshampa.org/laati/
7. वही
8. वही
9. https://www.hindikahani.hindi-kavita.com/Dhruvswamini-Jaishankar-Prasad4.php
10. मेरी प्रिय कहानियाँ, शिवानी, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, संस्करण 2022, पृ.126
11. मेरी प्रिय कहानियाँ, शिवानी, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, संस्करण 2022, पृ.108
12. वही
13. मेरी प्रिय कहानियाँ, शिवानी, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, संस्करण 2022,भूमिका, पृ.5
14. मेरी प्रिय कहानियाँ, शिवानी, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, संस्करण 2022, पृ.94

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा।

आधुनिक हिंदी कविता पर गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव

डॉ यमुना प्रसाद रतूड़ी

शोध सार : आधुनिक हिंदी कविता की बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्ध गांधी जी के सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, मानव कल्याण, विश्व बंधुत्व, सर्वधर्म समभाव, अस्पृश्यता निवारण, स्त्री मुक्ति यंत्रों के प्रतिवाद, कुटीर उद्योगों के प्रयोग, चरखा, तकली के प्रयोग आदि को इतनी गहराई से अभिव्यक्त करता है कि उसे 'गांधीवादी कविता' के नाम से भी अभिहित किया जा सकता है। मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, सियारामशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय, बालकृष्ण शर्मा नवीन, पंत, प्रसाद, बच्चन आदि कवियों ने अपनी रचनाओं में गांधीजी को भारतीय राजनीति के पथ प्रदर्शक, युग दृष्टा, सत्य-अहिंसा के पुजारी तथा मानवता के पोषक के रूप में चित्रित किया है।

संकेत शब्दः सत्य, अहिंसा, मानवतावाद, सत्याग्रह, सर्वधर्म समभाव, सत्याग्रह, राष्ट्रीयता, चरखा, तकली।

यह एक अद्‌भुत संयोग है कि आधुनिक हिंदी कविता की सूत्रधार कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र और आधुनिक भारतीय राजनीतिक आंदोलन के सूर्य महात्मा गांधी का जन्म भारतीय इतिहास की उस अभूतपूर्व घटना की विभाजक रेखा के आसपास हुआ है जिसे हम अठ्ठारह सौ सत्तावन की सैनिक क्रांति के नाम से जानते हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने ऐसी परिस्थितियों में जन्म लिया जब अंग्रेजों की दासता की घुटन से छटपटाता भारतीय समाज एक चिंगारी की प्रतीक्षा कर रहा था तो विभाजक रेखा की दूसरी ओर जब भारतीय जनमानस इस चिंगारी से उत्पन्न ज्वाला को और अधिक प्रज्ज्वलित करने के लिए उद्‌दवेलित हुआ तब इस भारत की भूमि पर महात्मा गांधी का अवतरण हुआ। भारतेंदु के विषय में रामस्वरूप चतुर्वेदी टिप्पणी करते हुए कहते हैं, "वे ऐसे भक्त थे जो समकालीन राजनीति पर पूरी दृष्टि रखते थे और उनकी रचना इस पूरी स्थिति से उत्पन्न होती है वे आधुनिक काल के प्रवर्तक माने जाते हैं। टैक्स, महामारी, धन के विदेशों में प्रवाह के विरुद्ध आवाज उठाते हैं, स्वदेशी और मातृभाषा के प्रयोग के लिए आग्रह करते हैं।"[1] यहाँ इस उद्धरण का उद्देश्य भारतेन्दु के महत्व को बताना नहीं है अपितु इस ओर ध्यान आकर्षित करना है कि भारतीय राजनीति की जिस ऐतिहासिक दृष्टि को लेकर महात्मा गांधी चले थे हिंदी साहित्य के आधुनिक काल और पुरस्कर्ता भारतेन्दु की दृष्टि से उसका पार्थक्य नहीं है। क्रांति की ज्वाला का अलख हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में अपने ढंग से जलाया गया जिसकी राजनीतिक जिम्मेदारी महात्मा गांधी ने अपने कंधों पर ले ली थी।

इस शोध पत्र में बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशक से लेकर मध्य तक के कालखंड के साहित्य पर गांधीवादी चेतना अथवा विचारधारा का प्रभाव परिलक्षित किया गया है। महात्मा गांधी और भारतेंदु हरिश्चंद्र का उल्लेख तत्कालीन कालखंड की ऐतिहासिक आवश्यकता के रूप में किया गया है।

भारत-भूमि पर राजनीतिक पदार्पण करने से पूर्व महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका के दीर्घ प्रवास पर थे। उनके द्वारा भारतीय राजनीति के इतिहास में किए गए कार्यों की पूर्वपीठिका के रूप में दक्षिण अफ्रीका प्रवास को देखा जाना श्रेयस्कर होगा। इसके कतियय प्रमुख कारणों का उल्लेख आयश्यक है। प्रथम, दक्षिण अफ्रीका में ही उनकी भेंट गोपाल कृष्ण गोखले से होती है जिन्हें वह अपना राजनीतिक गुरु मानते हैं। गोपाल कृष्ण गोखले की प्रेरणा से वे गहन अध्ययन की ओर उन्मुख होते हैं और रस्किन, टॉलस्टाय, गीता आदि का गहराई से अध्ययन कर अपने जीवन के दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं। द्वितीय, गांधी जी ने अपने राजनीतिक जीवन में आंदोलनों की श्रृंखलाएँ आयोजित की थी उनका पूर्व रूप हमें दक्षिण अफ्रीका में हुए प्रयासों और आंदोलनों में स्पष्ट दिखाई देता है। भारतीय भूमि पर बिहार के चंपारण से पूर्व वे दक्षिण अफ्रीका में आंदोलन और उसकी प्रक्रिया को देख और समझ चुके थे। भारतीय राजनीति में प्रवेश करने से पूर्व दक्षिण अफ्रीका गांधी जी की राजनीतिक प्रयोगशाला बनी रही। बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक के मध्य से लेकर अपनी मृत्यु तक गांधीजी भारतीय राजनीति की धुरी बने रहे।

भारतीय राजनीति में गांधीजी एक ऐसे राजनेता के रू

प में उभर कर सामने आए जो समाज सुधार के कार्यों में भी व्यस्त रहे। सन 1904 ईसवी में दक्षिण अफ्रीका के जोहानसबर्ग में हिंदुस्तानियों की घनी आबादी की बस्ती 'कुली लोकेशन' में प्लेग की बीमारी फैलने के उपरांत गांधीजी ने जनसहयोग के द्वारा स्वयं नेतृत्व कर इसका सामना किया। बीमारों को दवा देना, उनके मनोबल को बनाए रखना, उनके शरीर पर मिट्टी की पट्टी रखने आदि से लेकर उनका मल-मूत्र साफ करना जैसे कार्यों में गांधी जी स्वयं भी निमग्न रहते थे। इतना ही नहीं इस कालावधि में उन्होंने अल्पाहार पर भी विशेष बल दिया। अपनी आत्मकथा में वह लिखते हैं, 'मैंने और मेरे साथी सेवकों ने महामारी के दिनों में अपना आहार घटा लिया था। एक लंबे समय से मेरा अपना यह नियम था कि जब आसपास महामारी की हवा हो तब पेट जितना हल्का रहे उतना ही अच्छा इसलिए मैंने शाम का खाना बंद कर दिया था। भोजनालय के मालिक से मेरी गहरी जान पहचान हो गई थी मैंने उनसे कह रखा था कि क्योंकि मैं महामारी के बीमारों की सेवा में लगा हूँ इसलिए दूसरों के संपर्क में कम से कम आना चाहता हूँ।"[5]

इस वृतांत का उल्लेख महात्मा गांधी की लोक कल्याण, परदुखकतरता, लोक परायणता की भावना के परिचय को दृष्टिगत करता है। हिंदी साहित्य के आधुनिक काल की सीमा में द्विवेदी युग तथा छायावादी काव्य के साथ-साथ गद्य में भी कवियों और लेखकों ने अपनी रचनाओं में जिन पात्रों का सृजन किया है, उनमें जनसाधारण की मंगल कामना के निमित्त किए गए समाज सुधार के कार्यों में गांधीवादी दृष्टिकोण की अनुगूंज सुनाई देती है।

गांधीवादी विचारधारा को समझने के लिए उसके प्रमुख तत्वों को समझना अत्यंत आवश्यक है। ये तत्व हैं - सत्य और अहिंसा। गांधीजी का सत्य शरीर, मन, वचन तथा कर्म को शुद्ध कर ईश्वर के साथ साक्षात्कार का प्रयास करता है किंतु सत्य जिस नैतिक आत्मबल के माध्यम से ईश्वर की प्राप्ति की कामना चाहता है, वह अहिंसा के बिना संभव नहीं है। गांधीजी की दृष्टि में अहिंसा से तात्पर्य शाब्दिक और शारीरिक हिंसा से नहीं है। अपितु आपके मन में हिंसा करने वाले व्यक्ति के प्रति दया और सहानुभूति का भाव हो और उसे इस बात का बोध हो कि वह जो हिंसा कर रहा है आप उसके लिए, उसकी ओर से प्रायश्चित कर रहे हैं। अपने संपूर्ण जीवन भर गांधीजी अहिंसा के इस सिद्धांत का अनुपालन करते रहे। राजनीति और स्वतंत्रता संग्राम के निमित्त गांधी जी ने अहिंसा को प्रमुख साधन के रूप में स्वीकार किया। इस विषय में उनका मत है कि यदि भारत अहिंसात्मक उपायों द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त कर लेता है स्वतंत्रता संघर्ष करने वाले अन्य देशों के लिए संदेश वाहक होगा ही पर इससे भी अधिक महत्व की बात यह है कि शांति के एक नूतन और अभूतपूर्व मार्ग का उद्घाटन करने में सहायक होगा।"[6] इसके अतिरिक्त सर्वधर्म समभाव, राजनीति में धर्म की उपादेयता, जीवन में प्रार्थना या उपासना की महत्ता, ब्रह्मचर्य, अस्तेय (चोरी न करना), आवश्यकता से अधिक किसी चीज का संग्रह न करना, शारीरिक श्रम के माध्यम से स्वावलंबन को महत्व देना, अस्पृश्यता को जड़ मूल से नष्ट कर हरिजनों का उद्धार करना, प्रत्येक मनुष्य में अपने नैतिक आत्मबल का विकास, सामाजिक सद्भाव, हिंदुओं सहित अन्य समाजों के सांस्कृतिक पुनरुत्थान पर बल देना, नारी सहित वेश्यावृत्ति के कार्य में लिप्त स्त्रियों का उद्धार करना, बाल-विवाह का प्रतिवाद, सती प्रथा से मुक्तहोकर नारी को समाज, देश एवं विश्व की सेवा के लिए तत्पर रहने की प्रेरणा देना, विधवाओं के पुनर्विवाह को समर्थन, अंतर्जातीय विवाह को बढ़ावा देना, आर्थिक स्वावलंबन हेतु ग्रामीण स्तर पर उद्योग तथा ग्राम पंचायतों के महत्व को जन-जन तक पहुँचाने, आधुनिकता की अंधी दौड़ में मशीनों का विरोध करना, गौरक्षा के समुचित प्रबन्ध हेतु संस्थाओं और तद्नुसार संसाधनों का उपक्रम करना, सविनय अवज्ञा, उपवास तथा इसके माध्यम से देश के स्वाधीनता संग्राम में सत्याग्रह का प्रयोग करना, स्वराज्य अथवा रामराज्य की परिकल्पना, राष्ट्र भाषा के विकास हेतु जनसाधारण को जागरुक करने सहित अनेक ऐसे पायदान हैं जिन्हें गांधीवादी विचारधारा के विभिन्न आयामों के रूप में परिलक्षित किया जा सकता है।

भारतेंदु युग की कविता जहाँ एक और रीतिकालीन भाव बोध को आधार बना रही थी दूसरी ओर गद्य साहित्य अपने युगीन परिवेश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक चेतना को लेकर आगे बढ़ रहा था।

द्विवेदी युगीन कवियों में गांधी जी के सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, लोक सेवा, कर्तव्य परायणता, असहयोग आदि विचारों का परिपाक स्पष्टतः देखा जा सकता है। इस युग

के कवि और उनकी रचनाओं में स्वदेश प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना बलवती हो रही थी। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से इस युग के काव्य में कवियों ने राष्ट्रीय एकता श्रृंगारिक भावना का प्रतिकार, समाज सुधार, समाज के हाशिए से स्त्री को मुख्यधारा में लाने के प्रयास, देश की राजनीतिक और सामाजिक दुरावस्था, पौराणिक आख्यानों के माध्यम से समाज को जागृत करने के प्रयासों में गांधीवादी वैचारिक दृष्टिकोण को लक्षित किया जा सकता है। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की रचना 'प्रियप्रवास' इसका ज्वलंत उदाहरण है। प्रियप्रवास की राधा को श्रीकृष्ण जैसे राष्ट्र नेता की विवेकिनी, सहचारी के रूप में चित्रित किया गया है। प्रस्तुत काव्य में वह सेवा भाव का प्रतीक बन गई है।"[8] उद्धव जब श्रीकृष्ण का संदेश लेकर ब्रज में राधा के पास जाते हैं तो प्रत्युत्तर में राधा कहती है, "जैसे मेरे प्रिय की आज्ञा है मैं उसका पालन करूंगी। मैंने अपनी प्रिय के पास बैठकर भक्ति सीखी है। ऐसी चेष्टा करूंगी कि हमेशा दीन दुखियों की सेवा करूंगी। - - - उद्धव! आप श्रीकृष्ण जी से कहना कि मैं उनकी आज्ञा का पालन करुंगी और मैं विश्व के काम आऊँगी।"[9] वस्तुतः 'प्रियप्रवास' में चित्रित कृष्ण और राधा देवत्व की अवधारणा से उतरकर लोक नायक और नायिका के रूप में चित्रित किए गए हैं। श्रीकृष्ण के वियोग में राधा ने अविचलित होकर समाज सेवा का प्रतिधारण किया है। अपने व्रत के लिए कृत संकल्प राधा केवल दीन जनों, अनाथों के प्रति सेवा भाव के लिए ही प्रस्तुत नहीं होती अपितु कीड़ों और चीटियों का भला करने के लिए भी तत्पर रहती है। इस प्रकार के 'प्रियप्रवास' की राधा और लोक और देश की सेवा आदर्श प्रतिमूर्ति के रूप में चित्रित नायिका है। कवि ने इस ब्याज से देश के स्वाधीनता आंदोलन के निमित्त स्त्रियों को आह्वान देने के लिए प्रेरित किया है। इस प्रकार लोक हित और देश सेवा के लिए समर्पित 'प्रियप्रवास' के नायक और नायिका गांधीवादी विचारधारा से अनुप्राणित चरित्र हैं।

'साकेत' में उर्मिला लक्ष्मण की पत्नी है। यह उर्मिला का त्याग और चरित्र की दृढ़ता ही थी जिसके कारण लक्ष्मण सहज रूप से राम-सीता के साथ वन जाने के लिए तैयार हो सके। उर्मिला का अपेक्षित सहयोग ही लक्ष्मण के वन-गमन के मार्ग प्रशस्त करता है। वास्तव में यह युगीन परिवेश की मांग थी। देश के स्वाधीनता आंदोलन हेतु गांधी जी ने हर घर-परिवार के सदस्य को अपने सक्रिय सहभागिता के लिए प्रेरित किया। अतः यह आवश्यक था कि पुरुषों के साथ-साथ महिलाएँ भी अपना अपेक्षित सहयोग प्रदान करें। देश की उन सभी महिलाओं को लक्षित कर गुप्त जी लक्ष्मण के मुख से कहलवाते हैं - "अवस अबला तुम? सकल बल वीरता,/ विश्व की गंभीरता, ध्रुवधीरता।"[10]

यशोधरा की वेदना का चित्रण करना गुप्तजी का लक्ष्य नहीं है। नारी जाति के तिरस्कार और उसके अस्तित्व-बोध के प्रति जागरूकता का भाव लेकर गुप्तजी गांधीवादी दृष्टिकोण से सोचने के लिए विवश करते हैं। यशोधरा की वाणी में यह स्पष्ट देखा जा सकता है -"सिद्धि मार्ग की बाधा नारी फिर उसकी क्या गति है,/पर उनसे पूछूँ क्या जिनको मुझसे आज विरति है,/अर्ध-विश्व में व्याप्त शुभाशुभ मेरी भी कुछ गति है,/मैं भी नहीं अनाथ जगत में मेरा भी प्रभु पति है।"[12]

गांधी जी द्वारा प्रस्तुत सत्य, अहिंसा और सर्व धर्म समभाव से हम अपनी भारतीय संस्कृति को उन्नत बना सकते हैं और एक आदर्श रामराज्य की स्थापना कर सकते हैं।

'पंचवटी' नामक प्रसिद्ध खंडकाव्य में गुप्त जी ने मानवतावादी विचारधारा का प्रस्तुतीकरण किया तो 'जयभारत' में युधिष्ठिर को सत्य और अहिंसा से युक्त सात्विक मानव के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'किसान' नामक खंडकाव्य में शोषित किसान वर्ग की दुर्दशा का चित्रण कर उनकी समस्याओं को अभिव्यक्त करते हैं। सिद्धराज नामक खण्डकाव्य में महात्मा गांधी जी के जीवन दर्शन के साथ-साथ उनके राष्ट्रवाद की अहिंसा प्रवृत्ति को उजागर किया गया है।

गांधी जी के विचारों को अपने काव्य में स्थान देने वाले कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी का नाम विशेष रूप से चर्चित है। देश के स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय सहभागिता निभाते हुए उन्होंने अपने अध्यापकीय जीवन से भी दूरी बना ली। गांधी जी द्वारा आहूत असहयोग आंदोलन सहित अनेकों अवसरों पर जेल भी गए। स्वतंत्रता आंदोलन के निमित्त जेल जाना उनके लिए गौरव की बात थी। इष्ट-सिद्धि के लिए इस कर्म पथ से वे विचलित नहीं हुए -"क्या देख न सकती जंजीरों का गहना।/हथकड़ियां क्यों? यह

ब्रिटिश राज्य का गहना।"[13]

देश की बलिवेदी पर उत्सर्ग देने का स्वर भी चतुर्वेदी जी के काव्य की आत्मा रही है। उनकी रचित कविता 'पुष्प की अभिलाषा' का स्वर यही है- "चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊँ,/ चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ। मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ में देना तुम फेंक,/ मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।"[14]

गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित रचनाओं में चतुर्वेदी जी की -युगपुरुष, कैदी और कोकिला, राष्ट्रीय झंडे की भेंट, सत्याग्रही, पुष्प की अभिलाषा, युग धनी, बली पंथी से जीवित जोश आदि प्रमुख हैं जिनमें सत्य, अहिंसा, सर्वधर्म समभाव, असहयोग आंदोलन के प्रत्यक्ष-परोक्ष दर्शन होते हैं। यद्यपि प्रारंभिक जीवन में चतुर्वेदी जी उग्रपंथी विचारधारा से संपृक्तथे किंतु गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर अहिंसा का मार्ग उन्हें उचित प्रतीत हुआ - "ले कृषक संदेश, कर बलि वंदना,/ध्वज तिरंगे की करो सब अर्चना,/ घूमता चरखा लिए, गिरि पर चढ़ो,/वे अहिंसा - शस्त्र आगे ही बढ़ो।"[15]

सियारामशरण गुप्त जी भी गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित कवियों में परिगणित किए जाते हैं। "प्राचीन भारतीय आख्यानों को आधार बनाकर सृजित उनकी रचनाओं में सत्य, अहिंसा, करुणा, विश्व बंधुत्व, शांति आदि गांधीवादी मूल्यों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।"[16]

सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्तिकरने वाली कवियित्रियों में प्रसिद्ध हैं। राष्ट्रीय गौरव का गाथा-गान उनके शब्दों में निम्न प्रकार अभिव्यक्तहुआ है -"सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,/बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी।/गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,/दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।"[17]

हरिवंश राय बच्चन भी गांधीवादी विचारों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। गांधीजी के समान देश के स्वतंत्रता आंदोलन के लिए बलिदान की भावना, हिंदू-मुस्लिम सौहार्द्, छुआछूत की भावना का त्याग आदि समसामयिक ज्वलंत विषयों को अपनी लेखनी का आधार बनाया है। सामाजिक समरसता के लिए बच्चन आह्वान करते हुए कहते हैं - "मुसलमान और हिंदू हैं दो,/एक मगर उनका प्याला,/एक मगर उनका मदिरालय,/एक मगर उनकी हाला।"[18]

सोहनलाल द्विवेदी जी 'युग कवि' के कवि के रूप में चर्चित हैं। स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक बार जेल भी गए। गांधीजी के समान द्विवेदी जी भी देश के इतिहास, उसकी सामाजिक सांस्कृतिक विरासत तथा राष्ट्रीयता की भावना के प्रति अटूट श्रद्धा रखते हैं। अपनी रचनाओं में गांधी जी के विचारों और सिद्धांतों के अलग-अलग कलेवर में प्रस्तुत करते हैं - "खादी तो कोई लड़ने का/है जोशीला रणगान नहीं,/खादी है तीर कमान नहीं/खाही है खड्ग कृपाण नहीं;/खादी को देख देख तो भी/दुश्मन का दल थहराता है,/खादी का झंडा सत्य शुभ्र/अब सभी ओर फहराता है।"[19]

इतना ही नहीं वह देश के युवाओं को इन सिद्धांतों के अनुपालन की प्रेरणा भी देते हैं। गांधी जी और उनके विराट व्यक्तित्व को एक चित्र में निम्न प्रकार व्यक्तकरते हैं -"चल पड़े जिधर दो डग मग में,चल पड़े कोटि पग उसी ओर।/ पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि गड़ गए कोटि दग उसी ओर।/ हे युग दृष्टा ! हे युग सृष्टा ! पढ़ते कैसा यह मोक्ष मंत्र ?/इस राजतंत्र के खंड़हर में उड़ता अभिनव भारत स्वतंत्र।"[20]

अन्य कवियों में शिवमंगल सिंह सुमन की समाज उन्मुख राष्ट्रीय दृष्टि, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की मानव को सामर्थ्यवान बनाने की प्रेरणा, वियोगी हरि का राष्ट्रीय दृष्टिकोण (महात्मा गांधी का आदर्श, चरखा स्रोत, चरखे की गूंज, असहयोग आदि रचनाओं में) गया प्रसाद शुक्ल जी की शोषितों और निर्धन वर्ग के प्रति सहानुभूति (कृषक- क्रन्दन) की दृष्टि में गाँधीवादी विचारों की झलक देखी जा सकती है।

छायावादी काव्य में गांधीवादी विचारों के प्रभाव स्वरूप राष्ट्रीय चेतना उन्मेष मानवतावादी दृष्टिकोण के रूप में हुआ है। राष्ट्रीय आंदोलन में गांधीजी के व्यापक प्रभाव का प्रवर्तन छायावादी युग में हुआ। विद्वानों का मत है कि गांधी जी के राजनीतिक कार्यों की साहित्यिक परिणति छायावाद है। गांधी जी जिस भारतीय प्राचीन सांस्कृतिक विरासत को महत्व देते हैं वह छायावादी कवियों की कविताओं में - 'अरुण यह मधुमय देश हमारा', 'अंबर चुम्बित भाल हिमालय' की पंक्तियों में प्रस्तुत होता है।

छायावादी कविता में जो निराशा का स्वर दिखाई देता है, उसे कवियों के वैयक्तिक जीवन से संपृक्त नहीं किया जा सकता है। पूरे देश में आंदोलन की उठा-पटक, समय-असमय आंदोलनों की अभीष्ट प्राप्ति न हो पाना, उनकी असफलता आदि घटनाक्रम आदि का प्रभाव भी छायावादी कवियों की निराशा के प्रमुख कारणों में परिगणित किया जाना आवश्यक है। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का 'पराजय गीत' इसी प्रकार की अभिव्यक्ति है। गांधी जी के सत्य, अहिंसा, हिंदू-मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता निवारण, अछूतोद्धार, सामाजिक-राजनीतिक समानता, ग्रामोद्धार आदि विचार छायावादी काव्य में मानवतावादी भावना के धरातल पर फलीभूत हुए हैं।

सुमित्रानंदन पंत ने अपनी रचनाओं में गांधी दर्शन को यथेष्ट स्थान प्रदान किया है। पंत जी गांधी जी के विचारों से इतने प्रभावित रहे हैं कि उनके आह्वान पर अपने छात्र जीवन को तिलांजलि देकर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय प्रतिभागी बन गए। 'बापू के प्रति' पंत जी की चर्चित रचना है जिसमें में गांधीजी के व्यक्तित्व से पाठकों का परिचय कराते हैं-"सुख भोग खोजते आते सब,/आए तुम करने सत्य खोज,/जग की मिट्टी के पुतले जन,/तुम आत्मा के मनके मनोज।/ जड़ता, हिंसा, स्पर्धा में भर/चेतना अहिंसा नम ओज,/पशुता का पंकज बना दिया/ तुमने मानवता का सरोज।"[21]

पंत जी की दृष्टि में बापू सत्य, अहिंसा की नवीन संस्कृति के अग्रदूत हैं। उनकी दृष्टि में बापू ने जिस सत्य और अहिंसा का उद्घोष किया है उससे केवल भारतीय ही नहीं अपितु अंतरराष्ट्रीय मानव जगत भी आश्चर्यचकित है। इसलिए वे इसे (सत्य और अहिंसा) अंतरराष्ट्रीय जागरण की संज्ञा देते हैं। पंत जी के 'लोकायतन' महाकाव्य सहित 'युगान्त', 'युगवाणी' तथा 'ग्राम्या' में अनेकों रचनाएँ गांधीवादी विचारधारा को समर्पित हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आधुनिक हिंदी कविता में प्रायः प्रत्येक कवि न्यूनाधिक रूप से गांधीवादी विचारों से प्रभावित रहा है। इन कवियों ने गांधीजी के जीवन, उनके व्यक्तित्व, उनके स्वप्न, उनके आदर्श और विचारधारा को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। गांधी जी के विराट व्यक्तित्व को लक्षित कर बीसवीं शताब्दी के महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टाइन ने कहा है कि आने वाले समय में सौ साल के बाद जन्म लेने वाले बच्चे शायद ही यह मानने को तैयार होंगे कि गांधी जैसा कोई मनुष्य देह धारण करके पृथ्वी पर जन्मा था।

संदर्भ संकेत :

1. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, डॉ.रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सत्रहवाँ संस्करण, 2004, पृ. - 85
5. सत्य के साथ मेरे प्रयोग, मोहनदास करमचन्द गाँधी, (अनुवादक) काशीनाथ त्रिवेदी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, जुलाई - 1968, पृ. - 254-55
6. आदर्श भारत की रूपरेखा, मोहनदास करमचंद गांधी, (अनुवादक) प्रोफेसर देवराज उपाध्याय, द्वारकादास राठी, जोधपुर, राजस्थान, पृ. - 03, सन् - 1948
8. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' प्रणीत 'प्रियप्रवास की राधा', स्वाति मिश्रा, शब्द-ब्रह्म (अंतर्राराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका), वाल्यूम-4, अंक- 8, मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति, इंदौर, मध्य प्रदेश, 17 जून, 2016, पृ.-58
9. वही, पृ. - 60
10. साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, प्रथम सर्ग, साहित्य सदन, चिरगांव, झांसी, सन् - 1989, पृ. -31
12. वही, पृ. - 44
13. हिमकिरीटनी (कैदी और कोकिला), माखनलाल चतुर्वेदी, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण- 2000, पृ. - 17
14. पुष्प की अभिलाषा, माखन लाल चतुर्वेदी
15. हिमकिरीटनी(मरण त्यौहार), माखनलाल चतुर्वेदी, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण-2000, पृ.- 28
16. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ नगेन्द्र (संपा), मयूर पेपर बैक, दिल्ली, सन् 2000, पृ.- 538
17. झांसी की रानी, सुभद्राकुमारी चौहान
18. मधुशाला, हरिवंशराय बच्चन, 50 वीं रूबाई, पृ.- 10
19. भैरवी, सोहनलाल द्विवेदी, इंडियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद, खादी गीत, द्वितीय संस्करण-1942, पृ.- 08
20. वही, युगावतार गांधी, पृ. - 02
21. सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली, खण्ड दो, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, सन् - 1979, पृ. - 24

असिस्टेण्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
ब.ला.जु. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय पुरोला, उत्तरकाशी (उत्तराखण्ड)
E-mail: ypr3879@gmail.com, Mob: 7895180110

बेमेतरा जिले में शिशु मर्त्यता पर शिक्षा का प्रभाव : एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ मधु एवं डॉ खेमचंद

शोध सांराश : प्रस्तुत अध्ययन बेमेतरा जिले में शिशु मर्त्यता पर शिक्षा के प्रभाव से संबंधित है। अध्ययन क्षेत्र में 4 विकासखंण्डो (नवागढ़, बेमेतरा, बेरला और साजा) से 24 गाँवों का यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से चयन किया गया है। जिनमें 934 महिलाओं से सूचना एकत्र की गई। क्षेत्र में 54.17 प्रतिहजार शिशु मर्त्यता दर है। शिशु मर्त्यता दर 36.40 प्रतिहजार बालिकाओं में तथा 69.62 प्रतिहजार बालकों में है। जिले में निरक्षर महिलाओं में शिशु मर्त्यता दर सर्वाधिक 85.17 प्रति हजार है। साक्षर महिलाओं में शिशु मर्त्यता दर 64.39 प्रति हजार है। शैक्षणिक स्तर में वृद्धि के साथ-साथ शिशु मर्त्यता दर में क्रमशः कमी हुई है। उच्च माध्यमिक में शिशु मर्त्यता दर 36.03 और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिशु मर्त्यता दर 24.39 प्रति हजार है। जिले में निरक्षर पिता में शिशु मर्त्यता दर सबसे अधिक 94.33 प्रति हजार है। साक्षर पिता में शिशु मर्त्यता दर 69.38 प्रति हजार है। प्राथमिक स्तर 53.09, माध्यमिक स्तर पर 40.00 एवं उच्चतर माध्यमिक में सबसे कम 20.00 प्रति हजार शिशु मर्त्यता दर है। अतः शिशु मर्त्यता में सुधार लाने के लिए महिलाओं को कम से कम माध्यमिक स्तर तक साक्षर होना सार्थक सिद्ध होता है।

शब्द कुंजी- साक्षर, महिलाएँ, शैक्षणिक स्तर, माध्यमिक।

प्रस्तावना : जनसंख्या संरचना को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक - प्रजननता, मर्त्यता और प्रवास हैं। आयु के अनुसार मृत्यु दर में अत्यधिक विचलन होता है तथा उसके बाद मृत्यु का दवाब घटने लगता है। शिशु मृत्यु दर किसी समुदाय की स्वास्थ्य दशाओं का उपयोगी सूचक है। मृत्यु के कारणों में स्थानिक भिन्नता के साथ परिवर्तन होते रहते हैं। शिशु मर्त्यता एक अस्वाभाविक घटना है जो प्रत्यक्ष रू प से किसी भी क्षेत्र की सामाजिक - आर्थिक विकास को प्रभावित करती है। इसलिए शिशु मर्त्यता का अध्ययन उसके सामाजिक - आर्थिक विकास के परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इसी प्रकार जीवन प्रत्याशा, जननीति एवं जनसंख्या वृद्धि में मर्त्यता का महत्वपूर्ण सक्रिय एवं क्रियात्मक सहयोग होता है। मर्त्यता के निर्धारक कारक भिन्न - भिन्न स्थानों में भिन्न - भिन्न होते हैं जो समय के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदलते रहते हैं वर्तमान में मर्त्यता निर्धारक घटको की प्रकृति में जो परिवर्तन हुए हैं वे जनांकिकी संक्रमण के महत्वपूर्ण अंग है इस प्रकार मर्त्यता की कमी जनसंख्या विकास का सर्वोत्तम सूचक होता है। संपूर्ण भारत में शिशु मृत्यु दर अधिक है मृत्यु अनेक जटिलताओं एवं अंतर्संबंधित कारकों का प्रतिफल है। भारत में अल्पपोषण एवं कुपोषण दोनों ही समस्या है। अधिक शिशु मृत्यु दर के कारण भारतीय जनता परिवार नियोजन के स्थायी उपाय को अपनाने से डरते है।

अध्ययन क्षेत्र : छत्तीसगढ़ राज्य के बेमेतरा जिले के उत्तर पश्चिम मध्य भाग में स्थित है। इसका विस्तार $21^{0}90'$ उत्तरी अक्षांश तथा $81^{0}90'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है, इसका क्षेत्रफल 624.98 वर्ग किलोमीटर है। जिले की समुद्र सतह से औसत उँचाई 278 मीटर है। जिले का अपवाह तंत्र महानदी अपवाह तंत्र के अंतर्गत आता है। शिवनाथ नदी महानदी की प्रमुख सहायक नदी है, शिवनाथ नदी जिले की प्रमुख नदी है। जिसकी प्रमुख सहायक नदी

आमनेर, हाप, सुरही और डोंकु नदी है। बेमेतरा जिला में 2011 के जनगणनानुसार कुल जनसंख्या 795759 व्यक्ति है। 2001 से 2011 के दशक में जिले में जनसंख्या वृद्धि 29.39 हुई है। जहाँ 279 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर जनसंख्या घनत्व है। जिले में प्रति हजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या 1002 है। जिले में अनुसूचित जाति 17.16 प्रतिशत् तथा अनुसूचित जनजाति 4.07 प्रतिशत् है।

अध्ययन के उद्देश्य : प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बेमेतरा जिले में शिशु मर्त्यता दर की स्थिति का आंकलन एवं शिशु मर्त्यता पर शिक्षा का प्रभाव का विश्लेषण करना है।

आँकड़ों के स्त्रोत एवं विधितन्त्र : प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है। आँकड़ों के संकलन के लिए तीन प्रकार की अनुसूची का प्रयोग किया है। प्रथम-पारिवारिक, द्वितीय-व्यक्तिगत एवं तृतीय ग्राम अनुसूची। इस अध्ययन हेतु बेमेतरा जिले के चार विकासखण्ड से 24 गाँव का चयन प्रतिचयन यादृच्छिक विधि से किया गया। जिनमें गाँव के उन्हीं 934 महिलाओं से सूचना ली गई है, जिनके यहाँ गत वर्ष में किसी शिशु को जन्म दिया हो एवं जिनकी एक वर्ष से कम उम्र में शिशु की मृत्यु अथवा मृत जन्म हुआ। इन महिलाओं से शिशु मृत्यु तथा ग्राम स्तर पर प्राप्त जनसुविधाएँ सम्बन्धी जानकारी एकत्र किया गया है तथा सांख्यिकीय विधि के अंतर्गत सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया है।

शिशु मर्त्यता : शिशु मृत्यु दर एक वर्ष में जीवित जन्में शिशुओं और एक वर्ष के अन्दर एक वर्ष से कम आयु के मृत शिशुओं का अनुपात है। जिसे प्रति हजार में व्यक्त किया जाता है।

$$\text{शिशु मृत्यु दर} = \frac{\text{किसी वर्ष में एक वर्ष से कम आयु के शिशुओं की मृत संख्या}}{\text{उसी वर्ष सजीव जीवित जन्मों की कुल संख्या}} \times 1000$$

बेमेतरा जिले में 54.17 प्रति हजार शिशु मर्त्यता दर है जो सम्पूर्ण भारत (47 प्रति हजार) एवं छत्तीसगढ़ (42.0 प्रति हजार, एस.आर.एस., 2011) से काफी अधिक है। जिले में बालकों से बालिकाओं में शिशु मर्त्यता दर कम है। शिशु मर्त्यता दर बालिकाओं में 36.40 प्रति हजार तथा बालकों में 69.62 प्रति हजार है। जिसका प्रमुख कारक जैविकी दृष्टि से शिशु बालिका श्रेष्ठ होती है, जिससे प्रारम्भिक नवजात अवधि में शिशु बालिकाओं के जीवित रहने की संभावना अधिक होती है। बेमेतरा और नवागढ़ विकासखण्ड में प्रारम्भिक नवजात मर्त्यता दर (क्रमशः 33.05 और 30.17 प्रति हजार) तथा नवजात मर्त्यता दर (क्रमशः 4.13 और 8.62 प्रति हजार) दोनों ही कम है। किन्तु साजा विकासखण्ड में प्रारम्भिक नवजात मर्त्यता दर अपेक्षाकृत कम (28.98 प्रति हजार) है और नवजात्तोतर मर्त्यता दर अधिक (14.49 प्रति हजार) है। इसके विपरीत नवागढ़ विकासखण्ड में जहाँ (43.10 प्रति हजार) शिशु मर्त्यता दर सबसे कम है। (4.31 प्रति हजार) नवजात्तोतर मर्त्यता दर भी है (सारणी क्रमांक 1)। साजा और बेरला विकासखण्ड में जहाँ शिशु मर्त्यता दर अधिक है, जो (क्रमशः 62.80 और 68.29 प्रति हजार) है।

मृत्यु का कारण : शिशु मृत्यु के अनेक कारण है, जनांकिकीविदों ने शिशु मर्त्यता के कारणों को दो वर्गों में रखा है - 1. अन्तर्जात कारण - अन्तर्जात कारण मूलतः जैव कारण होते हैं, जिनमें अपिरपक्वता (अवधि पूर्व जन्म, जन्म के समय शिशुओं का वजन 250 ग्राम से कम) जन्म के समय ही विकृति, आन्तरिक अभिघात, जन्म की चोंटे, श्वास में तकलीफ और जीवन के प्रारम्भिक दिनों में व्यवस्थित पालन-पोषण की कमी है। 2. बहिर्जात कारण - इसके अन्तर्गत बिमारियों को मुख्य रूप से रखा जाता है, जैसे- निमोनिया, संक्रामक रोग, दुर्घटना आदि। अधिकांश मृत्यु के कई कारण होते हैं, जिसमें से बिमारियाँ सर्वाधिक हैं।

बेमेतरा जिले में सबसे अधिक शिशु मर्त्यता निमोनिया से 21.44 प्रतिहजार हुई है। अन्य कारणों में (पीलिया, दुर्घटना, रक्तद्दोष, बुखार) आदि है जिसमें शिशु मर्त्यता दर 15.80 है। 7.90 प्रतिहजार शिशु मर्त्यता दर श्वास में तकलीफ में है (सारणी क्रमांक 2)।

शिक्षा और शिशु मर्त्यता : परिवार की स्वस्थता, उन्नयन एवं समृद्धि के निर्धारण में शिक्षा का विशेष महत्व है। माता न केवल पूरा परिवार की सफाई एवं पोषण की देखभाल करती है, परन्तु बच्चों की दैनिक देखभाल भी करती है। इस कारण परिवार की स्वस्थता के निर्धारण में माता की शिक्षा का विशेष महत्व रखती है। माता की शिक्षा नवजात शिशु के जीवन प्रत्याशा स्वास्थ्य के निर्धारण में मुख्य भूमिका निभाती है। उच्च शिक्षित माता स्वास्थ्य के सम्बन्ध में परम्परागत् व्यवहार से कम प्रभावित होती है। शिक्षित माता सफाई व्यवस्था, पोषण स्तर, प्रतिरोधक सुविधाओं और स्वास्थ्य सुविधाओं के उपयोग के सम्बन्ध में अधिक जागरूक होती है (काडवेल, 1979)। शिक्षित माता न केवल शिशु की उचित देखभाल करती है अपितु स्वास्थ्य सुविधाओं का अधिक उपयोग करती है। रूढ़िवादी समाज में बच्चों की जीवन प्रत्याशा को प्रभावित करने में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है (हुबक्राफ्ट (1985))। शिक्षा मनुष्य को बुद्धिमान एवं युक्ति परक बनाकर उसे प्रेरणा प्रदान करती है। शिक्षित व्यक्ति अपने परिवार के वर्तमान एवं भविष्य के प्रति उत्तरदायी होता है एवं अपने जीवन यापन के प्रति जागरूक रहता है सप्रू-(1989)। परिवार की आर्थिक स्थिति साक्षरता का सूचक है। परिवार की शिक्षा के अन्तर्गत पिता एवं माता की शिक्षा के स्तर से है (अच्येत पी. लहरी और आचार्य, 1997)। ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों की शिक्षा में लिंगभेद ग्रामीण परिवेश एवं सामाजिक दशाएँ सबसे बड़ा अवरोधक तथ्य है, तथापि नगरीय क्षेत्रों में उपलब्ध शैक्षणिक सुविधाओं, सभ्यता एवं संस्कृति ने नगर उपान्त ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्री शिक्षा के प्रति जागरूकता एवं नई चेतना को जागृत करने में आंशिक सफलता मिली है, परन्तु स्त्रियों के शैक्षणिक स्तर उन्नत करने कोई विशेष सफलता नहीं मिली है। वस्तुतः परिवार के स्वास्थ्य के निर्वहन के लिए स्त्रियों को कम-से-कम उच्चतर माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा अनिवार्य ही नहीं अपितु, आवश्यक भी है क्योंकि स्वास्थ्य एवं पोषण सम्बन्धी जानकारी समझने एवं अपनाने के लिए स्त्रियों का उच्चतर माध्यमिक स्तर तक साक्षर होना सार्थक सिद्ध होता है। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि जैस-जैसे शिक्षा का स्तर बढ़ता है, वैसे-वैसे शिशु मर्त्यता दर घटती है।

माता की शिक्षा : सामान्यतः उच्च शिक्षा का स्तर न्यून शिशु मर्त्यता से सम्बन्धित होता है। इस सम्बन्ध में माता शिक्षा का विशेष स्थान है। शैक्षणिक पृष्ठभूमि के अनुसार मृत बच्चों की संख्या में सार्थक अन्तर पाया जाता है। आधुनिक समाज में व्यक्तिके सामाजिक स्तर के निर्धारण में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। माता की शैक्षणिक स्तर, पिता के शैक्षणिक स्तर का सूचक होता है (खान, 1988)। उच्च शिक्षित माताएँ स्वास्थ्य के सम्बन्ध में परम्परागत त्यौहार से कम प्रभावित होती है। शिक्षित माता सफाई व्यवस्था, पोषण स्तर एवं प्रतिरोधन सुविधाओं पर स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रयोग के सम्बन्ध में अधिक जागरूक होती है (कार्डवेल, 1979)। ग्रामीण क्षेत्रों मे अल्प साक्षर एवं निरक्षर माताओं के कारण न केवल शिशु मर्त्यता दर अधिक होती है, अपितु अपरिष्कृत मर्त्यता दर भी प्रभावित होती है (शर्मा, 2004)। शिक्षित माता शिशु के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में अधिक जागरूक होती है तथा बीमारी की स्थिति में अधिक समझ रखती हैं और जल्द ही चिकित्सा सुविधाओं की प्राप्ति के लिए प्रबंधन करती है। शिक्षित माता कम बच्चों की चाह करती है, जिससे कि बच्चों पर अधिक व्यय, जैसे-भोजन, चिकित्सा सुविधा,

शिक्षा पर व्यय कर सकती हैं (गंडोत्रा एवं दास, 1988)। अस्तु परिवार में पिता की तुलना में माता का उच्च स्तर पर साक्षर होना शिशु मर्त्यता को कम करने में कारगर उपाय सिद्ध होते हैं।

बेमेतरा जिले में 79.66% महिलाएँ साक्षर हैं। साक्षर महिलाओं में से 30.09% महिलाएँ प्राथमिक से कम (मात्र साक्षर) है और 13.38% महिलाएँ प्राथमिक स्तर तक शिक्षित है। माध्यमिक स्तर तक महिलाओं का 11.46% और उच्च माध्यमिक 12.31% उच्चतर माध्यमिक और 8.99% है। 3.43% महिलाएँ स्नातक और उससे अधिक स्तर तक शिक्षित हैं।

बेमेतरा जिले में निरक्षर महिलाओं में शिशु मर्त्यता दर सर्वाधिक 85.17 प्रति हजार है। साक्षर महिलाओं में शिशु मर्त्यता दर 64.39 प्रति हजार है। शैक्षणिक स्तर में वृद्धि के साथ-साथ शिशु मर्त्यता दर में क्रमशः कमी हुई है। उच्च माध्यमिक में शिशु मर्त्यता दर 36.03 और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिशु मर्त्यता दर 24.39 प्रति हजार है (सारणी क्रमांक 3)। जिले में माता की शैक्षणिक स्तर एवं शिशु मर्त्यता दर के बीच 0.01 विश्वास के स्तर पर सार्थक सहसंबंध (r= -.977) पाया गया है।

पिता की शिक्षा : शिक्षित पिता संतान के पालन के प्रति अधिक ध्यान देते हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त पिता अपने परिवार, विशेषकर शिशु के स्वास्थ्य हेतु अधिक सुविधाओं को सहज ही उपयोग में लाते हैं। इसके विपरीत अशिक्षित एवं कम शिक्षा प्राप्त पुरूष उक्तसुविधाओं की ओर ध्यान नहीं देते है। परिणामस्वरूप अशिक्षित एवं कम शिक्षा प्राप्त पिता में शिशु मर्त्यता दर अपेक्षाकृत अधिक होता है। कई अध्ययनों में प्रथम सप्ताह में होने वाली मृत्यु और दम्पति की शिक्षा में विपरीत सम्बन्ध पाया गया है। दम्पति की शिक्षा स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जानकारी आय तथा स्वास्थ्य सुविधाओं को बढ़ाती है (अच्येत लहरी और आचार्य, 1997)। पिता की शिक्षा और शिशु मर्त्यता के सम्बन्ध में कई तर्क दिए जा सकते हैं फिर भी माता की शिक्षा सामाजिक, आर्थिक कारकों का अच्छा सूचक है जो शिशु मर्त्यता को सीधे प्रभावित करती है (हुबक्राफ्ट, 1985 देसाई एवं ऐवी, 1998)।

बेमेतरा जिले में 81.37% पिता साक्षर है, जिले में 28.05% मात्र साक्षर, 12.74% प्राथमिक स्तर, 11.13% माध्यमिक स्तर, 11.78% उच्च माध्यमिक, 10.92% उच्चतर माध्यमिक तथा 6.75% पिता स्नातक और उससे अधिक स्तर तक शिक्षित है।

जिले में निरक्षर पिता में शिशु मर्त्यता दर सबसे अधिक 94.33 प्रति हजार है। साक्षर पिता में शिशु मर्त्यता दर 69.38 प्रति हजार है। प्राथमिक स्तर 53.09, माध्यमिक स्तर पर 40.00 एवं उच्चतर माध्यमिक में सबसे कम 20.00 प्रति हजार शिशु मर्त्यता दर है (सारणी क्रमांक 4)। जिले में पिता की शैक्षणिक स्तर एवं शिशु मर्त्यता दर के बीच 0.01 विश्वास के स्तर पर सार्थक सहसंबंध (r= -.981) पाया गया है।

शिशु मर्त्यता दर

1. उच्च मर्त्यता (= 65%)

इसके अन्तर्गत बेरला विकासखण्ड जिसमें मर्त्यता दर 65% से अधिक है। जिसका मुख्य कारण शिक्षा गुणवता में कमी, स्वास्थ्य सुविधाओं में कमी, निम्न आय का होना एवं जोत का आकार छोटा होना है।

2. मध्यम मर्त्यता (60 - 65%)

इसके अन्तर्गत क्षेत्र में साजा विकासखण्ड है, जिसमें 60 से 65% है। विकासखण्ड में लोगों में जागरुकता का अभाव, रुढ़िवादी सोच, माता-पिता कृषि कार्य में संलग्न है।

3. निम्न मर्त्यता (< 60%)

इसके अन्तर्गत दो विकासखण्ड बेमेतरा एवं नवागढ़ विकासखण्ड शामिल है। जिसमें मर्त्यता दर <60% है। जिसका कारण स्वास्थ्य सुविधाओं का अधिकता, शिक्षा की अधिकता, जीवन स्तर का उच्च होना, उच्च आय का होना एवं जोत का आकार बड़ा होना है (सारणी क्र.5)।

निष्कर्ष : किसी भी क्षेत्र के विकास में शैक्षणिक संस्थाएं महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं क्योकि क्षेत्र के विकास संबंधी कार्यक्रम को समझने एवं क्रियान्वित करने के लिए शैक्षणिक स्तर का उच्च होना आवश्यक होता है। माता की शिक्षा शिशु के पालन पोषण एवं परिवार की स्वस्थयता के लिए अनिवार्य आवश्यकता है, जो क्षेत्र की शैक्षणिक विकास पर निर्भर करता है। शिशु मर्त्यता पर माता की शिक्षा एवं माता का स्वास्थ्य है, क्योकि गर्भस्थ से ही शिशु पूर्णतः माता के स्वास्थ्य से संबंद्ध होता है। स्वस्थ्य एवं शिक्षित माता न केवल स्वस्थ्य शिशु को जन्म देती है, अपितु उन्हे स्वस्थ्य पोषण भी देती है। प्रसव काल से ही अपने एवं शिशु के स्वास्थ्य को बनाये रखने एवं माता तथा शिशु के टीकाकरण के प्रति सजगता रखने के लिए माता एवं पिता को शिक्षित करना शिशु मर्त्यता को कम करने में अधिक कारगर उपाय सिद्ध होगे।

सुझाव : शिक्षा ही सभी सुधारों की कुंजी है। यह समर्थन करती है कि अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं एवं लोगों को साक्षर होना अतिआवश्यक है, जिससे विभिन्न प्रकार की योजनाओं से भी अवगत हो जाए और कोई भी जानकारी से अनभिज्ञ ना हो जाएँ। साथ ही साथ स्वालंबी बनें शिक्षा के महत्व उजागर करते हुए शिक्षा को सर्वोपरी महत्वपूर्ण विषय के रूप में अनिवार्य रूप से स्वीकृति दी जानी चाहिए।

References

1. Achyat, P.S. Lahri and R. Acharya (1997) : "Non-Biological Correlates of Early Neonatal Evidence from Five Selected Studies of India", Demography India, Vol.26, No.02, pp. 241-260.
2. Coldwell, J. C. (1979) : "Education as a Factor in Mortality Decline : An Examination of Nigerian Data", Population Studies, Vol.33, No.3 pp. 395- 413.
3. Deasi, Sonaled and Soumya Alva (1998) : "maternal education and child health : Is there a strong causal relation", Demography, vol.35, pp.71-81.
4. Gandotra, M. M. And N. Das (1988) : Infant Mortility and its Causes, Himalays Publishing House. Bombay.
5. Hobcraft (1985) : woman's Education, child welfare And child survival : A Reivew of the Evidence health Transition Review, 3:159-175
6. Khan, M.E. (1988) : "Infant mortality in utter pradesh : A micro level study", in A.K.jain and P.Visaria (eds), Infant mortality in india : Differetials and Determinnats, sage Publication, New delhi, pp. 227-240.
7. Madhu and Tike singh. 2022, “bemetara jile ke gramin chetra me jajankikiy karak avam shisu martayata : ek ghavgolik adhyan”, uttar Pradesh geographical journal Kanpur vol.27, pp 166-181.
8. Madhu and Tike singh ¼2024½ % ^^ bemetara jile me Arthik karak avam gramin shisu martayata : ek bhaugolik adhyan**] keralay joyti journal] vol. 3] issue- 61 june. pp 42-46.

Madhu,(2024) : bemetara jile me shisu martayata par swasthya suvidhaon ka praabhav : ek bhaugolik vishleshan, UnPublishing. Ptrsu. Raipur.

Sapru (1989) : “IDRC and EP : collaborative study on infant mortality and fertility”, in B. Jena and R.N. Pati ¼eds.½, Health and family welfare services in india, Ashish Publishing House, New Delhi.

शर्मा, सरला (2004): दक्षिण महानदी बेसिन में ग्रामीण शिशु मर्त्यता शोध, परियोजना पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

डॉ मधु, अतिथि व्याख्याता शासकीय सुखराम नागे महाविद्यालय नगरी, जिला - धमतरी (छ.ग)

डॉ खेमचंद, भूगोल अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ. ग)

याखानविवरण

मानस कैलास

अनुवाद : प्रो. डी. तंकप्पन नायर

मूल : मंजु वेल्लायणि

अनुवाद : डॉ.रंजीत रविशैलम

(पूर्व प्रकाशित से आगे)

डोलमा दर्रा पार करते वक्त यात्री गण शिवाष्टोत्तर व ललिता सहस्रनाम का जाप कर रहे थे। आसमान को छूने के लिए लंबित रास्ता। भिन्न भिन्न काले पत्थर सजाए हुए जैसा लग रहा है। तितर बितर फैले हुए पत्थरों के बीच से बड़े ही ध्यानपूर्वक ही आगे कदम रखना होगा। सर्दी को पूरी तरह निगली हुई ठंडी हवा असहनीय है। हवा बहुत नर्म है। प्राण वायु की कमी निश्चय ही अनुभव होती है। बीच-बीच में दो चार लंबी साँसें खींचने के बाद, विश्राम करने बाद ही जाने का संकेत डारजी देता है।

कैलास यात्री को किसी चीज़ के लिए एक पल भी अहंकार नहीं करना चाहिए। भक्ति एवं विनम्रता के पाँव से ही हर कदम रखना है। 'गर्व' किसी का भी हो उसे कैलास नाथ सहते नहीं। सबक सिखाते भी हैं। हालास्य माहात्म्य में कुण्डोदर भुक्ति ही उदाहरण है। प्रियतमा होने से भी भगवती का गर्व सोमसुंदर ने माफ नहीं किया।

मलयध्वज पाण्ड्य और कांचनमाला की पुत्री के रूप में तटातका नाम से मीनाक्षी का जन्म हुआ था। तटातका का परिणय अत्यंत गंभीर रूप से हुआ था। सोमसुंदर ने जब तटातका को मंगलसूत्र धारण करवाता तब पुष्पवृष्टि हुई थी। शादी का ठाट-बाट देखकर तटातका अत्यंत आह्लादित हो गई। रसोई में चाँदी का पहाड-सा भोजन लाखों लाख लोग खाने के बाद भी शेष रह गया था। सुंदरेश्वर के साथ अनेक कोटि भूतगण आएँगे, सोचकर ही इतना खाना तैयार किया हुआ था। भूतगण के लिए तैयार किए गए भोजन की शाला अब तक खुली नहीं है ऐसा बड़े प्यार से कहने पर सोमसुंदरन हँसने लगे। उस हँसी का मतलब शायद ज़्यादा खाना बनाकर अपने 'गर्व' दिखाने के झूठी स्थिति का खुलासा करने जैसा होगा।

हे प्राण प्रेयसी, तूने 'हिमालय' जितना खाना तैयार किया है। मेरे साथ आनेवालों में कुडोदरन को छोड़कर अन्य सभी कैलास की ओर वापस गए। शायद ऐश्वर्याधिक होने के कारण ही देवी ने इतना ज़्यादा खाना बनाया होगा। एक दफ़ा, अत्यधिक संपत्ति बनाने से उत्पन्न 'अहंकार' होगा इसके पीछे कहकर सोमसुंदरम निकट से कुंडोंदरन को देखा।

कुंडोदरन ने भगवान से जठराग्नि के साथ भूख मिटाने हेतु अनुमति देने की अपेक्षा की। एक साथ कुंडोदरण की भूख और प्रियतमा का गर्व शांत करने के उद्देश्य से कुंडोदरन को खाना खाने की अनुमति दी। भूमि को हिलाते हुए हिमालय पर्वत की तरह कुंडोदरन रसोई व भोजनालय में विहार करने लगा। नज़र के सामने जो भी मिले वे सब खाने के बाद भी कुंडोदरन की भूख कम नहीं हुई।

ह्रस्व भूत कुंडोदरन का अद्भुत पराक्रम देखकर भगवती आश्चर्य चकित हो गई। शर्मिंदा होकर सिर नीचे

करके देवी पास आईं तो सोमसुंदरन ने यूँ ही पूछ लिया : भोजन की चीज़ें खत्म नहीं हुई है यह सोचकर परेशान नहीं होना है। बस इस कुंडोदरन की भूख शांत करके इधर भेज दीजिए। हम उसे कैलास तक दौड़ाकर भूतगण को यहाँ आने के लिए कहेंगे।

सोमसुंदरन के महत्व के बारे में सोचकर व कुंडोदरन के कृत्यों को देखकर तटातका का अहंकार शांत हो गया। अत्यंत विनय के साथ भगवान के पाद नमस्कार किया। कुंडोदरन की भूख मिटाने की ताकत भी नहीं है। उसकी भूख शांत करके हमारे मान की रक्षा करने की अपेक्षा को सिर में धामे हालास्य नाथ ने अन्नगर्त एवं गंगा से ही कुंडोदरन की भूख व प्यास को मिटाया।

जीवन के बड़े बड़े उतार चढाव को पार करनेवाले एक दफा डोलमा दर्श को अत्यंत साहसिक रूप से सबकुछ सहकर व झेलकर चढेंगे। परिवार में हुई कुछ असुविधाओं से यात्रा स्थगित होने वाले के एस एफ ई प्रबंधक पिरच्चल अजीत प्रतिबंधों के कितने ही काले पहाड़ों को पार किया हुआ है। जीजाजी अनिल की चिकिल्सा हेतु सालों का परवरिश एकदम व्रतानुष्ठान जैसा ही था। एक हज़ार पाँच सौ से अधिक बोत्तल रक्त, अस्पताल की बरामदाह की शिवरात्रियाँ, उत्कण्ठा की नोक में भी अपनों एवं प्रिय जनों को प्रदान करने हेतु रखते मुसकान व प्रेरणादाई वचन। प्रारब्धों के दीया जलाने पर भी चंदन सा सुगंध व्यक्तित्व प्राप्त लोग ऐसे ही होते है। खून में हुए कैंसर से सात वर्षों तक लड़ते रहने पर भी जीत न पाया। कैलास यात्रा को भी त्यागकर परवरिश हेतु उपस्थित अजीत का दुख भी वही था।

डोलमा पार करनेवाले कैलासयात्रियों को शुभकामनाएँ प्रदान करने वाली प्रार्थना पताकाएँ। माना जाता है डोलमा भाषा में डोलमा का मतलब तारादेवी है। देवी की कृपाकटाक्ष से ही इसे पार कर पाएगा। डोलमा को 'स्वयं ही रक्षा' ऐसा भी अर्थ है। डोलमा पास को तारादेवी शृंग के नाम से भी तिब्बत के लोग पुकारते हैं। उमामहेशों का सान्निध्य प्राप्त स्थली के रूप में भी माना जाता है।

डोलमा पदयात्रा को पार करना अतिकठिन होने पर भी याक आदि का आश्रय लेना उससे भी श्रमसाध्य कार्य है। याक के ऊपर चलनेवाले चढाई चढने पर उसके ऊपर नतमस्तक हो लेटता है। जीवन और मृत्यु की लडाई जैसी है याक के ऊपर चढकर जानेवाली यह यात्रा। पाँव रखते ही लुटकते पत्थरों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए। चढ़ाई चढने के बीच में ऐसा लगता था दर्श पास आ चुका है। ऐसे कुछ चकते दृश्य यात्रियों के सहम जाने का परीक्षण करते है। कठिन चढाइयाँ। हेयरपिन घुमाव। उसे पार करने पर समतल भूमि पर जा पहुँचते ।

थकान व कमज़ोरी के कारण कमर सीधी करने का मन करता है। हर पग पर सुरक्षा प्रदान करते हर देवता को शुक्रिया। पताका-तोरणों से सुसज्ज शिला देवी संकल्पना की प्रतीक है। हर धर्म के लोग वंदना करती शिला।

डोलमा के ऊपर से देखने पर अंग भंग हुए - से - पर्वत शृंखलाएँ। कैलास दृश्य की साम्यता विहीन भूप्रकृति। पर्वतों के इस तरह बिखरने व पत्थरों के ढेर से नज़र आने संबंधी बातें करने हेतु भूगोल शास्त्र के पास कतिपय न्याय होंगे। लेकिन सती देवी के पार्थिव शरीर के साथ शिव जी के ताण्डव नृत्य के फलस्वरूप यह हुआ है, ऐसा तिब्बतवाले मानते हैं। विश्वास बहुत से संदेहों का विराम करता है। उसकी युक्ति के बारे में बाद में माधा पच्ची करने संबंधी जिक्र कैलास परिक्रमा करती एवं 'कैलास यात्रा' नामक पुस्तक की रचना करनेवाली चित्रकार राजनंदिनी ने किया। डोलमा दर्रे से थके-माँदे चलते देखकर एक तिबती युवति ने घोडे का सूखा गोबर हाथ में लेने की सलाह दी थी। गोबर तो गोबर ही सही, यही सोचकर असहायता से घोडे के गोबर को लेकर धीरज बाँधकर वे दर्रा पार कर रहे थे। (क्रमशः)

आत्मकथा

देवयानम्

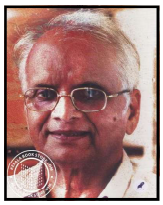

अनुवाद : प्रो. के.एन.ओमना

मूल : डॉ.वी.एस. शर्मा

अठारहवाँ देवपद - अर्द्धविराम

(पूर्वप्रकाशित से आगे)

केवल केरल के साहित्यकारों -कलाकारों के साथ ही नहीं; बल्कि देश भर के उन्नत शीर्ष प्रतिभा-संपन्न साहित्यिकों और कलाकारों के साथ भी मेरा निकट का संबंध था। मलयालम काव्य क्षेत्र के चिर प्रतिष्ठित महाकवि श्री जी शंकर कुरुप जिन्हें बाद में भारत सरकार ने देश के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार ज्ञानपीठ से अलंकृत किया था; जब कभी राजधानी आते थे तब ट्रिवान्ड्रम हॉटल में ही रहते थे। उसी प्रकार महाकवि श्री वैलोप्पिल्ली श्रीधर मेनोन भी राजधानी आते समय इसी हॉटल में रहते थे जहाँ उन दिनों मैं भी निवास करता था। अतः उस समय से हम तीनों की मित्रता बनी थी।

महात्मा गाँधी कॉलेज में एक बार एक विपुल साहित्य-शिबिर संगठित किया गया था। सी एन श्रीकंठन नायर, के अय्यप्पा पणिक्कर, एम गोविंदन आदि ने इसका नेतृत्व अपने हाथों लिया था। महाकवि जी, कैनिक्करा कुमार पिल्लै, एम के सानु इत्यादि मलयालम साहित्य क्षेत्र के सारे के सारे उज्ज्वल नक्षत्र इस समारोह को जाज्वल्यमान करने के लिए वहाँ आमंत्रित किए गए थे। मैंने भी उसमें भाग लिया था। मलयाल मनोरमा के तत्वावधान में कोट्टयम के एक बड़ी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गोष्ठी संगठित की गई थी जिसका निर्देशक था श्री एम गोविंद। उस में प्रसिद्ध समाज-सुधारक तथा साहित्यिक श्री वी टी भट्टतिरिप्पाडु उपस्थित थे; सभा में उनका गंभीर निबंध पढ़ने का दायित्व मुझ पर सौंपा गया था। यह मेरे लिए उनका आशीर्वाद एवं अपना सौभाग्य समझता हूँ। आलुवा के एफ ए सी टी कंपनी के निर्देशक डॉ एम के के नायर ने अपने 'उद्योग मण्डल' में सात दिन का एक महत्वपूर्ण साहित्य सम्मेलन संगठित किया था जिसमें भारत की विभिन्न भाषाओं के प्रतिष्ठित साहित्यकार सम्मिलित हुए थे। इस सम्मेलन का नाम था 'ऑस इंडिया रैटेर्स कॉनफरन्स'। इस समारोह में भाग लेते हुए मुझे डॉ कपिला वात्स्यायन और हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि श्री एस एच वात्स्यायन (अज्ञेय) से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। मलयालम भाषा के कहानीकार श्री टी पद्मनाभन को मैंने पहली बार वहाँ मिला था। वे तो उस समय उद्योग मंडल में काम करते थे। ठीक इसी समारोह के अवसर पर भारत सरकार ने यह घोषणा की थी कि देश का पहला सर्वोच्छ साहित्यिक पुरस्कार 'ज्ञानपीठ' मलयालम के महाकवि श्री जी शंकरा कुरुप्पु को समर्पित किया जायेगा। महाकवि की इतनी उन्नत उपलब्धि से हम सब आह्लादित हुए थे और हम ने उनका उचित आदर-सत्कार भी किया था। इस समारोह से संबंधित एक स्मारक ग्रंथ भी प्रकाशित किया गया था जिसमें 'भारतीय साहित्य के विकास का पंचांग' नामक अपना लेख भी शामिल था। यह तो मेरे लिए

विशेष संतोष की बात हुई थी।

1967 में शास्तांकोट्टा देवस्वम बोर्ड कॉलेज में मलयालम साहित्य के इतिहास में सर्वप्रथम एक नाटक कार्यशाला संगठित की गई थी। आदरणीय प्रोफेसर श्री जी शंकपा पिल्लै की उदात्त कल्पना तथा कर्म-कुशालता से यह कार्यशाला अत्यंत गंभीर और सफल हो गई थी। गुरु श्री के पी नारायण पिषारडी, गुरु श्री अम्मन्नूर माधव चाक्यार, सी एन श्रीकण्ठन नायर, एम गोविंदन, अय्यप्पा पणिक्कर, पी के वेणुक्कुट्टन नायर, एस रामानुजं आदि नाटक साहित्य क्षेत्र के बडे मनीषियों ने इस रंगमंचीय कला के अंग-प्रत्यंग का समुचित विश्लेषण करते हुए श्रोताओं को उद्‌बुद्‌ध किया था। मेरे भाषण का विषय था 'स्वप्नवासवदत्तं' नामक नाटक जो संस्कृत के महान कवि श्री भास की विख्यात रचना है। इस कार्यशाला से संबंधित 'अरंगु 1967) (रंगमंच 1967) नाम से मैंने एक ग्रंथ लिखा था जो 1983 में प्रकाशित किया गया था। 1880 से लेकर 1980 तक के सौ साल के मलयालम नाटकों की एक तालिका है यह पुस्तक। प्रोफेसर श्री एन कृष्ण पिल्लै की रचनाओं की एक सूचिका भी मैंने बाद में लिखी थी। "जीवितारेखकल' (जीवन अभिलेख) नामक अपने ग्रंथ में यह सूचिका भी शामिल है। कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि केरल के उन्नत शीर्ष आचार्यों के नेतृत्व में संगठित यह कार्यशाला मलयालम नाटक साहित्य का एक मील-पत्थर बन गई थी।

मलयालम काव्यक्षेत्र के प्रमुख व्यक्तित्वों ने श्री अय्यप्पा पणिक्कर के नेतृत्व में 'केरल कविता' नाम से एक नई प्रणाली की शुरुआत की थी। इस पद्‌धति के तत्वावधान में कई समारोह, काव्य-संबंधी चर्चाएँ, सुंदर दृश्यों के साथ काव्यालाप, पुस्तक-प्रकाशन आदि बहुत सी बातें संगठित की जाती थी जिससे उत्तम कविताओं के प्रचार-प्रसार के साथ लोगों के काव्य-आस्वादन की क्षमता भी बढ जाय। इस प्रकार लोगों के काव्य-अनुशीलन एवं रसास्वादन का स्तर भी उदात्त हो जाएगा। तैंतीस वर्ष तक यह प्रणाली तीव्र गतिशील हो आगे बढ़ती रहती थी जिससे काव्य और नाटक दोनों साहित्यिक विधाओं को अपनी दिशा में अग्रसर होने की प्रेरणा मिली थी। उसके बाद यह प्रणाली बिलकुल मंद एवं क्षीण होने लगी थी; क्योंकि इसके कर्मठ प्रवर्तक एक एक कर इस संसार से बिदा हो गये थे।

धनुवच्चपुरं के एन एस एस कॉलेज में नाटकों की एक कार्यशाला हुई थी। मैंने भी उसमें भाग लिया था। उसी प्रकार श्री के एस नारायण पिल्लै के प्रयत्न के फलस्वरूप कन्याकुमारी और नागरकोइल (तमिल नाडु) में काव्य-संबंधी जो चर्चाएँ चली थीं उनमें भी मैंने भाग लिया था। वेंजारमूडु नामक गाँव में बच्चों का एक नाटक संघ बडे क्रियाशील था। उस संघ का नाम था 'रंगप्रभात'। नाटक क्षेत्र के सुप्रसिद्‌ध आचार्य स्वर्गीय श्री जी शंकर पिल्लै की स्मृति में यह संघ रूपायित किया गया था। डॉ कपिला वात्स्यायन हमारे विश्वविद्‌यालय में जब कोई भाषण देने आई थी तब हम दोनों ने वहाँ जाकर बच्चों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी थी। डॉ कपिला ने मुझे श्री जी शंकर पिल्लै के श्रेष्ठ निबंधों का अंग्रेज़ी अनुवाद पुरस्कार में दिया था। यह पुस्तक दिल्ली के इंदिरा गाँधी नाशनल सेंटर फॉर दि आर्ट्स (Indira Gandhi National Centre for the Arts) के द्‌वारा प्रकाशित किया गया था। 'स्वाति तिरुनाल् : जीवनी और कृतियाँ' नामक अपने ग्रंथ की भूमिका लिख कर डॉ कपिला ने मुझ से बडी कृपा की थी। (क्रमशः)

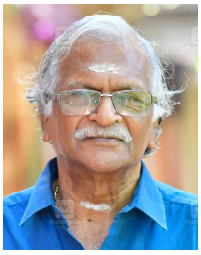

आत्मकथा

ज़िंदगी : एक लोलक

मूल : श्रीकुमारन तंपी

अनुवाद : डॉ.पी.जे.शिवकुमार

(पूर्वप्रकाशित से आगे)

मुझे हरिप्पाट्टु ले जाकर छोड़ दो। ऐसी एक ज़िंदगी मुझे नहीं चाहिए।

तू मुझे कुछ समय तो दे दो। चाचाओं से मुझे अपना हिस्सा तो लेने दो। मुझे तुम्हें चाहिए। इस प्यार की छाया में कुछ दिन और माँ ने गुज़ार दिया। जब कोई और चारा न निकला तो पिताजी ने चाचा से सीधे कहा : 'मुझे अपना घर जाना है।'

अब यही तेरा घर है। हम ज़मींदार हैं। आवश्यकतानुसार खेत और अहाता है। लेकिन तंपी लोगों के समान हम दिखावा नहीं करते। कलरिक्कल घरवालों के पास जो हैं, उसकी संपत्ति का आधा भी अंश तुम्हारे पास नहीं। तमीज़ के साथ यहीं रहो। अगर तुझे हरिप्पाट्टु जाना है तो जा। लेकिन मैं अपने किट्टन को उधर नहीं आने दूँगा।" माँ रोयी, भूखी रही, खाने के लिए किसी ने दबाव नहीं डाला। पिताजी रात को शराब पीकर ही आए थे। उसी के साथ माँ के मन में सिर्फ अंधेरा ही रह गया।

शराब पीकर मुझे मत छूना, माँ ने कहा। पिताजी ने माँ के पीड़ा दी। बहन के जीवन में आए परिवर्तनों के बारे में अनभिज्ञ होकर माँ का प्यारा भाई, माँ का प्रिय भाई डॉक्टर पद्मनाभन तंपी सपरिवार अंबा समुद्र में वास करने लगे। वहाँ उन्होंने दाँतों का अस्पताल शुरू किया। करिंपालेत्तु घर में कुंञ्ञुक्कुट्टि तंकच्चि अकेली हो गई। बेटी गौरिक्कुट्टि तंकच्ची और पति कुमारा पिल्लै, कुमारमंगलं में। प्रसव में मर जानेवाली बहन अम्मुक्कुट्टि की छोटी बेटी, पोन्नम्मा तंकच्ची पुन्नूर खानदान में पडोसी के रूप में थी। यही एकमात्र सहारा थी। कलरिक्कल घर के पीछे रहनेवाली एक ईसाई स्त्री की सहायता से मेरी माँ ने, दादी माँ को अपने जीवन की स्थिति का विवरण करके एक खत भेजा। बडी बेटी कार्त्यायनी तंकच्ची, बेटी चेल्लम्मा तंकच्ची और उसके पति वकील नीलकंठा पिल्लै ने आपस में चर्चा की। वकील ने अपने लिए परिचित भाषा में बताया : 'तलाक ले लो'

कार्त्यायनी तंकच्ची उससे सहमत नहीं हुई। जामाता कुमारमंगलं कुमारा पिल्लै ने सास से कहा - मैं इसमें दाखिल नहीं हो जाऊँगा। हर एक की अपनी एक नियति होती है।

मेरी बच्ची की स्थिति के बारे में तुम में से कोई भी अंबू को बताना मत। उसका हृदय कट जाएगा। दादी ने कहा। सारी बातें सुनने के बाद परिवार का मुखिया कुमारन तंपी ने कहा : शादी के दिन में ही उस घरवालों का स्तर मैंने देखा तो था। मैंने दीर्घ दृष्टि से देखा भी था कि यह ऐसा ही घटित होंगा। सब कुछ तो छोटी माँ का प्यारा बेटा अंबु का किया हुआ था न? बिना किसी काम के एक व्यक्ति से लड़की की शादी कराके उसने अपना रास्ता नाप लिया। अब अंबा समुद्र में बैठकर तमिल में बात करता है। तब भी और अब भी मेरा एक ही मत है। टूटे हुए को बाँधने पर गाँठ पड जाती है। वे अपरिष्कृत लोग तंपी लोगों को ज़रा भी उचित नहीं। यह रिश्ता हमें नहीं चाहिए। क्या निर्णय लेना है, यह समझे बिना कुञ्ञुक्कुट्टि तंकच्ची आँसू बहाती। अंत में मुंशी शंकुच्चार ने कहा : मैं तोनयंक्काट्टु तक जाके आऊँगा। मेरी भावानिक्कुट्टि बेटी के लिए मैं मरने के लिए भी तैयार हूँ। (क्रमशः)

प्रश्नोत्तरी

डॉ. रंजीत रविशैलम

1. किस कवि को तुलसीदास का गुरुभाई माना जाता है?
2. 'बसो मेरे नैनन में नंदलाल!' यह कविता पंक्ति किसकी रचना है?
3. 'काव्य आत्मा की संकल्पनात्मकअनुभूति है', यह मत किसका है?
4. रस सूत्र की प्रथम बार व्याख्या किसने की?
5. 'मनुष्य की सामान्य भावना को आगे करके निम्न श्रेणी की जनता में उन्होंने आत्मगौरव का भाव जगाया और भक्ति के ऊँचे से ऊँचे सोपान की ओर बढ़ने के लिए बढ़ावा दिया।' कबीर के विषय में यह कथन किसका है?
6. 'रीतिकाल' नाम किस इतिहास लेखक के द्वारा दिया गया?
7. 'ज्ञान बोध' के रचनाकार है?
8. कुंतक ने वक्रोक्ति के कितने भेद उपभेद माने है?
9. कण्हपा के गुरु का नाम क्या है?
10. 'आखिरी चट्टान तक' किसका यात्रावृत्त है?
11. 'आटे का सिपाही' कहानी के लेखक कौन है?
12. बंगाल के अकाल पर किस हिंदी लेखक ने रिपोर्ताज विधा में लिखा?
13. 'बनारस अखबार' का संपादन किसके द्वारा किया गया?
14. 'कुछ आप बीती, कुछ जग बीती' आत्मकथा के लेखक कौन है?
15. प्रेमचंद का प्रथम उपन्यास किसे माना जाता है?
16. 'आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ' रचना किसकी है?
17. 'जिरह' किसकी कृति है?
18. कामायनी को 'मानवता के रसात्मक इतिहास' की संज्ञा किसने दी है?
19. तत्सुखी शाखा के प्रवर्तक कौन है?
20. आधुनिक हिंदी में तुलनात्मक आलोचना का प्रारंभ किसने किया?

उत्तर

1. नंददास
2. मीराबाई
3. जयशंकर प्रसाद
4. भट्टलोल्लट'
5. रामचंद्र शुक्ल
6. रामचंद्र शुक्ल
7. मलूकदास
8. 6 भेद तथा 41 उपभेद
9. जलंधरपा
10. मोहन राकेश
11. निर्मल वर्मा
12. कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर
13. राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद
14. भारतेंदु हरिश्चंद्र
15. प्रेमा
16. नरेंद्र मोहन
17. श्रीकांत वर्मा
18. नंद दुलारे वाजपेई
19. रामचरण दास
20. मिश्रबंधु